सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 94, नई दिल्ली । शुक्रवार, 13 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 दिल्ली के लिए प्लास्टिक कचरा बना मुसीबत, घटने के बजाय बढ़ता ही गया....
06 तपिश से बचने के लिये
08 मोहन सरकार का एक साल पूरा; विकास यात्रा पूरे प्रदेश में घूमेगी

अहमदाबाद प्लेन क्रैश में 241 यात्रियों की मौत

गुजरात के पूर्व सीएम रूपाणी का भी निधन देश का सबसे बड़ा विमान हादसा

अहमदाबाद में गुरुवार को एयर इंडिया का एक बोइंग 737 विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें सवार सभी 241 यात्रियों की दुखद मौत हो गई। विमान अहमदाबाद एयरपोर्ट से लंदन के लिए उड़ान भर रहा था, तभी मेघानीनगर इलाके के पास यह हादसा हुआ।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: गुजरात के अहमदाबाद में गुरुवार को एक बड़ा विमान हादसा हो गया, यहां एयर इंडिया का विमान क्रैश हो गया। विमान में सवार सभी 241 पैसेंजर्स की मौत हो गई। विमान में सवार गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी का भी निधन हो गया है। यह देश का अब तक का सबसे बड़ा विमान हादसा है, जिसमें इतनी बड़ी संख्या में लोगों ने जान गंवाई है। हादसे में रमेश विश्वास कुमार नाम के एक शख्स की जान बच गई है। इसे ईश्वर का चमत्कार माना जा रहा है।

हादसे की दर्दनाक और भयानक तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हैं। यह दुर्घटना अहमदाबाद के मेघानीनगर इलाके के पास हुई। विमान टेक-ऑफ के बाद क्रैश हुआ है। प्लेन के क्रैश होने के तुरंत बाद घटनास्थल से आसमान में काला धुंआ उठता हुआ देखा गया है।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, 'इस विमान में कुल मिलाकर देश और विदेश के 230 यात्री और 12 क्रू मेंबर सवार थे। इसमें से 1 यात्री के बचने का अच्छा समाचार मिला है। मैं उनको मिलकर आया हूं। मृत्यु का आकड़ा DNA परीक्षण और यात्रियों की पहचान के बाद ही अधिकृत रूप से जारी होगा। घटना के तुरंत बार गुजरात सरकार ने आपदा प्रबंधन की सारी इकाइयों को अलर्ट करते हुए मिलकर राहत बचाव का कार्य चालू किया। विमान में सवा लाख लीटर ईंधन था। जिससे तापमान इतना ऊंचा हो गया कि किसी को बचाने का मौका ही नहीं मिला। सभी यात्रियों के शव को निकालने का काम लगभग पूरा हो चुका है। जितने यात्रियों के परिजन पहुंच गए हैं उनका DNA लेने का काम भी 2-3 घंटे में पूरा हो जाएगा। जिनके परिजन विदेश में हैं उनको सूचित कर दिया गया है।'

एयर इंडिया की ये बोइंग 737 पैसेंजर फ्लाइट थी। फ्लाइट अहमदाबाद एयरपोर्ट से लंदन के लिए रवाना हो रही थी। प्लेन क्रैश होने के बाद फायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां मौके पर पहुंची। राहत और बचाव का काम किया जा रहा है।

एयर इंडिया ने अपने पोस्ट में कहा, 'अहमदाबाद से 13:38 बजे रवाना हुई इस फ्लाइट में 242 यात्री और चालक दल के सदस्य सवार थे। इनमें से 169 भारतीय, 53 ब्रिटिश, 1 कनाडाई और 7 पुर्तगाली नागरिक हैं।' एयर इंडिया ने अपने पोस्ट में बताया, 'हमने अधिक जानकारी प्रदान करने के लिए एक समर्पित यात्री हॉटलाइन नंबर 1800 5691 444 भी स्थापित किया है। एयर इंडिया इस घटना की जांच कर रहे अधिकारियों को अपना पूरा सहयोग दे रही है।'

इंडियन आर्मी ने संभाला मोर्चा

अहमदाबाद के पास एयर इंडिया के विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद चल रहे मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR) प्रयासों में नागरिक प्रशासन की सहायता के लिए लगभग 130 कर्मियों वाली भारतीय सेना की टीमें तैनात की गई हैं। भारतीय सेना की प्रतिक्रिया में मलबा हटाने के लिए जेसीबी के साथ इंजीनियरिंग टीमें, डॉक्टरों और पैरामेडिक्स वाली मेडिकल टीमें, त्वरित कार्रवाई दल (QAT), अग्निशामक यंत्रों और पानी के बाउजर के साथ अग्निशमन संपत्तियां और साइट प्रबंधन के लिए प्रोवोस्ट स्टाफ शामिल हैं। सैन्य अस्पताल को भी स्टैंडबाय पर रखा गया है।

दिल्ली परिवहन विभाग की स्क्रैप शाखा के अधिकारियों के कारण भारत सरकार, दिल्ली सरकार और जनता को लग रहा बड़ा चूना

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को अपने साथ जोड़कर जनता के वाहनों को नियमों ओर अपने द्वारा जारी एसओपी को ताक पर रख कर उठवा कर स्क्रैप करने के लिए सौंपने पर लगातार सवाल खड़े हो रहे हैं पर इन अधिकारियों को या तो किसी का डर नहीं है या इनके सिर पर किसी प्रभावशाली व्यक्ति का हाथ है। इनके खिलाफ भरपुर सबूत उपलब्ध होने के बाद भी कोई आला अधिकारी, मुख्य सचिव दिल्ली, दिल्ली सरकार या उपराज्यपाल ना तो कोई कार्यवाही कर रहा है और ना ही निष्पक्ष जांच के आदेश जारी कर रहा है।

जो शिकायतें अब तक उठ रही थी उससे जनता को चूना लग रहा था पर अब जो बाते सामने आ रही है उससे सीधे तौर पर भारत सरकार और दिल्ली सरकार के राजस्व को मोटा चूना लग रहा है। **क्या एक सरकारी अधिकारी की गलती से भारत सरकार और दिल्ली सरकार के राजस्व को चूना लगने को कानून की दृष्टी में माफ किया जा सकता है** बड़ा सवाल उठता है। चूना तो लग रहा है और वह भी सिर्फ़ दिल्ली परिवहन विभाग की स्क्रैप शाखा के अधिकारियों के कारण। पर सब कुछ देखते हुए भी आला अधिकारी क्यों हैं चुप यह एक बड़ा सवाल है।

आज आपको बताते है की कैसे परिवहन विभाग के स्क्रैप शाखा का अधिकारी अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो के साथ मिलकर भारत सरकार और दिल्ली सरकार के राजस्व को चूना लगा रहे हैं :-

सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी गैजेट नोटिफिकेशन का अंतर्गत किसी भी प्रवर्तन शाखा द्वारा जब्त वाहन जिसे स्क्रैप के लिए सुपुर्द किया जाता हैं उस वाहन के लिए जारी होने वाला सर्टिफिकेट आफ डिपोजिट (सीओडी) के प्रति भारत एवं राज्य सरकारों द्वारा घोषित नए वाहन की खरीद पर टैक्स में छूट नही दी जाएगी पर दिल्ली परिवहन विभाग के द्वारा जारी पत्र के अनुसार दिल्ली यातायात पुलिस और दिल्ली नगर निगम ने उन्हीं वाहन स्क्रैप डीलरो को अपने विभागीय शाखाओं में जोडकर जनता के वाहन अपनी ताक़त का प्रयोग कर उठवाकर स्क्रैप के लिए सुपुर्द करते रहे।

स्क्रैप के लिए वाहन स्क्रैप डीलरो को दिए गए वाहनों की परिवहन विभाग द्वारा जारी एसओपी के तहत वाहन का स्क्रैप मुल्य हर हालत में वाहन प्राप्त होने से 15 दिन के अन्दर वाहन मालिकों या विभाग में जमा कराना आवश्यक था पर परिवहन विभाग की स्क्रैप शाखा के अधिकारियों के कारण एक दो वाहन स्क्रैप डीलरो को छोड़कर किसी ने भी वाहन का स्क्रैप मुल्य ना तो वाहन मालिकों को और ना ही विभागों का दिए फ़िर भी उन्हीं को वाहन सुपुर्द करते रहे और उन वाहनो के सर्टिफिकेट आफ डिपोजिट (सीओडी) जो गैजेट नोटिफिकेशन के अनुसार छुट प्राप्त नही कर सकते के प्रति छूट प्राप्त करने वाले सर्टिफिकेट आफ डिपोजिट (सीओडी) जारी कर भारत एवं राज्य सरकार को करोड़ों रुपए का चूना लगवा दिया और आगे भी लगवा रहे हैं।

जनता के साथ भारत सरकार और दिल्ली सरकार को चूना लगवाने और आगे भी लगातार लगवाने वाले अधिकारियों को ऐसा करने का कोई डर ना था ना है और ऐसा ही रहा तो ना ही होगा क्योंकि **आज की तारीख़ में परिवहन विभाग में डीटीओ आटो, डीटीओ हेडक्वार्टर और अब अधिकारी स्क्रैप शाखा के खिलाफ पुख्ता सबूत उपलब्ध होने की बाद भी कार्यवाही नहीं होना** सबूत है की आला अधिकारी या कोई उचित स्तरीय व्यक्ति का हाथ इनके सिर पर है जो इन्हें ना सिर्फ विभाग से अपितु दिल्ली प्रशासन, दिल्ली सरकार, विजिलेंस शाखा, एंटीकरप्शन और पुलिस से साफ़ बचा कर रख रहा है।

इससे यह बात तो साफ़ है की सबूतों की उपलब्धता होने पर भी अगर कार्यवाही नहीं होती है तो आने वाले समय में ओर भी अधिकारी इसी तरह जनता, भारत सरकार और दिल्ली सरकार को चूना लगाते नजर आयेंगे ही आयेंगे क्योंकि कमाई भी और खतरा भी नहीं।

रांची में महिलाओं पर अभद्र व्यवहार तो ओटो का होगा लाईसेंस रद्द : करमाली, एसपी ट्रेफिक

नेम प्लेट युक्त चालक का ड्रेस कोड लागु होगा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। राजधानी में आये दिनों महिलाओं के साथ बदसलुकी की अनेक शिकायतों के बाद झारखंड सरकार राजधानी में आज सक्रिय हुई । अब राजधानी रांची के ऑटो और ई-रिक्शा चालकों को निर्धारित ड्रेस पहनकर ही गाड़ी चलानी होगी। ड्रेस में नेम प्लेट भी लगाना होगा। ऐसा नहीं करने पर संबंधित चालकों पर जुर्माना किया जाएगा। यह निर्देश ट्रैफिक एसपी कैलाश करमाली की अध्यक्षता में हुई बैठक में दिया गया। बैठक में जिला परिवहन पदाधिकारी के अलावा रांची जिला ऑटो चालक संघ, टैक्सी चालक यूनियन के लोग शामिल थे।

परिवहन एसपी की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में महिला और सड़क सुरक्षा के विषय पर चर्चा हुई। पदाधिकारियों ने कहा कि महिलाओं के साथ छेड़खानी समेत अन्य अभद्र व्यवहार की लगातार शिकायतें मिल रही हैं। इसकी वजह से इस बैठक का आयोजन किया गया। उपस्थित संघ के लोगों को निर्देश दिया कि वे न

सिर्फ यातायत नियमों का पालन करें, बल्कि महिला यात्रियों को सुरक्षित उनके गंतव्य तक पहुंचाएं। महिला यात्री के साथ किसी तरह की घटना की अगर शिकायत मिली तो उनके खिलाफ न सिर्फ कानूनी कार्रवाई की जाएगी, बल्कि उनका ड्राइविंग लाइसेंस भी रद्द किया जाएगा। ट्रैफिक एसपी ने यूनियन के लोगों से कहा कि वे चालकों के साथ बैठक कर उन्हें प्रशासन के दिशा-निर्देशों की जानकारी दें। महिला यात्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करने की भी जानकारी दें। बैठक में ऑटो चालकों को सख्त निर्देश दिया गया है कि वे हर हाल में यातायात नियम का पालन कर अपने वाहन चलाएं।

एसपी ट्रेफिक ने बताया कि रांची के चौक-चौराहों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन समेत अन्य मुख्य स्थानों पर जिला प्रशासन, पुलिस पदाधिकारियों का मोबाइल नंबर का स्टीकर लगाया जाएगा। इसमें एसएसपी, डीएसपी और संबंधित इलाके के थानेदार का नंबर अंकित रहेगा। आम यात्रियों को अगर किसी तरह की समस्या है तो वे संबंधित नंबर पर फोन कर इसकी शिकायत कर सकते हैं। ट्रैफिक एसपी ने बताया कि शहर के सभी ऑटो, बस और टोटो चालक अपनी गाड़ी में डायल 112 का स्टीकर लगाएंगे। साथ ही स्टीकर में एसएसपी, डीएसपी का मोबाइल नंबर भी अंकित करेंगे।

एन जी टी आदेश को ठेंगा, झारखंड-ओडिशा सीमावर्ती जिले से आठ वाहन जप्त

बंगाल सीमा पर राजस्व ,खनन सख्त, पुलिस पर उठ रही ऊंगली ?

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

मनोहरपुर। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण द्वारा भारत के विभिन्न नदियों से बालू के उत्खनन पर कल से प्रतिबंध लग चुका है । पर सिंहभूम के बालू माफिया पोड़ाहाट अनुमंडल , सीमावर्ती ओडिशा आदि इलाके से खुलेआम बालू का उत्खनन और तस्करी कर रहे हैं। बीते रात पोड़ाहाट की अनुमंडल पदाधिकारी श्रुति राजलक्ष्मी ने यहां देर रात छापा मारा । उसने चक्रधरपुर-गोइलकेरा मुख्य मार्ग पर चक्रधरपुर और सोनुवा थाना क्षेत्र में बुधवार सुबह लगभग तीन बजे बालू लदे कुल आठ ट्रैक्टर-ट्रॉली को पकड़ा और उन्हें जब्त कर थाना को सुपुर्द किया । इनमें से 5 ट्रैक्टर को चक्रधरपुर थाना और 3

ट्रैक्टर को सोनुवा थाना को दिया गया । एसडीओ श्रुति राजलक्ष्मी की इस कार्रवाई के बाद बालू माफिया मे खलबली मची हुई है । छापेमारी की खबर मिलते ही बालू लदे ट्रैक्टर ग्रामीण क्षेत्र सड़क में भागने में सफल रहे। जब्त वाहनों के विरुद्ध अग्रेतर कानूनी कार्रवाई के लिए खनन विभाग को भेजा जा रहा है।

विभागीय मिलीभगत से चल रहा है बालू का अवैध कारोबार

स्थानीय लोगों के अनुसार, गोइलकेरा व गुदड़ी स्थित कारो नदी के अवैध बालू घाटों से लगातार अवैध बालू का कारोबार धडल्ले से चल रहा है। बता दें कि पूर्व में भी एसडीओ ने छापेमारी अभियान चला कर दर्जन भर ट्रैक्टर ट्रॉली जब्त किया था। लेकिन, दो दिन में ही छूट गए, जिससे विभाग पर भी कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। हालांकि एसडीओ के छापेमारी अभियान से कई बालू लदे वाहन पकड़े जाते हैं। इसके बावजूद बालू माफिया रात के अँधेरे में बालू का अवैध कारोबार करते रहते हैं। इससे सरकार को प्रतिदिन लाखों का राजस्व नुकसान भी होता है।

जानकारों का कहना है कि पोड़ाहाट अनुमंडल के गुदड़ी और गोइलकेरा से थाना क्षेत्र से रोजाना 50 से 60 ट्रैक्टर-ट्रॉली बालू आते हैं। सभी बालू नदी से निकाल के गुदड़ी गोइलकेरा, सोनुवा थाना के बगल से रोजाना गुजरते हैं, लेकिन पुलिस द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की जाती है, जिससे कई सवाल उठ रहे हैं। इसमें अधिकांश बालू चक्रधरपुर आता है। यह ठीक थाना के बगल से चक्रधरपुर शहर में घुसते हैं। इसके बावजूद कोई कार्रवाई नहीं होने से बालू माफिया के हौसले बुलंद हैं। वैसे खनन विभाग की कठोर कार्रवाई के बाबजूद कुकुडू प्रखंड के बंगाल सीमा में यह खेल जारी है। साथ ही ओडिशा (मयूरभंज) -झारखंड के राजनगर प्रखंड में भी यह चल रहा है जिसे पुलिस का संरक्षण प्राप्त है यद्यपि खनन, राजस्व सख्त है ।

झारखंड में वंदे भारत ट्रेनें बन गयी टिटिई के कमाई का जरिया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

चक्रधरपुर, आये दिनों झारखंड में चलने वाली विभिन्न वंदे भारत एक्सप्रेस आम रेलगाड़ी की तरह रेल टिकट निरीक्षकों का कमाई का जरिया बन गया है जिसका नमूना पटना- टाटानगर वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन में बिना टिकट 11 लोगों को यात्रा करवाने के मामले में टीटीई नसीम और टीटीई अर्जुन साहू को ट्रेन की ड्यूटी से हटा दिया गया साथ ही सिंहभूम जिला जो कभी ओडिशा रहा वहां से बेहतर पढाई के लिए छात्र- छात्राएं ओडिशा आना जाना किया करती है । यानां एक छात्रा का टिकट रहते टाटा - बरहामपुर वंदे भारत से उसे चाईबासा स्टेशन पर उतारे जाने के करण अबतक रेल अधिकारियों का मौन व्रत पर मामला तुल पकड़ रहा है ।

टाटा पटना वंदे भारत एक्सप्रेस के दोनों टीटीई को धनबाद रेल मंडल के एडीआरएम विनीत कुमार अपनी औचक जांच में ऑन ड्यूटी भ्रष्टाचार करते हुए 11 मई को पकड़ा था। दोनों टीटीई बेटिकट यात्रियों को वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन की सीट बेच रहे थे और अपनी जेब गर्म कर रहे थे। जिसकी विस्तृत रिपोर्ट धनबाद एडीआरएम द्वारा प्रस्तुत करने के बाद चक्रधरपुर रेल मंडल के सीनियर डीसीएम आदित्य चौधरी ने कार्रवाई की है। बताया जाता है कि फिलहाल दोनों आरोपी टीटीई को ट्रेन की ड्यूटी से हटा दिया गया है और स्टेशन में ड्यूटी पर लगाया गया है। जांच पूरी होने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

इधर, चाईबासा में टिकट रहने के बावजूद के युवती को ट्रेन से उतारे जाने के मामले में भी जांच जारी है ।एपरिवहन विशेष समाचार ने चक्रधरपुर डी सी एम से इस बाबत जानकारी मांगी है । सनद रहे कि रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव

राजनीति में आने से पहले ओडिशा कैडर के आई ए एस रहे हैं । वे झारखंड के तीनों सिंहभूम समेत कोयलांचल, लौह्यंल एवं औद्योगिक क्षेत्र के रेल परिवहन को भली भाती जानते ।

उधर चाईबासा स्टेशन से पढ़ाई के लिए भूवनेश्वर जा रही छात्रा ट्रेन पर चढ़ी थी और ट्रेन में मौजूद रेलवे के कर्मचारियों से टिकट दिखाकर बात भी की थी।

इससे साफ़ हो गया है की १५ मई को युवती समय पर ट्रेन में सवार होने आई थी, लेकिन ट्रेन के कर्मचारियों से गुमराह होने के बाद वह डर से ट्रेन से उतर गयी। आखिर उसे डराया कौन ?

उसके पिता विनोद निषाद ने शिकायत दर्ज की थी कि उसे टीटीई और ट्रेन के अन्य कर्मियों ने उनके टिकट को वंदे भारत का टिकट नहीं बताकर उतार दिया था और वह ट्रेन में सफर नहीं कर पायी थी। जो वंदे भारत एक्सप्रेस जैसे ट्रैनों को कमाई का जरिया बनाते हैं या जनता को जायज सुविधा देते इस पर मंत्री अश्विनी वैष्णव तक मामला कभी भी पहुंच सकता ।

वास्तु दोष निवारण उपाय क्या हैं एवं महालक्ष्मी की स्थायी कृपा, धन प्राप्ति के उपाय आओ जानें

मेन गेट पर लगा रंग बन सकता है दरिद्रता का कारण, जानें कौन से रंग मुख्य द्वार के लिए अशुभ

*वास्तु शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। हमारे घर की दिशा, प्रवेश द्वार, रंग, और सजावट- इनका हमारे जीवन पर गहरा असर पड़ता है।

*विशेष रूप से घर का मुख्य द्वार केवल प्रवेश का रास्ता नहीं होता, बल्कि यह ऊर्जाओं का प्रवेश द्वार भी माना जाता है। अगर इसमें वास्तु के नियमों की अनदेखी की जाए, खासकर रंगों का चयन गलत हो, तो यह दरिद्रता, अशांति और आर्थिक समस्याओं का कारण बन सकता है। आइए विस्तार से जानते हैं कि मुख्य द्वार के रंग का आपके जीवन पर क्या असर पड़ता है और कौन-से रंग दरिद्रता को आमंत्रित कर सकते हैं।

मुख्य द्वार का महत्व वास्तु शास्त्र में

वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर का मुख्य द्वार वह स्थान होता है जहाँ से न केवल लोग बल्कि ऊर्जाएं भी अंदर प्रवेश करती हैं। यही कारण है कि इसे x'सिंह द्वार' भी कहा जाता है। अगर यह द्वार सही दिशा में हो और इसके रंग, आकार और सजावट उचित हो, तो यह घर में सुख-शांति, समृद्धि और स्वास्थ्य को बनाए रखता है। लेकिन अगर इसके रंग और दिशा में दोष हो, तो यह दरिद्रता, रोग और बाधाओं को निमंत्रण देता है।

कौन-से रंग मुख्य द्वार के लिए माने जाते हैं अशुभ?

हमारे द्वारा अपने घर फ्लैट फैक्ट्री ऑफिस का वास्तुदोष चैक कराने या ओरा स्कैन कराने के लिए सम्पर्क करें

* काला रंगः- वास्तु में काले रंग को नकारात्मकता और भारी ऊर्जा का प्रतीक माना गया है। अगर आपके घर का मुख्य द्वार काले रंग में रंगा है, तो यह अवसाद, मानसिक तनाव और आर्थिक बाधाओं का कारण बन सकता है।

* गहरा नीला या स्लेटी रंगः- ये रंग भारी ऊर्जा को आकर्षित करते हैं और घर में नीरसता या उदासी का माहौल बना सकते हैं। व्यापारियों के लिए तो यह खासकर नुकसानदायक हो सकता है।

* गहरा लालः- अधिक उत्तेजक और उग्र रंग जैसे गहरा लाल ऊर्जा को असंतुलित कर सकते हैं। यह क्रोध, झगड़े और अस्थिरता बढ़ा सकते हैं।

* भूरा या गंदला पीलाः- यह रंग दरिद्रता, आर्थिक नुकसान और घरेलू कलह को बढ़ावा दे सकते हैं। इनसे घर की सुंदरता भी प्रभावित होती है।

मुख्य द्वार के लिए शुभ रंग कौन-से हैं?

* हल्का हराः- यह रंग शांति, तरक्की और ताजगी का प्रतीक है। यह घर में सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखता है।

* क्रीम या सफेदः- यह रंग पवित्रता, शांति और संतुलन का प्रतीक माना गया है। इससे मानसिक स्पष्टता बनी रहती है।

* हल्का नीलाः- यह रंग शांति और सौम्यता को बढ़ाता है। विशेष रूप से मानसिक कार्यों में लगे लोगों के लिए यह शुभ माना जाता है।

* हल्का गुलाबीः- यह रंग प्रेम, रिश्तों और सौहार्द्र को बढ़ाता है।

रंग के साथ जुड़ी वास्तु की और भी बातें

xमुख्य द्वार का रंग घर की दिशा पर भी निर्भर करता है। जैसेः-

* उत्तर दिशा का मुख्य द्वार हो तो हल्का नीला या हरा रंग शुभ होता है।

* पूर्व दिशा के लिए क्रीम, सफेद और हल्का गुलाबी अच्छा होता है।

* दक्षिण दिशा के लिए हल्का ब्राउन, हल्का लाल या नारंगी रंग ठीक होता है।

* पश्चिम दिशा के लिए सफेद, क्रीम या चॉकलेट रंग उपयुक्त माने जाते हैं।

* दरवाज़े को साफ-सुथरा और सुसज्जित रखना चाहिए। गंदा, खुरदुरा या टूटा-फूटा दरवाज़ा दरिद्रता का द्वार बन सकता है।

* मुख्य द्वार के आसपास हल्की रोशनी जरूर होनी चाहिए, ताकि सकारात्मक ऊर्जा घर में आसानी से प्रवेश कर सके।

उपायः अगर मुख्य द्वार का रंग गलत है तो क्या करें?

* रंग को बदलेंः- सबसे अच्छा उपाय है कि आप दरवाज़े का रंग वास्तु अनुसार शुभ रंगों में बदल दें।

तोरण और शुभ चिह्न लगाएंः-

* दरवाज़े पर आम के पत्तों की तोरण, स्वास्तिक, ॐ या शुभ-लाभ जैसे प्रतीक लगाना भी शुभता बढ़ा सकता है।

* सप्ताह में एक बार दरवाज़े को गंगाजल से पोछें या वहां हनुमान चालीसा या विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।

* मुख्य द्वार के सामने कोई बड़ा कूड़ेदान, टूटे गमले या जंग लगे सामान न रखें। इससे भी दरिद्रता आती है।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण से रंगों का प्रभाव

xज्योतिष में भी ग्रहों का संबंध रंगों से जोड़ा गया हैः-

* शनि से जुड़े लोगों को गहरा नीला या काला रंग नहीं चुनना चाहिए।

* मंगल से जुड़े लोग अधिक लाल रंग से बचें।

* चंद्रमा से जुड़े व्यक्तियों के लिए सफेद या हल्का नीला शुभ होता है।

* यदि आपकी कुंडली में कोई ग्रह दोष है, तो उस ग्रह के रंग का घर के मुख्य द्वार पर प्रयोग नुकसानदायक हो सकता है। ऐसे में किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह लेना उचित रहेगा। मुख्य द्वार का रंग केवल सजावट का हिस्सा नहीं होता, यह आपके जीवन की दिशा और दशा दोनों को प्रभावित कर सकता है। यदि आप लगातार आर्थिक तंगी, मानसिक तनाव या दरिद्रता का सामना कर रहे हैं, तो एक बार अपने घर के मुख्य द्वार की ओर भी नज़र डालें-कहीं वही तो इसका कारण नहीं।

महालक्ष्मी की स्थायी कृपा, धन प्राप्ति के उपाय

1. सदैव याद रखें कभी भी किसी से कोई चीज मुफ्त में न लें, हमेशा उसका मूल्य अवश्य ही चुकाएं, कभी भी किसी व्यक्ति को धोखा देकर धन का संचय न करें, इस तरह से कमाया हुआ धन टिकता नहीं है, वह उस व्यक्ति और उसके परिवार के ऊपर कर्ज के रूप में चढ जाता है और ऐसा करने से व्यक्ति के स्वयं के भाग्य और उसके कर्म से आसानी से मिलने वाली सम्रद्धि और सफलता में भी हमेशा बाधाएँ ही आती है।

2. हर एक व्यक्ति को चाहे वह अमीर हो या गरीब, उसका जो भी व्यवसाय -नौकरी हो अपनी आय का कुछ भाग प्रति माह धार्मिक कार्यों में अथवा दान पुण्य में अवश्य ही खर्च करें, ऐसा करने से उस व्यक्ति पर माँ लक्ष्मी की सदैव कृपा बनी रहती है, उसके परिवार में हर्ष - उल्लास और सहयोग का वातावरण बना रहता है तथा सामान्यता वह अपने दायित्वों के पूर्ति के लिए पर्याप्त धन अवश्य ही आसानी से कमा लेता है।

3. स्त्रियों को स्वयं लक्ष्मी का स्वरुप माना गया है। प्रत्येक स्त्री को पूर्ण सम्मान दें। घर की व्यवस्था अपनी पत्नी को सौंपें, वही घर को चलाये उसके काम में कभी भी मीन मेख न निकालें। अपने माता पिता को अपनी आय का एक निश्चित हिस्सा अवश्य ही दें। घर में कोई भी बड़ा काम हो तो उस घर के बड़े बुजुर्गों विशेषकर स्त्रियों को अवश्य ही आगे करें। अपने घर एवं रिश्तेदारी में अपनी पत्नी को अवश्य ही आगे रखें। अपनी माँ, पत्नी, बहन एवं बेटी को हर त्यौहार, जन्मदिवस, एवं शादी की सालगिरह आदि पर कोई न कोई उपहार अवश्य ही दे।

4. घर के मुखिया जो अपने घर व्यापार में माँ लक्ष्मी की कृपा चाहते है वह रात के समय कभी भी चावल, सत्तू, दही, दूध, मूली आदि खाने की सफेद चीजों का सेवन न करें इस नियम का जीवन भर यथासंभव पालन करने से आर्थिक पक्ष हमेशा ही मजबूत बना रहता है।

5. शुक्रवार को सवा सौ ग्राम साबुत बासमती चावल और सवा सौ ग्राम ही मिश्री को एक सफेद रुमाल में बांध कर माँ लक्ष्मी से अपनी गलतियों की क्षमा मांगते हुए उनसे अपने घर में स्थायी रूप से रहने की प्रार्थना करते हुए उसे नदी की बहते हुए जल में प्रवाहित कर दें, धीरे धीरे आर्थिक पक्ष मजबूत होता जायेगा।

6. प्रथम नवरात्री से नवमी तिथि तक प्रतिदिन एक बार श्रीसूक्त का अवश्य ही पाठ करें इससे निश्चय ही आप पर माता लक्ष्मी की कृपा द्रष्टि बनी रहेगी।

7. घर के पूजा स्थल और तिजोरी में सदैव लाल कपडा बिछा कर रखें और संध्या में आपकी पत्नी या घर की कोई भी स्त्री नियम पूर्वक वहां पर अगरबत्ती जला कर अवश्य ही पूजा करें।

8. प्रत्येक पूर्णिमा में नियमपूर्वक साबूदाने की खीर मिश्री और केसर डाल कर बनाये फिर उसे माँ लक्ष्मी को अर्पित करते हुए अपने जीवन में चिर स्थाई सुख, सौभाग्य और सम्रद्धि की प्रार्थना करें, तत्पश्चात घर के सभी सदस्य उस खीर के प्रशाद का सेवन करें।

9. हर 6 माह में कम से कम एक बार अपने माता पिता को कोई उपहार अवश्य ही दें इससे आपकी आय में सदैव बरकत रहेगी।

10. घर में तुलसी का पौधा लगाकर वहां पर संध्या के समय रोजाना घी का दीपक जलाने से माता लक्ष्मी उस घर से कभी भी नहीं जाती है।11. शुक्र ग्रह भौतिक सुख के कारक है, इसको मजबूत करने के लिए घर का कुछ हिस्सा कच्चा जरुर रखे।

12. यदि गृह लक्ष्मी प्रतिदिन एक लोटा जल प्रातः घर के मुख्य द्वार पर डाले तो उस घर में धन का आगमन बहुत ही सुगमता से होता है।

13. माँ लक्ष्मी का ध्यान करते हुए स्नान के पश्चात यदि मस्तक पर शुद्ध केसर का तिलक, और इत्र लगाकर ही घर से अपने व्यवसाय में जाएँ तो धन लाभ की सम्भावना बड़ जाती है।

14. रात को सोते समय अपने दन्त फिटकरी से साफ करें लाभ प्राप्त होगा।

15. बुधवार को हरा चारा, ब्रहस्पति वार को गीली चने की दाल को आटे में मिलाकर उसके 2 पेड़े और शुक्रवार को सफेद चावल मीठा डालकर गाय को खिलाने से उस घर पर कभी भी कोई भी आर्थिक संकट नहीं आता है।

16. इन्द्रकृत महालक्ष्मी स्तोत्र के 11 पाठ नित्य करने और गीताजी के ग्यारहवें अध्याय का नियमित पाठ करने से महालक्ष्मी उस घर में सदा निवास करती है।

17. श्रीसूक्त के रात्रि के समय 11 पाठ करने व एक पाठ से हवन करने से मां लक्ष्मी उस पर सदा प्रसन्न रहती है।

18. ध्यान रहे धन लक्ष्मी की पूजा करने वाले किसी भी हाल में स्त्री का अनादर नहीं करें।

19. धन लक्ष्मी माता को सफेद पदार्थ जैसे चावल से बनी खीर और यथासंभव दूध से बने पकवानों का भोग लगाएं।

20. गृह लक्ष्मी, माता या घर की सबसे बड़ी स्त्री को आदर देते हुए घर की किसी भी पूजा का कोई भी प्रसाद सर्वप्रथम उन्हें ही ग्रहण कराएं तत्पश्चात स्वयं ग्रहण करें

21. भगवती लक्ष्मी के 18 पुत्र माने जाते हैं। इनके प्रतिदिन अथवा शुक्रवार के दिन इनके नाम के आरंभ में ॐ और अंत में 'नमः' लगाकर जप करने से मनचाहे धन की प्राप्ति होती है। जैसे -

1. ॐ देवसखाय नमः2. ॐ चिक्लीताय नमः3. ॐ आनंदाय नमः4. ॐ कर्दमाय नमः 5. ॐ श्रीप्रदाय नमः6. ॐ जातवेदाय नमः7. ॐ अनुरागाय नमः8. ॐ संवादाय नमः9. ॐ विजयाय नमः10. ॐ वल्लभाय नमः11. ॐ मदाय नमः12. ॐ हर्षाय नमः13. ॐ बलाय नमः14. ॐ तेजसे नमः15. ॐ दमकाय नमः16. ॐ सलिलाय नमः17. ॐ गुग्गुलाय नमः18. ॐ कुरूंटकाय नमः

यदि संभव हो तो इन्हे एक सफेद कागज पर लाल स्याही से लिख कर रख लें और पढ़ने के बाद इस कागज को चूमकर अपने माथे से अवश्य लगाएँ।

22. शंख समुद्र मंथन के समय प्राप्त चौदह अनमोल रत्नों में से एक है। माता लक्ष्मी के साथ उत्पन्न होने के कारण इसे लक्ष्मी भ्राता भी कहा जाता है। यही कारण है कि जिस घर में शंख होता है वहां लक्ष्मी का वास अवश्य ही होता है। घर में शंख जरूर रखें।

23. पति या पत्नी में कोई भी रात्रि में सोने से पहले घरं में ईश्वर का स्मरण करते हुए दो फूल वाले लौंग देसी कपूर के साथ जला लें मां लक्ष्मी की सदैव कृपा बनी रहेगी।

24. शुक्रवार के दिन दक्षिणावर्ती शंख में जल भरकर भगवान विष्णु का अभिषेक करने से मां लक्ष्मी बहुत जल्दी प्रसन्न हो जाती हैं उस व्यक्ति को धन की कभी भी कमी नहीं रहती है।

25. बांस की बनी हुई बांसुरी भगवान श्रीकृष्ण को अतिप्रिय है। जिस घर में बांसुरी रखी होती है, उस परिवार में परस्पर प्रेम और सहयोग तो बना रहता ही है साथ ही उस घर में धन-वैभव, सुख-समृद्धि की भी कोई कमी नहीं रहती है। ध्यान दीजियेगा की बांसुरी टूटी, चिटकी न हो और उस पर कोई रेशमी मोटा धागा अवश्य बांध दें।

26. माह के किसी भी शुक्रवार के दिन 3 कुंवारी कन्याओं को घर बुलाकर खीर खिलाकर पीला वस्त्र व दक्षिणा देकर विदा करें। इससे मां लक्ष्मी की उस घर पर हमेशा कृपा बनी रहती हैं।

27. किसी शुभ मुहूर्त में लाल धागे में सातमुखी रुद्राक्ष गले में धारण करने से अवश्य ही धन लाभ होता है।

28. सफेद अकाव की जड़ को सफेद कपड़े में बांधकर घर के धन स्थान में रखने से समृद्धि बढ़ती है।

29. घर में समृद्धि लाने हेतु घर के उत्तर पश्चिम के कोण (वायव्य कोण) में सुन्दर से मिट्टी के बर्तन में कुछ सोने-चांदी के सिक्के, लाल कपड़े में बांध कर रखें। फिर बर्तन को गेहूं या चावल से भर दें। ऐसा करने से घर में धन का अभाव नहीं रहेगा।

30. काले तिल परिवार के सभी सदस्यों के सिर पर सात बार उसार कर घर के उत्तर दिशा में फेंक दें, धनहानि बंद होगी

31. एक हंडिया में सवा किलो हरी साबुत मूंग की दाल, दूसरी में सवा किलो डलिया वाला नमक भर दें। यह दोनों हंडिया घर में कहीं साफ और सुरक्षित जगह में रख दें। यह क्रिया बुधवार के दिन करें। घर में धन आना और रुकना शुरू हो जाएगा।

32. अगर अचानक धन लाभ की स्थितियाँ बनती नज़र आती हों, किन्तु लाभ नहीं मिल रहा हो, तो गोपी चन्दन की नौ डलियाँ लेकर केले के वृक्ष पर टाँग देनी चाहिए। यह ध्यान रहे की यह चन्दन पीले धागे से ही बाँधना है।

33. अकस्मात धन लाभ के लिये शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार को सफेद कपड़े के झंडे को पीपल के वृक्ष पर लगाना चाहिए। इस प्रयोग से व्यवसाय में किसी भी प्रकार का अवरोध भी टल जाता है।

34. अगर आप अमावस्या के दिन पीली त्रिकोण आकृति की पताका विष्णु मन्दिर में ऊँचाई वाले स्थान पर इस प्रकार लगाएँ कि वह लगातार लहराती रहे, तो आपका भाग्य शीघ्र ही चमक उठेगा। लगातार स्थाई लाभ हेतु यह ध्यान रहे की झंडा वहाँ लगा रहना चाहिए। उसे आप समय समय पर स्वयं बदल भी सकते है।

35. प्रत्येक शुक्रवार को माता लक्ष्मी के सामने नौं बत्तियों का शुद्ध घी का दीपक जलाकर सफ़ेद दूध की बनी मिठाई का भोग लगाकर तत्पश्चात अपने हाथ से वह प्रशाद अपनी माता, पत्नी, बहन एवं बेटी को खिलाने सबको बाँटने के बाद अंत में स्वयं ग्रहण करने से मां लक्ष्मी सदैव उस घर में निवास करती है।

36. जो व्यक्ति नहाते हुए अथवा पैर धोते हुए पैर से पैर को रगड़कर साफ करता है, सर पर तेल लगाने के बाद हाथों में बचे हुए तेल को मुंह, कलाइयों या बाजुओं में रगड़ता है, नोटों को थूक लगा कर गिनता है। उसे हमेशा धन का संकट बना रहता है।

37. महिलाओं का आदर करने से तथा 10 वर्ष से कम उम्र की कन्याओं को देवी का स्वरूप मानकर प्रसन्न करने से सुख-समृद्धि की वृद्धि होती है।

38. सफेद वस्तुओं का दान करने से मां लक्ष्मी अति प्रसन्न होती हैं और सुख-संपत्ति का भंडार भर देती हैं।

39. घर में टूटे-फूटे बर्तनों का उपयोग कदापि न करें। यह दरिद्रता का सूचक है और इससे माँ लक्ष्मी रुष्ठ हो जाती हैं।

40. भगवान विष्णु की पत्नी महालक्ष्मी के कई फोटो उपलब्ध हैं। इन उपलब्ध चित्रों में से उस फोटो की पूजा करनी चाहिए जिसमें महालक्ष्मी और भगवान श्रीहरि गरुड़ देव पर आसीन हो। इस फोटो की पूजा करने पर व्यक्ति मालामाल हो सकता है।जो भी भक्त देवी लक्ष्मी के ऐसे फोटो की पूजा करता है वह सभी देवी-देवताओं की कृपा का पात्र बन जाता है। इसके व्यक्ति कुंडली के सभी दोषों का प्रभाव भी कम हो जाता है। श्रीहरि के साथ लक्ष्मी यदि गुरुड़ देव पर आसीन होकर आपके यहां आएंगी तो वे स्थाई रूप से आप पर कृपा बरसाएंगी।

41. किसी भी विशेष मनोरथ की पूर्ती के लिये शुक्ल पक्ष में जटावाला नारियल नए लाल सूती कपडे में बांधकर बहते जल में प्रवाहित करें। यह उपाय निष्ठापूर्वक करें।नारियल प्रवाहित करने से पहले अपने नाम और गौत्र का उच्चारण अवश्य करें।इसके बाद अपने इष्टदेव से अपनी परेशानियां दूर करने के लिए प्रार्थना करें और नारियल नदी में बहा दें। ध्यान रहे इसके बाद पलट जाएँ और पीछे पलटकर ना देखें।

42. अगर आपके व्यापार या नौकरी में मंदी आ गयी है तो किसी साफ़ शीशी में सरसों का तेल भरकर उस शीशी को किसी तालाब या बहती नदी के जल में डाल दें और ईश्वर से अपनी सफलता के लिए प्रार्थना करें। आपके व्यापार,, नौकरी में जान आ जाएगी।

43. यदि मार्ग में कोई सफाई कर्मचारी सफाई करता दिखाई दे तो उसे स्नेह से चाय-पानी के लिए कुछ दान अवश्य दें, इससे परिवार में प्रेम व सुख-समृद्धी बड़ती है। यदि सफाई कर्मचारी महिला हो तो बहुत ही उत्तम है।

44. अगर आपको धन की इच्छा है तो इसके लिए आप बुधवार या चतुर्थी तिथि के दिन सुबह स्नान आदि करने के बाद भगवान श्रीगणेश को शुद्ध घी और गुड़ का भोग लगाएं। थोड़ी देर बाद घी व गुड़ गाय को खिला दें। ये उपाय करने से धन संबंधी समस्या का निदान हो जाता

45।शुक्रवार के दिन दक्षिणावर्ती शंख में जल भरकर भगवान विष्णु का अभिषेक करें। इस उपाय में मां लक्ष्मी जल्दी प्रसन्न हो जाती हैं 46 शुक्रवार को पीले कपड़े में पांच लक्ष्मी (पीली) कौड़ी और थोड़ी सी केसर, चांदी के सिक्के के साथ बांधकर धन स्थान पर रखें।

47 कुछ ही दिनों में इसका प्रभाव दिखाई देने लगेगा।

48।इस दिन 3 कुंवारी कन्याओं को घर बुलाकर खीर खिलाएं तथा पीला वस्त्र व दक्षिणा देकर विदा करें।

49 ।इससे भी मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।शुक्रवार के दिन श्रीयंत्र का गाय के दूध के अभिषेक करें और अभिषेक का जल पूरे घर में छिंटक दें व श्रीयंत्र को कमलगट्टे के साथ धन स्थान पर रख दें। इससे धन लाभ होने लगेगा।

50 शुक्रवार का दिन लक्ष्मी जी का दिन माना जाता है। जिन्हें धन की देवी माना जाता है। इस दिन कई लोग व्रत भी रखते है जिससे कि उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाएं और सुख-शाति के साथ रह सके। धन की देवी को प्रसन्न करना बहुत ही आसान है। 51।अगर जन्म कुंडली में शुक्र अपनी दशा में अशुभ फल दे रहा है। शुक्र के प्रभाव से जानें कितनी बीमारियों का सामना करना पडता है जिससे कि आपको जीवन में सुख नाम की कोई चीज न रह जाती। जिसके लिए आप नए-नए उपाय करते है कि आपका ग्रह सही हो जाए।

लक्ष्मी मां को खुश करने के लिए यह उपाय करें

इस दिन शाम के समय घर के ईशान कोण में गाय के घी का दीपक लगाएं। बत्ती में रुई के स्थान पर लाल रंग के धागे का उपयोग करें साथ ही दीए में थोड़ी सी केसर भी डाल दें।इस दिन दान देने का भी विशेष महत्व है इसलिए इस दिन जितना हो सके गरीबों को दान करें। सफेद रंग की वस्तु या खाद्य पदार्थ का दान करें तो और शुभ रहेगा।शुक्रवार को गाय की सेवा करें श्यामा गाय मिल जाये तो और अच्छा है। इससे आपकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाएगी। इनमें से किसी एक को भी करने से आपके अशुभ फलों में कमी होकर शुभ फलों में वृद्धि होती है।

शुक्र ग्रह को मजबूत करने के आसान उपाय;

किसी भी मंदिर में जाकर गाय का शुद्ध घी दान में दें

श्रीमहालक्ष्मीसुप्रभातम् ॥

श्रीलक्ष्मि श्रीमहालक्ष्मि क्षीरसागरकन्यके
उत्तिष्ठ हरिसम्प्रीते भक्तानां भाग्यदायिनि ।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ श्रीलक्ष्मि विष्णुवक्षस्थलालये
उत्तिष्ठ करुणापूर्णे लोकानां शुभदायिनि ॥
१ ॥

श्रीपद्ममध्यवसिते वरपद्मनेत्रे
श्रीपद्महस्तचिरपूजितपद्मपादे ।
श्रीपद्मजातजननि शुभपद्मवक्त्रे
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ २ ॥

जाम्बूनदाभसमकान्तिविराजमाने
तेजोस्वरूपिणि सुवर्णविभूषिताङ्गि ।
सौवर्णवस्त्रपरिवेष्टितदिव्यदेहे
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ ॥

सर्वार्थसिद्धिदे विष्णुमनोऽनुकूले
सम्प्रार्थिताखिलजनावनदिव्यशीले ।
दारिद्र्यदुःखभयनाशिनि भक्तपाले
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ ४ ॥

चन्द्रानुजे कमलकोमलगर्भजाते
चन्द्रार्कवह्निनयने शुभचन्द्रवक्त्रे ।
हे चन्द्रिकासमसुशीतलमन्दहासे
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ ५ ॥

श्रीआदिलक्ष्मि सकलेप्सितदानदक्षे
श्रीभाग्यलक्ष्मि शरणागत दीनपक्षे ।
ऐश्वर्यलक्ष्मि चरणार्चितभक्तरक्षिन्
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ ६ ॥

श्रीधैर्यलक्ष्मि निजभक्तहृदन्तरस्थे
सन्तानलक्ष्मि निजभक्तकुलप्रवृद्धे ।
श्रीज्ञानलक्ष्मि सकलागमज्ञानदात्रि
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ ७ ॥

सौभाग्यदात्रि शरणं गजलक्ष्मि पाहि
दारिद्र्यध्वंसिनि नमो वरलक्ष्मि पाहि ।
सत्सौख्यदायिनि नमो धनलक्ष्मि पाहि
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ ८ ॥

श्रीराज्यलक्ष्मि नृपवेश्मगते सुहासिन्
श्रीयोगलक्ष्मि मुनिमानसपद्मवासिन् ।
श्रीधान्यलक्ष्मि सकलावनिक्षेमदात्रि
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ ९ ॥

श्रीपार्वती त्वमसि श्रीकरि शैवशैले
क्षीरोदधेस्त्वमसि पावनि सिन्धुकन्या ।
स्वर्गस्थले त्वमसि कोमले स्वर्गलक्ष्मी
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ १० ॥

गङ्गा त्वमेव जननी तुलसी त्वमेव
कृष्णप्रिया त्वमसि भाण्डिरदिव्यक्षेत्रे ।
राजगृहे त्वमसि सुन्दरि राज्यलक्ष्मी
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ ११ ॥

पद्मावती त्वमसि पद्मवने वरेण्ये
श्रीसुन्दरी त्वमसि श्रीशतशृङ्गक्षेत्रे ।
त्वं भूतलेऽसि शुभदायिनि मर्त्यलक्ष्मी
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ १२ ॥

चन्द्रा त्वमेव वरचन्दनकाननेषु
देवि कदम्बविपिनेऽसि कदम्बमाला ।
त्वं देवि कुन्दवनवासिनि कुन्ददन्ती
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ १ ॥

श्रीविष्णुपत्नि वरदायिनि सिद्धलक्ष्मि
सन्मार्गदर्शिनि शुभङ्करि मोक्षलक्ष्मि ।
श्रीदेवदेवि करुणागुणसारमूर्ते
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ १४ ॥

अष्टोत्तरार्चनप्रिये सकलेष्टदात्रि
हे विश्वधात्रि सुरसेवितपादपद्मे ।
सङ्कष्टनाशिनि सुखङ्करि सुप्रसन्ने
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ १५ ॥

आद्यन्तरहिते वरवर्णिनि सर्वसेव्ये
सूक्ष्मातिसूक्ष्मतररूपिणि स्थूलरूपे ।
सौन्दर्यलक्ष्मि मधुसूदनमोहनाङ्गि
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ १६ ॥

सौख्यप्रदे प्रणतमानसशोकहन्त्रि
अम्बे प्रसीद करुणासुधयाऽऽर्द्रदृष्ट्या ।
सौवर्णहारमणिनूपुरशोभिताङ्गि
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ १७ ॥

नित्यं पठामि जननि तव नाम स्तोत्रं
नित्यं करोमि तव नामजपं विशुद्धे ।
नित्यं शृणोमि भजनं तव लोकमातः
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ १८ ॥

माता त्वमेव जननी जनकस्त्वमेव
देवि त्वमेव मम भाग्यनिधिस्त्वमेव ।
सद्भाग्यदायिनि त्वमेव शुभप्रदात्री
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ १९ ॥

वैकुण्ठधामनिलये कलिकल्मषघ्ने
नाकाधिनाथविनुते अभयप्रदात्रि ।
सद्भक्तरक्षणपरे हरिचित्तवासिन्
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ २० ॥

निर्व्याजपूर्णकरुणारससुप्रवाहे
राकेन्दुबिम्बवदने त्रिदशाभिवन्द्ये ।
आब्रह्मकीटपरिपोषिणि दानहस्ते
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ २१ ॥

लक्ष्मीति पद्मनिलयेति दयापरेति
भाग्यप्रदेति शरणागतवत्सलेति ।
ध्यायामि देवि परिपालय मां प्रसन्ने
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ २२ ॥

श्रीपद्मनेत्ररमणीवरे नीरजाक्षि
श्रीपद्मनाभदयिते सुरसेव्यमाने ।
श्रीपद्मयुग्मधृतनीरजहस्तयुग्मे
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ २ ॥

इत्थं त्वदीयकरुणात्कृतसुप्रभातं
ये मानवाः प्रतिदिनं प्रपठन्ति भक्त्या ।
तेषां प्रसन्नहृदये कुरु मङ्गलानि
श्रीलक्ष्मि भक्तवरदे तव सुप्रभातम् ॥ २४ ॥

जलधीशसुते जलजाक्षवृते जलजोद्भवसन्नुते दिव्यमते ।
जलजान्तरनित्यनिवासरते शरणं शरणं वरलक्ष्मि नमः ॥ २५ ॥

प्रणताखिलदेवपदाब्जयुगे भुवनाखिलपोषण श्रीविभवे ।
नवपङ्कजहारविराजगले शरणं शरणं गजलक्ष्मि नमः ॥ २६ ॥

घनभीकरकष्टविनाशकरि निजभक्तदरिद्रप्रणाशकरि ।
ऋणमोचनि पावनि सौख्यकरि शरणं शरणं धनलक्ष्मि नमः ॥ २७ ॥

अतिभीकरक्षामविनाशकरि जगदेकशुभङ्करि धान्यप्रदे ।
सुखदायिनि श्रीफलदानकरि शरणं शरणं शुभलक्ष्मि नमः ॥ २८ ॥

सुरसङ्घशुभङ्करि ज्ञानप्रदे मुनिसङ्घप्रियङ्करि मोक्षप्रदे ।
नरसङ्घजयङ्करि भाग्यप्रदे शरणं शरणं जयलक्ष्मि नमः ॥ २९ ॥

परिसेवितभक्तकुलोद्धरिणि परिभावितदासजनोद्धरिणि ।
मधुसूदनमोहिनि श्रीरमणि शरणं शरणं तव लक्ष्मि नमः ॥ २८ ॥

शुभदायिनि वैभवलक्ष्मि नमो वरदायिनि श्रीहरिलक्ष्मि नमः ।
सुखदायिनि मङ्गललक्ष्मि नमो शरणं शरणं सततं शरणं ॥ २९ ॥

वरलक्ष्मि नमो धनलक्ष्मि नमो जयलक्ष्मि नमो गजलक्ष्मि नमः ।
जय षोडशलक्ष्मि नमोऽस्तु नमो शरणं शरणं सततं शरणं ॥ ० ॥

नमो आदिलक्ष्मि नमो ज्ञानलक्ष्मि नमो धान्यलक्ष्मि नमो भाग्यलक्ष्मि ।
महालक्ष्मि सन्तानलक्ष्मि प्रसीद नमस्ते नमस्ते नमो शान्तलक्ष्मि ॥ ० ॥

नमो सिद्धिलक्ष्मि नमो मोक्षलक्ष्मि नमो योगलक्ष्मि नमो भोगलक्ष्मि ।
नमो धैर्यलक्ष्मि नमो वीरलक्ष्मि नमस्ते नमस्ते नमो शान्तलक्ष्मि ॥ १ ॥

अज्ञानिना मया दोषानशेषान्विहितान्रमे ।
क्षमस्व त्वं क्षमस्व त्वं अष्टलक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ २ ॥

देवि विष्णुविलासिनि शुभकरि दीनार्तिविच्छेदिनि
सर्वैश्वर्यप्रदायिनि सुखकरि दारिद्र्यविध्वंसिनि ।
नानाभूषितभूषणाङ्गि जननि क्षीराब्धिकन्यामणि
देवि भक्तसुपोषिणि वरप्रदे लक्ष्मि सदा पाहि नः ॥ ॥ माम्

सद्यःप्रफुल्लसरसीरुहपत्रनेत्रे
हारिद्रलेपितसुकोमलश्रीकपोले ।
पूर्णेन्दुबिम्बवदने कमलान्तरस्थे
लक्ष्मि त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥

भक्तान्तरङ्गगतभावविधे नमस्ते
रक्ताम्बुजातनिलये स्वजनानुरक्ते ।
मुक्तावलीसहितभूषणभूषिताङ्गि
लक्ष्मि त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ५ ॥

क्षामादितापहारिणि नवधान्यरूपे
अज्ञानघोरतिमिरापहज्ञानरूपे ।
दारिद्र्यदुःखपरिमर्दितभाग्यरूपे
लक्ष्मि त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ६ ॥

चम्पालताभदरहासविराजवक्त्रे
बिम्बाधरेषु कपिकाञ्चितमञ्जुवाणि ।
श्रीस्वर्णकुम्भपरिशोभितदिव्यहस्ते
लक्ष्मि त्वत्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

स्वर्गापवर्गपदविप्रदे सौम्यभावे
सर्वागमादिविनुते शुभलक्षणाङ्गि ।
नित्यार्चिताङ्घ्रियुगले महिमाचरित्रे
लक्ष्मि त्वत्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ८ ॥

जाज्वल्यकुण्डलविराजितकर्णयुग्मे
सौवर्णकङ्कणसुशोभितहस्तपद्मे ।
मञ्जीरशिञ्जितसुकोमलपावनाङ्घ्रे
लक्ष्मि त्वत्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ९ ॥

सर्वापराधशमनि सकलार्थदात्रि
पर्वेन्दुसोदरि सुपर्वगणाभिरक्षिन् ।
दुर्वारशोकमयभक्तगणावनेष्टे
लक्ष्मि त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ४० ॥

बीजाक्षरत्रयविराजितमन्त्रयुक्ते
आद्यन्तवर्णमयशोभितशब्दरूपे ।
ब्रह्माण्डभाण्डजननि कमलायताक्षि
लक्ष्मि त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ४१ ॥

श्रीदेवि बिल्वनिलये जय विश्वमातः var वसुदायिनि
आह्लाददात्रि धनधान्यसुखप्रदात्रि ।
श्रीवैष्णवि द्रविणरूपिणि दीर्घवेणि
लक्ष्मि त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ४२ ॥

आगच्छ तिष्ठ तव भक्तगणस्य गेहे
सन्तुष्टपूर्णहृदयेन सुखानि देहि ।
आरोग्यभाग्यमकलङ्कयशांसि देहि
लक्ष्मि त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥

श्रीआदिलक्ष्मि शरणं शरणं प्रपद्ये
श्रीअष्टलक्ष्मि शरणं शरणं प्रपद्ये ।
श्रीविष्णुपत्नि शरणं शरणं प्रपद्ये
लक्ष्मि त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ४४ ॥

मङ्गलं करुणापूर्णे मङ्गलं भाग्यदायिनि ।
मङ्गलं श्रीमहालक्ष्मि मङ्गलं शुभमङ्गलम् ॥ ४५ ॥

अष्टकष्टहरे देवि अष्टभाग्यविवर्धिनि ।
मङ्गलं श्रीमहालक्ष्मि मङ्गलं शुभमङ्गलम् ॥ ४६ ॥

क्षीरोदधिसमुद्भूते विष्णुवक्षस्थलालये ।
मङ्गलं श्रीमहालक्ष्मि मङ्गलं शुभमङ्गलम् ॥ ४७ ॥

धनलक्ष्मि धान्यलक्ष्मि विद्यालक्ष्मि यशस्करि ।
मङ्गलं श्रीमहालक्ष्मि मङ्गलं शुभमङ्गलम् ॥ ४८ ॥

सिद्धलक्ष्मि मोक्षलक्ष्मि जयलक्ष्मि शुभङ्करि ।
मङ्गलं श्रीमहालक्ष्मि मङ्गलं शुभमङ्गलम् ॥ ४९ ॥

सन्तानलक्ष्मि श्रीलक्ष्मि गजलक्ष्मि हरिप्रिये ।
मङ्गलं श्रीमहालक्ष्मि मङ्गलं शुभमङ्गलम् ॥ ५० ॥

दारिद्र्यनाशिनि देवि कोल्हापुरनिवासिनि ।
मङ्गलं श्रीमहालक्ष्मि मङ्गलं शुभमङ्गलम् ॥ ५१ ॥

वरलक्ष्मि धैर्यलक्ष्मि श्रीषोडशभाग्यङ्करि ।
मङ्गलं श्रीमहालक्ष्मि मङ्गलं शुभमङ्गलम् ॥ ५२ ॥

मङ्गलं मङ्गलं नित्यं मङ्गलं जयमङ्गलं ।
मङ्गलं श्रीमहालक्ष्मि मङ्गलं शुभमङ्गलम् ॥ ५ ॥

किसी भी प्रकार के ज्योतिषीय संबंधित समाधान हेतू।

वास्तु अगर घर के किसी भी कोण में दोष है अर्थात दसों दिशाएं दूषित हे या किसी दो दिशाओं का दोष हे जो युवा पीढ़ी को नशे में धकेल देती है काम धंधे में मन नहीं लगता है मुखिया सट्टा करने लगता है या गलत आचरण में आ जाता है तो जटा मानसी और रक्त गुंजा का मिश्रण वास्तु मंत्रों से अभिमंत्रित करके घर के दरवाजे पर रखवा दे समाधान होगा।

दिल्ली के लिए प्लास्टिक कचरा बना मुसीबत, घटने के बजाय बढ़ता ही गया कूड़ों का पहाड़; DPCC की रिपोर्ट

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में प्लास्टिक कचरा एक गंभीर समस्या बन गया है। एक रिपोर्ट के अनुसार शहर में प्रतिदिन 12 टन अधिक प्लास्टिक कचरा उत्पन्न हो रहा है जिसमें से 23% का प्रबंधन नहीं हो पा रहा। दिल्ली में प्रतिदिन 1117 टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है जो कुल कचरे का 9 .8% है। प्रति व्यक्ति कचरा उत्पादन में दिल्ली पहले स्थान पर है जिससे प्रदूषण और जलभराव जैसी समस्याएं हो रही हैं।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के लिए प्लास्टिक कचरा मुसीबत बन गया है। कहने को एक जुलाई 2022 से देशभर में सिंगल यूज प्लास्टिक के 19 उत्पादों पर प्रतिबंध लग चुका है, लेकिन प्रशासनिक अनदेखी के चलते दिल्ली में कहीं इस प्रतिबंध का असर नजर ही नहीं आ रहा।

आलम यह है कि दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) की रिपोर्ट के मुताबिक साल भर पहले की तुलना में दिल्ली अब हर दिन 12 टन प्लास्टिक कचरा ज्यादा पैदा कर रही है। परेशानी की बात यह है कि इस प्लास्टिक कचरे का 23 प्रतिशत से भी बड़ा हिस्सा ऐसा है जिसका प्रबंधन नहीं हो पाता।

क्या कहती है डीपीसीसी की रिपोर्ट

डीपीसीसी की अप्रैल 2025 की रिपोर्ट बताती है कि दिल्ली में हर दिन 1117 टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। इसकी तुलना अगर जून 2024 की डीपीसीसी रिपोर्ट के सकें तो उस समय तक हर दिन 1105 टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता था। यानी साल भर में दिल्ली हर दिन 12 टन कचरा पहले से ज्यादा पैदा करने लगी है। अगर इस आंकड़े को साल भर के लिए देखें पहले की तुलना में अब चार हजार 380 टन प्लास्टिक कचरा ज्यादा पैदा हो रहा है।

23 प्रतिशत प्लास्टिक कचरे कस नहीं हो रहा प्रबंधन

डीपीसीसी की रिपोर्ट के मुताबिक 1117 टन प्लास्टिक कचरे में से 858 टन यानी 76.8 प्रतिशत कचरा प्रोसेस कर लिया जाता है। जबकि 259 टन यानी लगभग 23.2 प्रतिशत कचरा ऐसा है जिसका प्रबंधन नहीं हो पाता।

कुल कचरे का नौ प्रतिशत है प्लास्टिक कचरा

डीपीसीसी की रिपोर्ट बताती है कि दिल्ली में हर दिन 11342 (टीपीडी) टन ठोस कचरा पैदा होता है। प्लास्टिक कचरे की हिस्सेदारी इसमें से 9.8 प्रतिशत की है।

प्लास्टिक कचरा पैदा करने में पहले नंबर पर दिल्ली

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की एक रिपोर्ट बताती है कि देश में प्रति व्यक्ति प्लास्टिक कचरा पैदा करने में दिल्ली पहले नंबर पर है। यहां पर हर व्यक्ति सालाना औसतन 14 किग्रा प्लास्टिक कचरा पैदा करता है।दिल्ली के बाद गोवा दूसरे नंबर और तेलंगाना तीसरे नंबर पर है।

प्लास्टिक कचरे से होती हैं ये परेशानियां

प्लास्टिक कचरा जलाने से दिल्ली की हवा जहरीली होती है।

प्लास्टिक कचरा नालियों-नालों को जाम कर देता है, जिससे लोगों को जलभराव का सामना करना पड़ता है।

प्लास्टिक कचरा धीरे-धीरे टूटकर नैनो प्लास्टिक कणों में बदल जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए ज्यादा हानिकारक होते हैं।

नैनो प्लास्टिक कण नदियों और जलाशयों में चले जाते हैं, जिससे जलीय जीवन भी संकट में पड़ जाता है।

प्लास्टिक कचरे पर एक नजर

समय अवधि	कुल कचरा उत्पन्न (टीपीडी)	प्रबंधित कचरा (टीपीडी)	प्रबंधित कचरा (%)	अप्रबंधित कचरा (टीपीडी)	अप्रबंधित कचरा (%)
जून 2024	1105	858	77.6%	247	22.4%
अप्रैल 2025	1117	858	76.8%	259	23.2%

सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रतिबंधित उत्पाद

स्ट्रा, इयरबड्स, गुब्बारों में लगने वाली प्लास्टिक की स्टिक, सजावट में इस्तेमाल होने वाला थर्माकोल, आइसक्रीम स्टिक, कैंडी स्टिक, कप, झंडे, चाकू-छुरी, ट्रे, मिठाई के डिब्बे, शादी के कार्ड पर इस्तेमाल होने वाली शीट, मिठाई के डिब्बे पर इस्तेमाल होने वाली शीट, सिगरेट के पैकेट पर लगी पन्नी।

पूर्ववर्ती आप सरकार ने सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध के केंद्र सरकार के निर्णय को गंभीरता से नहीं लिया। इसीलिए आज भी न केवल इसके सभी उत्पाद प्रचलन में हैं बल्कि प्लास्टिक कचरा भी कम होने के बजाए बढ़ा रहे हैं। नई सरकार पर्यावरण संरक्षण के प्रति गंभीर है। भविष्य में इस दिशा में भी अपेक्षित सुधार देखने को मिलेगा। - डॉ. अनिल गुप्ता, सदस्य, डीपीसीसी

दोपहिया वाहन चालकों के लिए अच्छी खबर, अब देश भर में बनेगी अलग लेन; मौतों में आएगी 25 फीसदी की कमी

सड़क दुर्घटनाओं में दोपहिया वाहन चालकों की बढ़ती मौतों को कम करने के लिए भारत में अलग लेन बनाने की तैयारी है। सीएसआईआर के अनुसार इससे मौतों में 25% तक कमी आ सकती है। इंडियन रोड कांग्रेस सम्मेलन में इसका ड्राफ्ट जारी होगा। विशेषज्ञों ने सड़क सुरक्षा को मूक महामारी बताते हुए हेलमेट के उपयोग को बढ़ावा देने और सुरक्षित सड़क मानकों पर जोर दिया।

नई दिल्ली। सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली दोपहिया चालकों की मौत का आंकड़ा कम करने को देश भर में अलग लेन बनाने की तैयारी शुरू हो गई है। मलेशिया व वियतनाम की तर्ज पर इस लेन में केवल दोपहिया ही चलेंगे। माना जा रहा है कि इससे दोपहिया चालकों की मौतों के मामले में 25 प्रतिशत तक की कमी आ जाएगी।

सीएसआइआर (केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान) के निदेशक डॉ. मनोरंजन परिदा ने जागरण से बातचीत में बताया कि 2024 के दौरान भारत में लगभग 1.80 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में काल का ग्रास बन गए थे। चौंकाने वाला तथ्य यह कि इनमें दोपहिया वाहन चालकों की मौत का आंकड़ा कुल मौतों का लगभग 60 प्रतिशत यानी करीब एक लाख था।

सड़क की डिजाइनिंग भी तकनीकी रूप से बेहतर होगी

परिदा ने बताया कि बड़े वाहनों की चपेट में आने से दोपहिया चालकों का संतुलन बिगड़ जाता है। अगर उनके लिए अलग लेन होगी एवं सड़क की डिजाइनिंग भी तकनीकी रूप से बेहतर होगी तो इस स्थिति में काफी सुधार संभव होगा।

परिदा ने बताया कि 20 जून को इंडियन रोड कांग्रेस के अर्धवार्षिक सम्मेलन में इस अलग लेन का ड्राफ्ट जारी होगा। इसके बाद सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय सहित अन्य संबंधित मंत्रालयों के सहयोग से आगे की प्रक्रिया पर काम शुरू किया जाएगा।

परिदा बृहस्पतिवार को टीआरएएक्स एस सोसाइटी द्वारा नोवोटेल सिटी सेंटर में आयोजित 'डायलॉग टू एक्शनः नेशनल समिट ऑन वल्नरेबल रोड यूजर्स (वीआरयू) एंड रोड सेफ्टी' में शामिल होने आए थे। इस सम्मेलन में भारत में बढ़ते सड़क सुरक्षा संकट को दूर करने के लिए विशेषज्ञ, नीति निर्माता, गैर सरकारी संगठनों, उद्योग जगत के अधिकारी एक साथ आए।

सड़क सुरक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत जेन टोड ने सड़क दुर्घटनाओं को ₹मूक महामारी₹ करार दिया। उन्होंने पैदल चलने वालों, साइकिल चालकों और मोटरसाइकिल चालकों जैसे असुरक्षित सड़क उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया।

सड़क सुरक्षा का मुद्दा बहुत महत्वपूर्णः अजय टम्टा

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के राज्यमंत्री अजय टम्टा ने अपने वीडियो संदेश में कहा कि सड़क सुरक्षा का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण है। हमें इन दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को कम करने के सुझावों पर काम करना चाहिए। हमारा ध्यान सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को शून्य तक लाने पर होना चाहिए।

नीति आयोग के उप सलाहकार अमित भारद्वाज ने कहा, 2010 में हमारे पास 70,000 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग थे। यह अब दोगुना हो गया है। दोपहिया वाहनों की संख्या में भी पिछले 10 वर्षों में काफी वृद्धि हुई है। बाइक सवारों को अपनी बाइक छोड़ते समय हेलमेट ले जाने में मुश्किल होती है।

बाइक सवार द्वारा हेलमेट का उपयोग नहीं करने का एक कारण बाइक का खराब इंजीनियरिंग डिजाइन भी हो सकता है। भारद्वाज ने सख्त प्रवर्तन की आवश्यकता पर जोर दिया- जैसे पेट्रोल पंप मालिकों द्वारा बिना हेलमेट वाले सवारों को ईंधन देने से इनकार करना।

हमारे पास सुरक्षित सड़क मानकों और उचित प्रवर्तन की कमी

डब्ल्यूएचओ के डॉ बी मोहम्मद अशील का कहना था कि भारत के पास कागज पर सबसे अच्छे सड़क सुरक्षा नियम हैं। लेकिन सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली मौतें संक्रामक रोगों से दोगुनी हैं। टीआरएएक्स एस सोसाइटी के संस्थापक अध्यक्ष अनुराग कुलश्रेष्ठ ने सुरक्षित सड़कों की तत्काल आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा, हमारे पास सुरक्षित सड़क मानकों और उचित प्रवर्तन की कमी है।

स्टीलबर्ड हाई-टेक प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक राजीव कपूर ने कहा, ₹95 प्रतिशतज हेलमेट लाइसेंस धारक नकली हेलमेट का उत्पादन कर रहे हैं। हमें एक उचित नीति रोडमैप की आवश्यकता है। भारत को 13 करोड़ मानक हेलमेट की आवश्यकता है। संगठित उद्योग द्वारा केवल तीन करोड़ का उत्पादन किया जाता है। उन्होंने सड़क दुर्घटना संरक्षण के निमित्त ₹मिशन 2.0₹ भी लांच किया।

गैर सरकारी संगठनों का समर्थन करने के लिए तैयार

भारतीय मानक ब्यूरो के निदेशक मित्र सेन वर्मा ने कहा, हम सड़क सुरक्षा के लिए काम करने वाले गैर सरकारी संगठनों का समर्थन करने के लिए तैयार हैं। अगर हमें जानकारी मिलती है तो हम नकली हेलमेट निर्माण इकाइयों पर छापा मार सकते हैं। वहीं सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के सलाहकार महाराज सिंह ने कहा कि ₹केंद्र सरकार कानून बना सकती है, लेकिन मजबूत प्रवर्तन राज्यों से ही आना चाहिए।

यह तो किसी साइंस फिक्शन फिल्म से कम नहीं! एक चीनी सर्जन ने 8,000 किलोमीटर दूर मौजूद एक मरीज़ का ऑपरेशन किया — और वो भी 100% सफल रहा...

दुनिया में पहली बार ऐसा कुछ हुआ है। चीनी सर्जन डॉ. झांग जु (Zhang Xu) ने इटली के रोम में बैठकर एक कैंसर पीड़ित मरीज़ का ऑपरेशन किया, जबकि वह मरीज़ उस समय चीन की राजधानी बीजिंग में था।

डॉक्टर और मरीज़ के बीच एक 5G-पावर्ड सर्जिकल रोबोट के ज़रिए कनेक्शन स्थापित किया गया। यह लगभग रीयल-टाइम में काम कर रहा था। इसमें सिर्फ 135 मिलीसेकंड की देरी थी — जो पलक झपकने से भी तेज़ है।

इस टेली-सर्जरी को एक ग्लोबल मेडिकल कॉन्फ्रेंस में लाइव दिखाया गया। एक पूरे महाद्वीप की दूरी होने के बावजूद, रोबोट ने डॉ. झांग की हर एक हरकत को हूबहू दोहराया। यह दृश्य सभी को चकित कर देने वाला था।

बता दें कि चीन की रोबोट टेक्नोलॉजी आज इतनी विकसित हो चुकी है कि फैक्ट्री में उत्पादन से लेकर आम जिंदगी के कई कामों में भी इसका इस्तेमाल एक क्रांति ला चुका है।

डॉ. झांग और उनकी टीम ने इस ऑपरेशन के जरिए इतिहास रच दिया। उन्होंने साबित कर दिया कि अगर इंसानी कौशल के साथ सही तकनीक और संचार को जोड़ा जाए, तो चमत्कार मुमकिन हैं।

यह टेली-सर्जरी हमें उम्मीद देती है — शायद भविष्य में इलाज के लिए सरहदें कभी बाधा नहीं बनेंगी।

देखते हैं, वक्त हमें और किन चमत्कारों की ओर ले जाता है!

हम आपका ध्यान रोहिणी सैक्टर-11, केएनके मार्ग स्थित पूरक नाला सेतु (नजफगढ़ ड्रेन) से भगवान महावीर मार्ग, सैक्टर-25 स्थित इस्कॉन मंदिर की ओर जा रहे निरीक्षण रोड़ की ओर आकर्षित करना चाहते हैं जिस पर दिल्ली जल बोर्ड का मलजल उपचार संयंत्र स्थित है।

इस उपचार संयंत्र के एक ओर सैक्टर-25 व दूसरी ओर नाले की सड़क उपर्युक्त निरीक्षण सड़क है जिसके बीच की दूरी लगभग 100-150 मीटर है जहाँ पूर्व समय में वाहनों के आवागमन का विकल्प उपलब्ध था जोकि वर्तमान समय में झाड़-फूँस आदि से बाधित है।

वर्तमान समय में नाला निरीक्षण मार्ग से होकर छोटे वाहन (LMV) केएनके मार्ग व भगवान महावीर मार्ग के बीच आवागमन कर रहे हैं जबकि सैक्टर-11 की ओर से आकर सैक्टर-25 में प्रवेश के लिए वाहनों को भगवान महावीर मार्ग जाकर रिठाला मैट्रो स्टेशन की ओर बाएं मुड़कर नाला सेतु पार कर यू-टर्न लेकर वापिस आकर दाएं मुड़ना पड़ रहा है जोकि अत्यधिक असुविधाजनक व समय लेने वाला मार्ग/रूट है। इस असुविधाजनक रूट समय नष्ट होने से बचने के लिए सैक्टर-25 की ओर बढ़ रहे वाहन नाला निरीक्षण मार्ग से आकर भगवान महावीर मार्ग पर पहुँचते ही दाईं ओर सर्विस लेन में सीएनजी स्टेशन की ओर वाहनों के प्रवाह की विपरीत दिशा (wrong side) में मुड़ जाते हैं। सर्विस लेन में भले ही वाहनों की संख्या व गति कम हो किंतु विपरीत दिशा में गमन से वाहन सवारों को असुविधा होती है व सड़क सुरक्षा प्रभावित रहती है।

उपर्युक्त व समरूप समस्याओं से बचने के लिए सैक्टर-25 स्थित दिल्ली जल बोर्ड मलजल उपचार संयंत्र के सैक्टर-25 छोर व नाले की ओर छोर के बीच लगभग 100-150 मीटर सड़क मार्ग पुनर्स्थापित किए जाने का सुझाव सह निवेदन विनम्रतापूर्वक प्रस्तुत है महोदय। प्रस्तावित मार्ग व आसपास के क्षेत्र का बुनियादी नक्शा संलग्न है।

विनम्र निवेदन है कि यातायात पुलिस व दिल्ली विकास प्राधिकरण आदि विभागों के संबंधित अधिकारीगणों को इस सुझाव सह निवेदन पर अविलंब विचार कर प्रस्तावित मार्ग को पुनर्स्थापित करने हेतु आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने की सलाह जारी करें महोदय।

हम आपके आभारी रहेंगे।

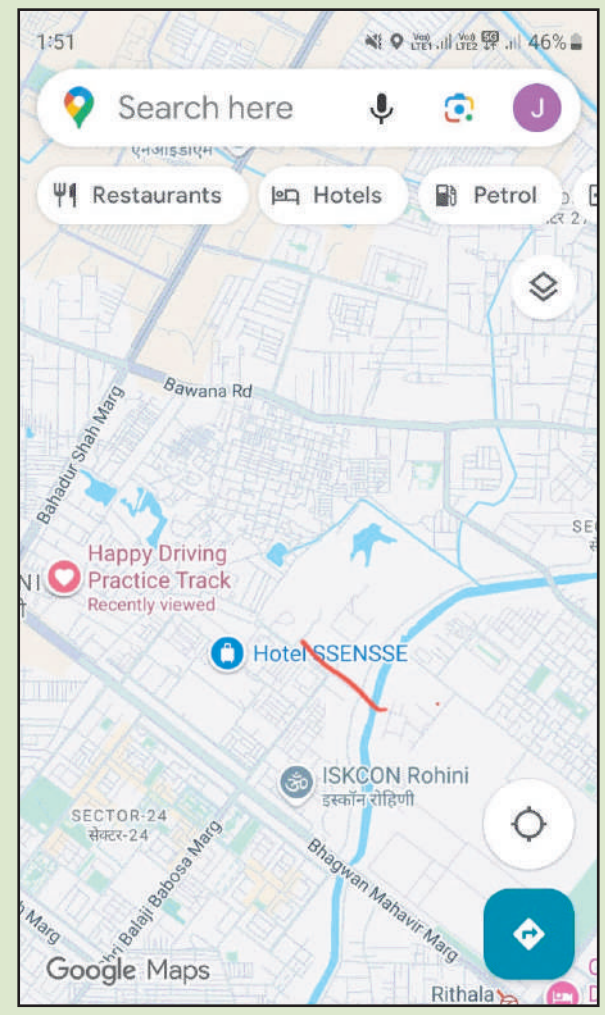

रिश्तों का एटीएम: जब प्यार केवल ट्रांज़ैक्शन बन जाए

रिश्ते अब महज़ ज़रूरतों के एटीएम बनते जा रहे हैं। डिजिटल दुनिया ने संवाद को 'रीचार्ज पैकेज' और मुलाक़ातों को 'होम-डिलीवरी' में बदल दिया है। दिलचस्पी कम होते ही लगाव की नींव दरकने लगती है—माँ-बेटे के फ़ोन-कॉल में 'ऑर्डर डिलिवर्ड' का नोटिफ़िकेशन रह जाता है, दोस्ती 'वीडियो क्लिप फ़ॉरवर्ड' तक सिमट जाती है, और दाम्पत्य 'शॉपिंग-लिस्ट' में उलझ जाता है। यह लेख बताता है कि क्यों रिश्ते औपचारिकता के जाल में फँसते हैं, इसके नतीजे क्या हैं, और दिलचस्पी को फिर से जीवित रखने के व्यावहारिक, संवेदनशील उपाय कौन-से हैं—ताकि प्यार अनलिमिटेड रहे, केवल टॉप-अप नहीं।

डॉ सत्यवान सौरभ

पिछली सदी में साइकिल की घंटी, साँझ की चौपाल, या आँगन का पीपल रिश्तों की धड़कन थे। किसी के दरवाज़े पर दो बार दस्तक हुई तो मतलब साफ़ था—चाय पकाओ, गपशप होने वाली है। आज दरवाज़ा कम बजता है, मोबाइल ज़्यादा। और मोबाइल भी कई बार हाथ में नहीं, डाइनिंग-टेबल पर पड़ा-पड़ा नोटिफ़िकेशन बजाता है—"पैकेज आउट फ़ॉर डिलिवरी।"

हमारी दिनचर्या इतनी एप-आधारित हो चुकी है कि रिश्ते भी 'ऑन-डिमांड सर्विस' जैसा अनुभव देने लगे हैं। माँ की याद तब आती है जब 'घर का अचार' ख़त्म हो जाता है; भाई का नाम फोन-बुक में तभी स्क्रोल होता है जब ट्रैफ़िक चालान से बचने के लिए किसी कनेक्शन की दरकार होती है; कॉलेज के दोस्त तभी पिंग करते हैं जब उन्हें किसी रेफ़रेंस लेटर की ज़रूरत पड़ती है। "दिलचस्पी" दिन-दहाड़े ग़ायब हो चुकी है, और हमने गुमशुदगी की रिपोर्ट भी नहीं लिखवाई; क्यों? क्योंकि हमारी ज़रूरतें आराम से पूरी हो रही हैं।

ज़रूरत और दिलचस्पी का द्वंद्व

ज़रूरतें बुरी नहीं हैं। पानी, भोजन, सुरक्षा, सहारा—ये सब एक बुनियादी सच हैं। समस्या तब शुरू होती है जब रिश्तों की पूरी परिभाषा ही ज़रूरतों पर टिक जाती है। प्यार, आदर, साझा हँसी, बेवजह के मेसेज—ये सब 'लक्सरी आइटम' माने जाने लगते हैं। नतीजा? संवाद सूखता है, उत्साह मुरझाता है, और रिश्ता अपनी ही परछाईं ढोता रहता है।

"कैसे हो?" का जवाब कभी ताल्लुक निभाने के लिए था; अब यह कस्टमर-केयर का स्क्रिप्टेड सवाल लगने लगा है। जोश, जिज्ञासा और जुड़ाव, एक-एक कर सिकुड़ते हैं। दिलचस्पी 'टॉप-अप' की तरह है—समय-समय पर न हो तो सर्विस बंद। पर हम अकसर इसे भूल जाते हैं और फिर हैरान होते हैं कि नेटवर्क क्यों नहीं आ रहा।

आधुनिकता के चार कड़वे साइड-इफ़ेक्ट

1. डिजिटल पुल और भावनात्मक दूरी

हम 'कनेक्टेड' तो हैं, पर 'क्लोज़' नहीं। विडंबना देखिए—वीडियो-कॉल करते हुए भी हम आँखों में आँखें नहीं देख पाते, क्योंकि कैमरा स्क्रीन के ठीक बगल में है।

2. समय का निवेश नहीं, आउटसोर्सिंग का चलन

जन्मदिन का केक, सालगिरह का तोहफ़ा, माँ के घुटनों की दवाई—सब 'एप सेकेंड' में बुक। व्यक्तिगत श्रम की जगह 'प्रोसेस्ड केयर' ने ली; एहसान की जगह 'ट्रैकिंग आईडी'।

3. पर्सनल ब्रांडिंग का दबाव

रिश्ते अब फ़ोटो-फ्रेंडली मोमेंट्स का कोलाज हैं। रीयलिटी में खिलखिलाना कम है, सोशल फ़ीड में 'स्टोरी' ज़्यादा। हर मुलाक़ात एक संभावित पोस्ट है—और पोस्ट अगर लाइक्स न बटोर पाए तो दोस्ती में भी 'कंटेंट वैल्यू' कम आँकी जाती है।

4. उपभोक्तावाद का शोर

मार्केटिंग ने हमें सिखाया—संतुष्टि ख़रीदी जा सकती है। नतीजे में हम रिश्तों से भी रिटर्न-ऑन-इन्वेस्टमेंट चाहने लगे: "मैंने दादी को विंटर जैकेट भेजा, बदले में वीडियो कॉल तक नहीं मिला।" जैसे स्नेह कोई कैश-बैक स्कीम हो।

समाजशास्त्रीय नज़रिया

समाजशास्त्री बताते हैं कि औद्योगिक क्रांति से लेकर आईटी क्रांति तक, जैसे-जैसे जॉइंट फ़ैमिली से न्यूक्लियर फ़ैमिली की ओर झुकाव बढ़ा, ज़िम्मेदारियाँ तो विभाजित हुईं पर समर्थन-तंत्र भी बिखर गया। अब हर इकाई अपने दम पर दौड़ रही है, इसलिए "सर्वाइवल" सर्वोच्च प्राथमिकता बन गया। दिलचस्पी एक 'नॉन-एसेंशियल अमीनीटी' की तरह अंत में जुड़ती है, अगर शक्ति और समय बचा तो।

मानसिक स्वास्थ्य पर असर

इंसान सामाजिक प्राणी है—यह पाठ चौथी कक्षा की किताब में पढ़ाया जाता है, पर समाज की चकाचौंध में अक्सर छूट जाता है कि भावनात्मक संबंध ऑक्सीजन की तरह हैं। लगातार "फ़ंक्शनल" रिश्ते (जहाँ बस लेन-देन हो) अवसाद, तनाव, और एकाकीपन को बढ़ाते हैं। शेयर मार्केट की भाषा में कहें तो "इमोशनल डिविडेंड" गिरने लगता है, और इनसानी 'निवेशक' धीरे-धीरे हताश हो जाता है।

दिलचस्पी बचाने के पाँच व्यावहारिक मंत्र

1. शारीरिक उपस्थिति का महत्व

महीने में कम से कम एक बार बिना किसी 'कारण' के मिलने जाएँ। डिजिटल मीटिंग काम की है, पर 'अनप्लग्ड' साथ का स्वाद कुछ और होता है।

2. अनुस्मृति के छोटे बीज

पुराने फ़ोटो प्रिंट कर फ्रिज पर लगाएँ, हाथ से लिखे नोट्स भेजें। टच का स्पर्श हमेशा स्क्रीन से गहरा होता है।

3. साझा अनुष्ठान बनाएँ

चाहे रविवार की दोपहर की खिचड़ी हो या हर पूर्णिमा पर चाँद देखना—एक छोटा-सा रिवाज़ रिश्ते का 'रिकरिंग डिपॉज़िट' है।

4. डिजिटल डिटॉक्स स्लॉट

परिवार या मित्रों के साथ जब भी हों, फोन 'डिस्टर्ब' मोड में डालें। पाँच में से दो मुलाक़ातें भी यूँ हो जाएँ तो दिलचस्पी की बैटरी चार्ज रहती है।

5. शब्दों का आदान-प्रदान

"मुझे तुम पर गर्व है", "आज तुम्हारी याद आई", "चलो पुराने गाने सुनते हैं"—ऐसे वाक्य बोनस अंक देते हैं। ज़रूरी नहीं कि मुद्दा भारी-भरकम हो; भावना हल्की-सी हो पर ईमानदार हो।

व्यंग्य के सहारे सत्य

कल्पना कीजिए, अगर रिश्तों का भी 'यूज़र अग्रीमेंट' होता:

> "मैं, फलाँ-फलाँ, यह स्वीकार करता/करती हूँ कि मैं केवल अपने लाभ के लिए आपको याद करूँगा/करूँगी; अगर दिलचस्पी घटे तो 'अनसब्स्क्राइब' कर दूँगा/दूँगी; और शिकायत करने पर 'कस्टमर सपोर्ट' को ई-मेल करूँगा।"

सुनने में हास्यास्पद लग सकता है, पर व्यवहार में हम अक्सर यही तो करते हैं! ग़ुस्सा आए तो 'ब्लॉक'; हँसी आए तो 'रिएक्ट'; उदासी आए तो 'म्यूट'। मानो इंसान नहीं, नोटिफ़िकेशन हों—जिन्हें स्लाइड करके साइड में किया जा सकता है।

निष्कर्ष: दिलचस्पी का पुनर्जन्म

रिश्ते खेत की मिट्टी जैसे हैं—नीम-हक़ीम पानी दो, बीज पनपेंगे; वरना बंजर हो जाएगा। आधुनिकता की रफ्तार हमें मुट्ठी-भर समय भी नहीं छोड़ती, पर उसी मुट्ठी में कुछ बीजों की ज़रूरत है।

जब अगली बार आप किसी प्रियजन का नंबर डायल करें, सोचें—क्या मैं केवल मदद माँगने जा रहा हूँ? अगर हाँ, तो कॉल से पहले एक साधारण-सा मैसेज भी जोड़ दें—"तुम्हारी हँसी याद आई।" हो सकता है, ऐसे छोटे-से वाक्य से बातचीत का पूरा मौसम बदल जाए।

रिश्तों की दुकान में दिलचस्पी कीमत नहीं, करंसी है। अगर वही ख़त्म हो जाए, तो सबसे महँगा तोहफ़ा भी ख़रीदा नहीं जा सकता। इसलिए आज ही थोड़ा निवेश दिलचस्पी में कीजिए; रिटर्न यक़ीनन इनफ़्लेशन-प्रूफ़ मिलेगा—प्यार, अपनापन, और वह अनकही मुस्कान जो स्क्रीन के इस पार भी महसूस होती है।

कहावत है—"घर वही जहाँ दिल हो।" पर दिल वहीं टिकता है जहाँ दिलचस्पी हो। ज़रूरतें पूरी कीजिए, पर उन्हें प्यार का 'ब्रेक-अप लेटर' बनने मत दीजिए। याद रखिए, रिश्तों का असली चार्जर दिलचस्पी ही है; वरना कनेक्शन 'नो-सर्विस' दिखाने लगता है—और तब, डेटा पैक बढ़ा कर भी सिग्नल नहीं आएगा।

रणनीतिक, तकनीकी, वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मिशन: एक्सियम-4

यह हमारे देश के लिए बहुत ही गौरव की बात है कि हमारा देश अंतरिक्ष के क्षेत्र में विश्व में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है और अब भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला एक्सियम-4 मिशन के तहत अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन यानी आईएसएस जा रहे हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार वे 14 दिनों के लिए अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में रहेंगे तथा अंतरिक्ष यान स्पेसएक्स रॉकेट के ज़रिए फ्लॉरिडा के नासा केनेडी स्पेस सेंटर से लॉन्च होगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि उनकी इस यात्रा की सफलता पर एक सौ चालीस करोड़ देशवासियों की नजरें टिकी हुई हैं।पाठकों को बताता चलूं कि इस कमर्शियल मिशन में पहली बार कोई भारतीय एस्ट्रोनॉट शामिल हो रहा है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार शुभांशु शुक्ला के साथ तीन और एस्ट्रोनॉट इस मिशन में भेजे जा रहे हैं और यह हमारे देश के लिए एक ऐतिहासिक पल होगा। ऐतिहासिक इसलिए क्यों कि 41 साल बाद हमारा एस्ट्रोनॉट अंतरिक्ष में जा रहा है। दरअसल, शुभांशु ऐसे दूसरे भारतीय हैं जो अंतरिक्ष यात्रा पर जा रहे हैं।बहरहाल,यहां पाठकों को बताता चलूं कि इससे पहले राकेश शर्मा पहले भारतीय थे, जो वर्ष 1984 में रूसी मिशन के तहत स्पेस में गए थे। पाठकों को बताता चलूं कि शुभांशु शुक्ला उत्तर प्रदेश के लखनऊ के रहने वाले हैं तथा उनकी स्कूलिंग लखनऊ के सिटी मॉन्टेसरी स्कूल, अलीगंज से हुई है। मीडिया में आई रिपोर्ट्स के अनुसार 17 जून 2006 को उनको भारतीय वायुसेना के फाइटर विंग में शामिल किया गया था तथा वह एक शानदार फाइटर पायलट और टेस्ट पायलट हैं। उनके पास 2,000 घंटे से ज्यादा का फ्लाइंग एक्सपीरियंस है।उन्होंने सुखोई-30 एमकेआइ, मिग-21, मिग-29, जगुआर, हॉक, डोर्नियर और एएन-32 जैसे कई फाइटर जेट्स उड़ाए हैं।मार्च 2024 में उन्हें ग्रुप कैप्टन की पोस्ट पर प्रमोट किया गया।वह एक फाइटर कॉम्बैट लीडर भी हैं। वर्ष 2019 में इसरो ने शुभांशु को भारत के पहले ह्यूमन स्पेस मिशन गगनयान के लिए चुना गया था। दरअसल इस मिशन के लिए क्रमशः चार एस्ट्रोनॉट्स शुभांशु शुक्ला, ग्रुप कैप्टन प्रशांत बालकृष्णन नायर, ग्रुप कैप्टन अजित कृष्णन और ग्रुप कैप्टन अंगद प्रताप को चुना गया था। गगनयान की तैयारी के लिए शुभांशु ने वर्ष 2019-2021 तक रूस के यूरी गागरिन कॉस्मोनॉट ट्रेनिंग सेंटर में सख्त ट्रेनिंग ली तथा इसके बाद 27 फरवरी 2024 को उनको एक्सिओम मिशन-4 के लिए ऑफिशियली चुना गया। बहरहाल, यहां यह उल्लेखनीय है कि यह अभियान पहले मई के आख़िरे हफ़्ते में जाना था, फिर इसे आठ जून को अंतरिक्ष स्टेशन की ओर रवाना होना था, लेकिन ख़राब मौसम की वजह से ये अभियान 11 जून को लॉन्च होने की संभावना थी। लेकिन जानकारी के अनुसार अब तकनीकी कारणों से इसे आगे के लिए टाल दिया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स बतातीं हैं कि एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला की आइएसएस यात्रा लिक्विड ऑक्सीजन लीक के कारण टल गई है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि यह मिशन एक्सियम स्पेस नाम की अमेरिकी कंपनी, नासा और स्पेस एक्स के साथ मिलकर ऑपरेट किया जा रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि नासा के अलावा इस मिशन में भारत के इसरो, पौलेंड के ईएसए और हंगरी के हंगेरियन टू ऑरबिट सहयोग दे रहे हैं। इसमें चार अंतरिक्ष यात्री शामिल हैं। मिशन कमांडर हैं- अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री पैगी व्हिटसन जिन्हें पांच बार अंतरिक्ष यात्रा का अनुभव प्राप्त है। वास्तव में, एक्सियम-4 मिशन एक कमर्शियल स्पेस

फ़्लाइट है तथा ह्यूस्टन की कंपनी एक्सियम स्पेस इस अभियान को चला रही है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारत ने इस मिशन के लिए 550 करोड़ रुपये की कीमत चुकाई है। पाठकों को बताता चलूं कि एक्सिमय-4 मिशन को भारत के गगनयान अभियान के लिहाज़ से अहम बताया जा रहा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि इस मिशन से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को अपने मानव मिशन(गगनयान मिशन) की दिशा में मदद मिल सकेगी। गौरतलब है कि गगनयान मिशन भारत का अपना पहला स्वदेशी मानव मिशन है, जिसमें एक भारतीय को भारतीय रॉकेट के ज़रिए श्रीहरिकोटा स्टेशन से, यदि सबकुछ ठीक रहा तो, वर्ष 2027 में अंतरिक्ष भेजा जाएगा। वास्तव में वर्तमान में जो मिशन अंतरिक्ष में भेजा जाना है,वह एक प्रकार से गगनयान मिशन की ओर छोटे-छोटे कदम बढ़ाने जैसा है, क्यों कि इस मिशन से भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को बहुत कुछ सीखने की उम्मीदें हैं। जानकारी के अनुसार इसरो के पास अभी तक ह्यूमन स्पेस फ़्लाइट का अनुभव नहीं है। जैसा कि मानव मिशन एक मुश्किल व चुनौतीभरा काम है, ऐसे में इस मिशन से हमें अंतरिक्ष के क्षेत्र में फायदे मिल सकेंगे ऐसी उम्मीदें जताई जा रहीं हैं। जानकारी के अनुसार इस मिशन में साइंस, आउटरीच और कमर्शियल एक्टिविटीज़ पर फ़ोकस होगा। शुभांशु शुक्ला समेत एक्सियम-4 की टीम बीज अंकुरण और अंतरिक्ष में पौधे कैसे उगते हैं, इस पर भी अध्ययन करेगी। वास्तव में अंतरिक्ष में लगभग ज़ीरो ग्रैविटी पर पौधे कैसे उगते हैं और इन पौधों में क्या विशेषताएं होंगी, ये भी जानने की कोशिश की इस मिशन के अंतर्गत की जाएगी। यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारत ने अंतरिक्ष में वहां से वापस आने वाले एस्ट्रो-बायोलॉजी के एक्सपेरिमेंट नहीं किए हैं। पहली बार ये होगा जब भारत कोई एक्सपेरिमेंट भेज जा रहा है, जो अंतरिक्ष से वापस भी आएंगे और यह भारत का इस क्षेत्र में पहला अभूतपूर्व कदम होगा। इस मिशन में करीब 60 साइंटिफ़िक एक्सपेरिमेंट किए जाने हैं, जो एक्सियम के पिछले तीन मिशनों में नहीं किए गए थे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि भारत के वैज्ञानिकों ने इनमें से सात एक्सपेरिमेंट का सुझाव दिया है। जानकारी के अनुसार सात के अलावा भी पांच ऐसे एक्सपेरिमेंट भी हैं जो इसरो और नासा मिलकर करेंगे। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज भारत अंतरिक्ष क्षेत्र में विश्व के बड़े देशों जैसे कि अमेरिका, रूस और चीन के समकक्ष एक बड़ी ताकत बनकर उभरा है। पाठक जानते हैं कि भारत अपने मंगल, चंद्र और आदित्य अभियानों को सफलतापूर्वक अंजाम दे चुका है। पाठकों को बताता चलूं कि भारत ने चंद्रयान-3 मिशन के तहत 23 अगस्त 2023 को चंद्रमा पर सफलतापूर्वक लैंडिंग की थी और यह मिशन चंद्रयान-1 और चंद्रयान-2 के बाद भारत का तीसरा चंद्र मिशन था। चंद्रयान-3 ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरकर एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की, जिससे भारत ऐसा करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया। इसी प्रकार से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो ने 6 जनवरी 2024 को देश के पहले सूर्य मिशन आदित्य एल-1 को पृथ्वी की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित किया था। बहरहाल, यदि आगे भी सब कुछ अच्छा चलता रहा, तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश भारत आने वाले दस सालों में यानी कि वर्ष 2035 तक अंतरिक्ष में अपना स्पेस स्टेशन स्थापित करने और वर्ष 2040 में चंद्रमा पर अपने अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने में सफल हो पाएगा। वास्तव में कहना ग़लत नहीं होगा कि आज पूरी दुनिया में इसरो की पहचान एक ऐसी स्पेस एजेंसी के रूप में बन चुकी है, जो बहुत कम खर्च में बड़ी सफलता हासिल कर सकती है। इसरो ने अब तक अनेक देशों के (30 से अधिक देशों) तीन सौ से भी ज्यादा विदेशी सैटेलाइटों को लांच किया है, जिनमें अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, जर्मनी और सिंगापुर जैसे देश भी शामिल रहे हैं। वर्तमान मिशन अंतरिक्ष के क्षेत्र में भावी रणनीतिक, तकनीकी, वैज्ञानिक प्रगति की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है।कहना ग़लत नहीं होगा कि आने वाले समय में हमारा इसरो अंतरिक्ष के क्षेत्र में और भी बड़े कीर्तिमान स्थापित करेगा और हम अंतरिक्ष के क्षेत्र में विश्व का सिरमौर देश होंगे।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 की धारा 19 की उपधारा 1 के तहत अपील करने का अधिकार

नरेश गुणपाल

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 की धारा 19 की उपधारा 1 के तहत, किसी भी व्यक्ति को जन सूचना अधिकारी या केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी के किसी निर्णय से असंतोष होने पर प्रथम अपीलीय प्राधिकारी को अपील करने का अधिकार है, यह अपील निर्णय प्राप्त होने के 30 दिनों के भीतर की जा सकती है या समय सीमा के भीतर निर्णय प्राप्त न होने की स्थिति में, समय सीमा समाप्त होने के 30 दिनों के भीतर, अपील उस अधिकारी को की जानी चाहिए जो संबंधित लोक प्राधिकरण में जन सूचना अधिकारी या केंद्रीय जन सूचना अधिकारी से अधिक वरिष्ठ है।

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के अंतर्गत धारा 19 में अपील का प्रावधान दिया गया है। किसी भी अधिकार को दिए जाते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक होता है कि यदि उस व्यक्ति को जिसे वह अधिकार दिया गया है अधिकार प्राप्त नहीं हो तब वे कहां और किसके समक्ष अपील कर सकता है और अपील का महत्व इसलिए भी है क्योंकि निचले स्तर से यदि कोई व्यक्ति व्यथित है तो उसे ऊपरी स्तर के अधिकारियों को इसका संज्ञान देकर न्याय प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए।

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 भारत के संविधान में उल्लेखित किए गए मौलिक अधिकारों में से एक

अधिकार है। इस मौलिक अधिकार को व्यवहार में लाने हेतु ही सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 का निर्माण किया गया है। इस अधिनियम में अपील का महत्वपूर्ण स्थान है यदि इस अधिनियम में अपील की व्यवस्था नहीं की जाती तो इस अधिनियम का कोई अर्थ नहीं रह जाता और सभी बातें एक कोरी स्वर्णिम कल्पना होकर रह जाती। इस उद्देश्य से इस अधिनियम की धारा 19 के अंतर्गत अपील को गढ़ा गया है तथा अपीलीय संबंधी प्रक्रिया को व्यवस्थित किया गया है। **अपील करने का अधिकार:-**

राज्य जन सूचना अधिकारी या केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी द्वारा पारित आदेश से व्यक्ति को अपील दाखिल करने का अधिकार है। यह आदेश मो० वारिस बनाम स्टेट ऑफ वेस्ट बंगाल ए आई आर 2011 (एस ओ सी) 138 (कलकत्ता) के मामले में दिया गया है। अपीलार्थी ने इन तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में कि चाही गई सूचना उसे प्रदत्त कर दी गई है अपील को वापस से लिया। इस परिस्थिति में प्रथम अपीलीय प्राधिकारी अपील से व्यवहार नहीं कर सकता और सूचना अधिकारी के विरुद्ध शास्ति अधिरोपित नहीं कर सकता।

नामित शर्मा बनाम भारत संघ, (2013) 1 एस सी सी 745 के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय ने प्राधिकारियों के कार्य की प्रकृति तथा अधिनियम की धारा 18, 19 और 20 पर विचार किया था और निम्न प्रकार से अभिनिर्धारित किया था:-

ऐसे अधिकरण से सार्वजनिक प्रत्याशा भी अधिक होती है। इन निकायों द्वारा सम्पन्न किये गये न्यायनिर्णायक कार्य गम्भीर प्रकृति के होते हैं। आयोग द्वारा पारित किया गया आदेश अन्तिम तथा बाध्यकारी होता है और उसे संविधान के क्रमशः अनुच्छेद 226 अथवा अनुच्छेद 32 के अधीन न्यायालय की अधिकारिता के प्रयोग में केवल उच्च न्यायालय अथवा उच्चतम न्यायालय के समक्ष ही प्रश्नगत किया जा सकता है।

इस प्रकार विधि की अपेक्षा, विधिक प्रक्रिया तथा संरक्षण प्रकट रूप से आवश्यक होंगे। आयोग द्वारा अर्द्धन्यायिक विवेकाधिकार का सबसे अच्छा प्रयोग संविधान के अनुच्छेद 21 के अधीन अन्तर्निहित संरक्षणों के विरुद्ध संविधान के अनुच्छेद 19 के अधीन मान्यता प्राप्त सूचना के अधिकार को सुनिश्चित करना तथा प्रभावी बनाना है।

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के प्रावधानों के अधीन सम्बद्ध प्राधिकारियों द्वारा शक्तियों का प्रयोग तथा आदेशों को पारित करना मनमाना नहीं हो सकता है। इसे नैसर्गिक न्याय के सिद्धान्त तथा ऐसे प्राधिकारी द्वारा विकसित की गयी प्रक्रिया के अनुरूप होना है। नैसर्गिक न्याय के तीन अपरिहार्य पक्ष होते हैं, अर्थात सूचना प्रदान करना, सुनवाई करना तथा कारणयुक्त आदेश पारित करना। इसे विवादित नहीं किया जा सकता है कि सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के अधीन प्राधिकारीगण तथा अधिकरण अर्द्धन्यायिक कार्यों का निर्वहन कर रहे हैं।

नैसर्गिक न्याय के तीन अपरिहार्य पक्ष होते हैं, अर्थात् सूचना प्रदान करना, सुनवाई करना तथा कारणयुक्त आदेश पारित करना। इसे विवादित नहीं किया जा सकता है कि सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के अधीन प्राधिकारीगण तथा अधिकरण अर्द्धन्यायिक कार्यों का निर्वहन कर रहे हैं।

कानपुर में दुष्कर्म और हत्या के प्रयास का आरोपी पुलिस से मुठभेड़ में गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। दुष्कर्म और हत्या का प्रयास करने के आरोपी को पुलिस ने मुठभेड़ के दौरान पैर में गोली मार कर गिरफ्तार कर लिया। घटना घाटमपुर थाना क्षेत्र की है पुलिस के अनुसार आरोपी ने इस घटना को छह साल की मासूम के साथ अंजाम दिया था। फरार होने की दशा में पुलिस उसकी तलाश लगातार कर रही थी।

पुलिस के मुताबिक वह रामसारी से चीनी मिल को जाने वाली रोड पर जंगल में छिपा था। पुलिस के पहुंचते ही उसने फायर झोंका जो पुलिस की गाड़ी में लगा। पुलिस के

जवाबी फायर में आरोपित के पैर में गोली लगी। उसे अस्पताल पहुंचाया गया है।

अवगत कराते चलें कि विगत दिवस नगर के एक मुहल्ला निवासी ई-रिक्शा मिस्त्री की छह साल की मासूम बेटी मंगलवार शाम को लहूलुहान हालत में मिली थी। मासूम की मां ने पड़ोस में रहने वाले 28 वर्षीय शिवम उर्फ कल्लू पर बेटी से दुष्कर्म करने और ईंट से सिर कूंचकर जान से मारने की कोशिश करने का आरोप लगाया था। कल्लू ने मुहल्ला स्थित एक मजार के पीछे घटना को अंजाम दिया था। घर वालों ने मासूम को जब खोजना शुरू किया तो पहले कल्लू ने उसे न देखने की बात कही। थोड़ी ही देर में मजार के पीछे से खून से लथपथ मासूम को गोद में लेकर आ गया। आनन-फानन में उसे घाटमपुर सीएचसी पहुंचाया गया। जहां से उसे कानपुर रेफर कर दिया गया। जहां उसकी हालत अभी भी गंभीर बनी हुई है।

बदायूं के जिला अस्पताल पुरुष में तीमारदार अपने मरीज का स्टेचर खींचने को मजबूर

जिला अस्पताल के फोर्थ क्लॉस कर्मचारियों को किसी का भय नहीं। तस्वीरें में साफ देखा जा सकता है कि मरीज का स्टेचर तीमारदार खींच रहा है।

जबकि अगर मरीज को कहीं लेजाना होता है तो वार्डबॉय स्टेचर से लेकर जाना चाहिए।

जिला अस्पताल में वार्डवाय हर रोड मस्ती में चूर रहने है मरीज चाहे कहीं भी जाए।

जिला अस्पताल के वार्ड वायर मरीज

के तीमारदारों में हावी हैं।

जिला अस्पताल पुरुष में ये नजारा देखने को मिला है।

तस्वीरें अपने आप में खुद एक भयाभय है, जो मरीज का स्टेचर तीमारदार खींच रहे हैं।

भारत के हर शासकीय कार्यालय में रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार सत्ता का दुरुपयोग,कर्तव्यों की अवहेलना, भेदभाव उत्पीड़न की शिकायत, बिना निर्धारित प्रारूप में ज़रूरी

भ्रष्टाचार,सत्ता का दुरुपयोग, कर्तव्यों की अवहेलना से आम नागरिकों को स्वास्थ्य,शिक्षा, प्रशासन,न्याय व्यवस्था में परेशानी से तंग है तो आइए उनकी शिकायत की प्रक्रिया समझें-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर आज दुनियाँ का हरदेश भ्रष्टाचार सत्ता का दुरुपयोग,कर्तव्यों की अवहेलना, भेदभाव से नागरिकों का उत्पीड़न हो रहा है। हालांकि उपरोक्त सभी उलेखित कर्मचारी अधिकारियों को सजा देने के लिए हर देश में कानून नियम विनियमन व्यवस्थाएं बनीं हुई हैं,परंतु हर प्रदेश की प्रक्रिया अलग-अलग हो सकती है,जबकि उद्देश्य एक ही है कि उन पदों पर बैठे हुए व्यक्तियों की यह दबंगई बंद होना चाहिए, व आम नागरिकों के हित व सेवा में उनके द्वारा अपनी सेवाओं को समर्पित रखना चाहिए, जिसके लिए आम जनता के पास सबसे बड़ा हथियार उनकी शिकायत करना है, ताकि शासन के अति उच्च पदों पर बैठे जनता के प्रति जवाबदेह उनपर कार्रवाई कर सके, परंतु अनेकों विभागों में शिकायतों क़े निर्धारित प्रारूप बनाया गया है, जो पीड़ितों के लिए परेशानी का सबक बन गए है, जिसके लिए वे शिकायतें नहीं कर पाते और शिकायत करने में उनका संबंधित कर्मचारी सहयोग करते हैं।इस विषय परआज हम चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि, भारत के भ्रष्टाचार रोधी निकाय लोकपाल ने हाल में कहा कि निर्धारित प्रारूप के बिना भ्रष्टाचार की शिकायतों पर विचार नहीं किया जाएगा। उन्होंने 5 जून 2025 के परिपत्र में कहा कि लोकपाल के पास अपने आदेशों की समीक्षा करने का अधिकार नहीं है। तथा विभागों में मुझे स्वयं भी फॉर्मेट में शिकायत की बात कही गई थी,चूँकि शासकीय प्रताड़ना से पीड़ित शिक्षित ग्रामीण भोली भाली जनता की शिकायतें बिना निर्धारित प्रारूप के खारिज हो जाती है, अधिकारी कर्मचारी उनका सहयोग नहीं करते, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत के हर शासकीय कार्यालयों में रिश्वतखोरी भ्रष्टाचार ,सत्ता का दुरुपयोग, कर्तव्यों की अवहेलना भेदभाव उत्पीड़न की शिकायतों को बिना निर्धारित प्रारूप में याने सादे कागजों पर भी करना जरूरी हो यदि हम भ्रष्टाचार व कर्तव्यों की अवहेलना इत्यादि बुराइयों से तंग है तो आइए उनकी शिकायतों की प्रक्रिया को बहुत गहराई से समझें।

साथियों बात अगर हम भ्रष्टाचार को समझने की करें तो, भ्रष्टाचार एक ऐसा अपराध है, जो हमारे देश को सामाजिक और आर्थिक रुप से बहुत नुकसान पहुँचाता है। कुछ लोग अपनी नाम व ताकत का गलत इस्तेमाल करके ऐसे अपराधों को बढ़ावा देते है, जिसके कारण देश के गरीब लोगों के साथ बहुत ही अन्याय होता है। आज यह समस्या इतनी बढ़ गई है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन, और न्याय व्यवस्था जैसी महत्वपूर्ण सेवाएं से जुड़े लोग भी भ्रष्ट हो गए है। जब तक हम इस समस्या को समझ नहीं पाएंगे, तब तक हम इसके खिलाफ लड़ाई नहीं लड़ सकते। इसलिए आज के लेख द्वारा हम इस विषय से जुडी पूरी जानकारी समझने की कोशिश करेंगे जैसे कि भारत में भ्रष्टाचार के खिलाफ कानून और भ्रष्टाचार की शिकायत दर्ज करने के कानूनी विकल्प क्या है? भ्रष्टाचार के अपराध में मिलने वाली सजा व कानूनी प्रावधान ?हर दिन हमें ऐसी खबरें देखने और सुनने को मिलती हैं जहां किसी सरकारी कर्मचारी ने रिश्वत ली, किसी ठेकेदार ने विकास परियोजनाओं में धोखाधड़ी की, या किसी उच्च अधिकारी ने अपनी शक्ति का गलत इस्तेमाल बहुत ही दबंगई के साथ किया।

साथियों बात अगर हम भ्रष्टाचार के खिलाफ कानूनी प्रावधानों व अधिकारों को समझने की करें तो,भ्रष्टाचार के खिलाफ शिकायत दर्ज करने के लिए कई कानूनी अधिकार और प्रावधान मौजूद हैं,आइये इन्हें आसान भाषा में जानते है:- (1) सूचना का अधिकार (आरटीआई) इसके अनुसार कोई भी व्यक्ति सरकारी विभागों से जानकारी मांगसकता है, और यदि उस जानकारी में भ्रष्टाचार के कोई भी सबूत मिलते हैं, तो ऐसे अपराधों को सभी के सामने लाया जा सकता है। हम आरटीआई आवेदन ऑनलाइन या ऑफलाइन जमा कर सकते हैं।आरटीआई दर्ज कराते समय बिल्कुल साफ व स्पष्ट तरीके से यह बताना होता है कि हम किस जानकारी के लिए सूचना का अधिकार का इस्तेमाल कर रहे हैं। (2)भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम,1988 भारतीय कानून का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य भ्रष्टाचार को रोकना और सरकारी कर्मचारियों द्वारा किए गए भ्रष्टाचार पर कड़ी कार्रवाई करना है। यह कानून कर्रप्शन के मामलों में दोषी अधिकारियों को दंडित करने के लिए बनाया गया है। इस अधिनियम के तहत सरकारी कर्मचारियों द्वारा रिश्वत लेने, घूस देने, या किसी अन्य प्रकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई की जाती है। (3) लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम 2013 के तहत भारत में भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए संस्थाएँ बनाई गई हैं। लोकपालः केंद्र सरकार के अधिकारियों, मंत्रियों और कर्मचारियों द्वारा किए गए भ्रष्टाचार की जांच करता है। लोकायुक्तः यह राज्य स्तर पर भ्रष्टाचार के मामलों की जांच करता है और राज्य सरकार के अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करता है। (4) व्हिसल ब्लोअर प्रोटेक्शन एक्ट 2014 का उद्देश्य उन व्यक्तियों की रक्षा करना है, जो सरकारी अधिकारियों या संस्थाओं द्वारा किए गए भ्रष्टाचार की जानकारी को देते है। ऐसे लोगों को आम भाषा में मुखबिर (यानि खबर देने वाला) कहा जाता है। इस कानून के द्वारा ऐसे मामलों की शिकायत करने वाले लोगों की सुरक्षा की जाती है, ताकि वे बिना किसी डर के शिकायत कर सकें।

साथियों बात अगर हम भ्रष्टाचार मामलों में शिकायत दर्ज करवाने की सरल प्रक्रिया को समझने की करें तो,अगर आपने किसी सरकारी अधिकारी को रिश्वत लेते हुए या गलत काम करते हुए देखा है, तो हम उस व्यक्ति के खिलाफ शिकायत दर्ज कर सकते हैं लोकायुक्त : लोकायुक्त राज्य स्तर पर भ्रष्टाचार की शिकायतों को सुनती है। अगर किसी राज्य सरकार के अधिकारी द्वारा भ्रष्टाचार किया जा रहा है, तो आप लोकायुक्त कार्यालय में जाकर या उनके ऑनलाइन पोर्टल पर शिकायत दर्ज कर सकते हैं। लोकायुक्त कार्यालय का पता और फोन नंबर आपको समाचार पत्र या इंटरनेट पर आसानी से मिल जाएगा। (1) केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी): केंद्रीय सरकार के अधिकारियों के खिलाफ कर्रप्शन की शिकायतों की जांच करता है। अगर आपकी शिकायत केंद्र सरकार के किसी अधिकारी के खिलाफ है, तो आप सेंट्रल विजिलेंस कमीशन की वेबसाइट पर आपको शिकायत दर्ज कर सकते है। (2) भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो-राज्य स्तर पर भ्रष्टाचार के मामलों की जांच करता है। हम अपने राज्य के एसीबी कार्यालय में जाकर या उनके ऑनलाइन पोर्टल पर शिकायत दर्ज कर सकते हैं। शिकायत दर्ज करते समय ध्यान रखें:अपनी शिकायत में सभी जरूरी जानकारी साफ और स्पष्ट शब्दों में दें।अगर आपके पास भ्रष्टाचार के सबूत हैं, जैसे कि रसीदें, फोटोग्राफ या वीडियो, तो उन्हें अपनी शिकायत के साथ जरुर लगाए।शिकायत की जांच में समय लग सकता है। धैर्य रखें और जांच पूरी होने तक इंतजार करें।आप अपनी पहचान छिपाकर भी शिकायत दर्ज कर सकते हैं।अगर आप किसी सरकारी कार्यालय में गलत कार्य या भ्रष्ट अधिकारियों को देखते हैं, तो चुप रहने के बजाय इसकी शिकायत जरूर करें।शिकायत दर्ज करने के लिए आवश्यक दस्तावेजआपका पहचान पत्र जैसे आधार कार्ड, पैन कार्ड, वोटर कार्ड आदि।बैंक खाते की जानकारी यदि आपने कोई लेनदेन किया है तो।यदि आपके पास कोई सबूत है, जैसे कि रसीदें, फोटोग्राफ, वीडियो रिकॉर्डिंग, या गवाहों के बयान, तो उन्हें अपनी शिकायत के साथ जोड़े।इसके अलावा आपको उस अधिकारी या कार्यालय का नाम, पता, अन्य जानकारियों का पता करना होगा जिसके खिलाफ हम सशक्त शिकायत दर्ज करवा रहे है।

साथियों बात अगर हम भ्रष्टाचार के दोषी व्यक्तियों को सजा मिलने की करें तो, उसे सजा के तौर पर कम से कम 3 साल से लेकर 7 साल तक की सजा हो सकती है।यदि कोई सरकारी कर्मचारी अपनी कमाई से ज्यादा संपत्ति का मालिक पाया जाता है और यह साबित नहीं कर पाता कि उसके पास यह संपत्ति कहा से आई है तो उसे कड़ी सजा दी जा सकती है। यह सजा 7 साल तक की सजा हो सकती है।इसके अलावा यदि कोई अधिकारी भ्रष्टाचार के मामलों में दोषी पाया जाता है तो लोकायुक्त अधिनियम के तहत उस व्यक्ति को उसके पद से भी हटा दिया जाता है और उसे सजा भी दी जाती है।ऐसे मामलों में दोषी को जुर्माना भी भरने की सजा हो सकती है।कर्रप्शन के मामलों में दोषी पाए गए व्यक्ति की गैर-कानूनी संपत्ति को सरकार द्वारा जब्त किया जा सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे किभारत के हर शासकीय कार्यालय में रिश्वतखोरी,भ्रष्टाचार सत्ता का दुरुपयोग,कर्तव्यों की अवहेलना,भेदभाव उत्पीड़न की शिकायत, बिना निर्धारित प्रारूप में ज़रूरी,शासकीय प्रताड़ना से पीड़ित अनेको ग्रामीण,अशिक्षित भोलीभाली जनता की शिकायतें बिना निर्धारित प्रारूप के खारिज़ हो जाती है-अधिकारी कर्मचारी सहयोग नहीं करते भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरुपयोग,कर्तव्यों की अवहेलना से आम नागरिकों को स्वास्थ्य,शिक्षा,प्रशासन,न्याय व्यवस्था में परेशानी से तंग है तो आइए उनकी शिकायत की प्रक्रिया समझें।

स्कोडा ऑक्टेविया आरएस फेस्टिव सीजन 2025 में हो सकती है लॉन्च, स्पोर्टी इंजन समेत प्रीमियम फीचर्स से लैस

परिवहन विशेष न्यूज

स्कोडा जल्द ही भारतीय बाजार में ऑक्टाविया RS लॉन्च करने की तैयारी में है। यद्यपि लॉन्च की सटीक तिथि ज्ञात नहीं है लेकिन अनुमान है कि यह 2025 के त्योहारी सीजन में पेश की जा सकती है। यह मॉडल कम्प्लीटली बिल्ट यूनिट (CBU) के रूप में आएगा और इसमें 265 hp की पावर वाला 2.0-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन होगा। कीमत 50 लाख रुपये से अधिक होने की संभावना है ।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में जल्द ही Skoda Octavia RS को लॉन्च किया जाएगा। इसकी पुष्टि कंपनी की तरफ से की गई है। इसके लॉन्च होने की सटीक टाइमलाइन के बारे में नहीं बताया गया है, लेकिन यह 2025 फेस्टिव सीजन में लॉन्च हो सकती है। स्कोडा की यह कार कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है, जो लोगों को लग्जरी फील भी देती है। आइए जानते हैं कि स्कोडा ऑक्टाविया RS को किन फीचर्स के साथ भारत में लॉन्च किया जा सकता है?

कितनी होगी कीमत?

Skoda Octavia RS को कम्प्लीटली बिल्ट यूनिट (CBU) के रूप में भारत लाया जाएगा। इसके लिमिटेड यूनिट लेकर आए जाएंगे। इसे ऑटो एक्सपो 2025 में पेश किया गया था, अब इसे साल 2025 फेस्टिव सीजन में लॉन्च किया जा सकता है। हालांकि, CBU होने के कारण इसकी कीमत 50 लाख रुपये से ज्यादा हो सकती है।

Skoda Octavia RS का इंजन

इसमें 265 hp की पावर जनरेट करने वाला 2.0-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो हाल ही में लॉन्च हुई Volkswagen Golf GTI में देखने के लिए मिला है। इसका इंजन स्पोर्टी और रोमांचक ड्राइविंग एक्सपीरिएंस देता है।

Skoda की बाकी गाड़ियों पर अपडेट

भले ही Octavia RS के लॉन्च होने की खबर लोगों को लिए काफी अच्छी है, लेकिन कंपनी की बाकी दूसरी गाड़ियों की लॉन्चिंग को फिलहाल के टाल दिया गया है। इस लिस्ट में कोडियाक RS, सुपर्ब, और रेगुलर ऑक्टाविया तक शामिल है। इसके बारे में स्कोडा इंडिया के ब्रांड निदेशक आशीष गुप्ता ने ऑटोकार से बात करते हुए बताया। उन्होंने कहा कि FTA (फ्री ट्रेड एग्रीमेंट), नई नीतियां, और भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के कारण ये फैसले टाले गए हैं। उन्होंने कहा, "FTA समझौतों, नई नीतियों और टैरिफ के कारण बाजार में अनिश्चितता है। कई चर (वेरिएबल्स) होने के कारण हर रणनीति जोखिम भरी है। हमारे पास यह योजना है कि कौन सी कारें भारत में लाई जा सकती हैं, लेकिन अनिश्चितताएं निर्णय लेने में बाधा डाल रही हैं।

शौक बड़ी चीज! इंडिया से इंग्लैंड भेजी रॉयल एनफील्ड बुलेट, खर्च जान उड़ जाएगा होश

परिवहन विशेष न्यूज

सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें एक पंजाबी परिवार ने अपनी रॉयल एनफील्ड बुलेट को पंजाब से ब्रिटेन में ट्रांसपोर्ट करवाया। इस ट्रांसपोर्ट का खर्चा 4.5 लाख रुपये से अधिक आया जो कि तीन नई बुलेट की कीमत के बराबर है। वीडियो में बुलेट के साथ फर्नीचर भी ट्रांसपोर्ट किया गया। इस वीडियो पर लोगों ने कई तरह की प्रतिक्रियाएं दी हैं।

नई दिल्ली। किसी ने सही कहा है कि शौक बड़ी चीज होती है और इसका उदाहरण हाल ही में देखने के लिए मिला है। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें बताया जा रहा है कि एक पंजाबी फैमिली ने अपने शौक को पूरा करने के लिए पंजाब से ब्रिटेन में Royal Enfield Bullet को ट्रांसपोर्ट करवाया है। इस ट्रांसपोर्ट का खर्चा इतना आया है कि उतने में वह तीन रॉयल एनफील्ड बुलेट खरीद लेते। यह वीडियों बहुत तेजी से इंटरनेट पर वायरल हो रहा है। आइए जानते हैं कि रॉयल एनफील्ड बुलेट को पंजाब से ट्रांसपोर्ट करने में कितना खर्चा आया और लोगों की इसपर क्या प्रतिक्रिया दी?

वायरल वीडियो में क्या है?

एक पंजाबी परिवार ने अपनी रॉयल एनफील्ड बुलेट मोटरसाइकिल और घरेलू फर्नीचर को भारत से इंग्लैंड में अपने नए घर तक भेजने के लिए 4.5 लाख रुपये से अधिक खर्च किए। इस वायरल वीडियो में एक कंटेनर ट्रक को यूनाइटेड किंगडम के वॉल्वरहैम्पटन में सामान उतारते हुए दिखाया गया है, जो खूब सुर्खियां बटोर रही है। वीडियो में एक ब्लैक रॉयल एनफील्ड बुलेट दिखाई दे रही है, जिस पर पंजाब का लाइसेंस प्लेट लगा हुआ है। इस बाइक को कंटेनर से निकाला जा रहा है। इसके बाद एक सिख व्यक्ति, जो पगड़ी पहने हुए है, मोटरसाइकिल पर बैठा दिखाई देता है। बाइक के साथ ही कंटेनर में सोफा सेट, डाइनिंग टेबल, विंग चेयर, और बेड जैसे फर्नीचर भी शामिल हैं, जिन्हें बाइक के साथ भारत से शिप किया गया है।

वायरल वीडियो पर लोगों का रिएक्शन

इस वायरल वीडियो पर बहुत से लोगों ने रिएक्शन दिया है। हम यहां पर आपको कुछ चुनिंदा और मजेदार कमेंट के बारे में बता रहे हैं। इस वीडियों पर एस यूजर ने लिखा कि यह पूरी तरह से बॉस बिहेवियर है, भाई ने अपने घर को अपने नए घर में ला दिया। एक यूजर ने लिखा कि अपनी बाइक, खासकर पिंड की रॉयल एनफील्ड बुलेट से फिर से मिलना शानदार अहसास होगा। एक यूजर ने लिखा कि बॉस बिहेवियर? यह तो थर्ड वर्ल्ड बिहेवियर है, यह यूके है, पंजाब नहीं। इसके साथ ही एक यूजर ने तो यह भी लिख दिया कि अगर शिपिंग

जल्द लॉन्च होगी नई रॉयल एनफील्ड हिमालयन 750, कई दमदार फीचर्स से होगी लैस

परिवहन विशेष न्यूज

रॉयल एनफील्ड अपनी सबसे बड़ी और दमदार मोटरसाइकिल Royal Enfield Himalayan 750 लाने वाली है। कंपनी ने सोशल मीडिया पर इसकी तस्वीरें जारी की हैं। टेस्टिंग के दौरान लद्दाख में स्पॉट की गई इस बाइक में इंटरसेप्टर 650 वाला इंजन होगा लेकिन अधिक पावर और टॉर्क के साथ। इसमें 55PS पावर और 60Nm टॉर्क मिल सकता है। 2025 में लॉन्च होने की उम्मीद है।

नई दिल्ली। Royal Enfield अपनी सबसे बड़ी और सबसे दमदार मोटरसाइकिल लेकर आने वाली है। रॉयल एनफील्ड की यह बाइक Royal Enfield Himalayan 750 होने वाली है। कंपनी ने सोशल मीडिया हैंडल पर इसकी कुछ फोटो शेयर कर टीज किया है। इस बाइक को भारत की सड़कों पर कई बार टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया जा चुका है, लेकिन यह पहली बार है जह कंपनी ने इसे टीज किया है। इसमें दिखाया गया है कि कंपनी इसकी टेस्टिंग लद्दाख में कर रही है। आइए जानते हैं कि नए रॉयल एनफील्ड हिमालयन 750 में क्या कुछ देखने के लिए मिलेगा।

Himalayan 750 में क्या मिलेगा नया?

रॉयल एनफील्ड की तरफ से टीज की गई फोटो को देखकर कहा जा सकता है कि इसे जल्द ही लॉन्च किया जा सकता है। इसमें फ्रंट मडगार्ड के ठीक ऊपर और रियर ब्रेक केबल के साथ सफाई से पैक किए गए ब्रेक केबल देखने के लिए मिले हैं। इसके विंडशील्ड में बदलाव किया गया है, इसमें पहले से छोटी विंडशील्ड दी गई है।

कैसा होगा इंजन?

इसमें इंटरसेप्टर 650 वाला ही इंजन देखने के लिए मिलेगा, लेकिन यह इंजन ज्यादा पावर और टॉर्क जनरेट करेगा। इसे 750cc तक बोर किए जाने की उम्मीद है। इसे न केवल आने वाली हिमालयन को हिमालयन 450 ज्यादा पावरफुल बनाया गया है, बल्कि बड़ी एडवेंचर को अपने सेगमेंट में अलग स्थान देगा। इसमें मिलने वाला इंजन करीब 55PS की पावर और 60Nm का टॉर्क जनरेट कर सकता है।

सस्पेंशन और ब्रेकिंग सिस्टम

इसमें 19/17-इंच के स्पोक व्हील सेटअप देखने के लिए मिल सकता है। अभी तक यह कंफर्म नहीं है कि इसमें ट्यूबलेस स्पोक व्हील सेटअप दिया जाएगा या नहीं। इसमें बड़ा इंजन मिलने की वजह से बाइक हिमालयन 450 की तुलना में काफी भारी होगी। इसमें सामने की तरफ डुअल डिस्क और पीछे की ओर एक डिस्क ब्रेक देखने के लिए मिलेगा। इसमें डुअल-चैनल ABS भी दिया जा सकता है।

कब होगी लॉन्च?

Royal Enfield Himalayan 750 को 2025 EICMA शो मिलान, इटली और 2025 मोटोवर्स गोवा में पेश किया जा सकता है। भारतीय बाजार में इसे नवंबर 2025 के आसपास लॉन्च किया जा सकता है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 4.5 लाख रुपये तक हो सकती है।

जुलाई में होगा 'एनर्जी स्टोरेज वीक' के 11वें संस्करण का आगाज, 200 से ज्यादा कंपनियां करेंगी शिरकत

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। नई दिल्ली स्थित यशोभूमि कन्वेंशन और एक्सपो सेंटर में 8 से 10 जुलाई तक इंडिया एनर्जी स्टोरेज वीक (IESW) 2025 का आयोजन किया जाएगा। इंडस्ट्री बॉडी इंडिया एनर्जी स्टोरेज एलायंस (IESA) इस 11वें संस्करण की मेजबानी कर रही है। इसमें 200 से ज्यादा घरेलू पैसेंजर कार कंपनियों और अंतरराष्ट्रीय इलेक्ट्रिक व्हीकल (EV) निर्माताओं के शामिल होने की उम्मीद है।

IESA के मुताबिक, भारत इलेक्ट्रिक तीन पहिया वाहनों के बाजार में तेजी से अग्रणी बन चुका है और दो पहिया EV सेगमेंट में भी उसने महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। सरकार की PLI ऑटो, PLI ACC, FAME और PM ई-ड्राइव जैसी योजनाएं EV इकोसिस्टम के विकास में बड़ी भूमिका निभा रही हैं।

नए स्कीम से चार पहिया EV को मिलेगा बढ़ावा

सरकार की नई EV निर्माण नीति SPMEPCI (Scheme to Promote Manufacturing of Electric Passenger Cars in India) के तहत खासतौर पर चार पहिया इलेक्ट्रिक वाहनों (e-4W) को बढ़ावा दिया जा रहा है। IESA का मानना है कि यह नीति भारत को ग्लोबल EV मैन्युफैक्चरिंग लीडर बना सकती है।

अंतरराष्ट्रीय निवेशकों का भी जुटेगा जमावड़ा

IESW 2025 में अमेरिका, कनाडा, यूके, जर्मनी, फ्रांस, फिनलैंड, इजराइल, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण कोरिया समेत कई देशों की 1,000 से ज्यादा कंपनियों और 150 से अधिक प्रदर्शकों के शामिल होने की संभावना है।

'मेक इन इंडिया' को मिलेगा बल

IESA अध्यक्ष देबमाल्या सेन के अनुसार, "SPMEPCI भारत के औद्योगिक परिवर्तन में अहम भूमिका निभाएगा। IESW जैसे आयोजनों से वैश्विक निवेश और अत्याधुनिक तकनीक का मेल होगा, जो भारतीय EV सेक्टर को नई दिशा देगा।"

वोक्सवैगन पोलो का स्पेशल एडिशन लॉन्च, कई प्रीमियम और लग्जरी फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। वोक्सवैगन इस साल अपनी पॉपुलर हैचबैक Polo की 50वीं वर्षगांठ पर इसका लिमिटेड एडिशन लॉन्च किया है। यह नया एडिशन सेकंड-फ्रॉम-बेस स्टाइल ट्रिम पर बेस्ड है। इसके एक्सटीरियर और इंटीरियर को अपग्रेड किया गया है। इसे जर्मनी में लॉन्च किया गया है। इसकी कीमत 28,200 यूरो (लगभग 27.88 लाख रुपये) है। आइए जानते हैं कि Volkswagen Polo Edition 50 को किन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है।

क्या है नया?

Polo Edition 50 में क्रिस्टल ब्लू मेटैलिक पेंट और बी-पिलर पर 3D '50' बैज दिया गया है। इसमें 16-इंच 'कोवेंट्री' व्हील्स स्टैंडर्ड दिया गया है, लेकिन खरीदार 17-इंच टोरोसा व्हील्स का ऑप्शन सिलेक्ट कर सकते हैं। इसके रियर विंडोज में डार्क टिंट भी दिया गया है, जो इसके प्रीमियम अपील को बढ़ाता है।

इसके इंटीरियर में स्पोर्ट्स सीट्स, स्टीयरिंग व्हील, फ्रंट डोर सिल्स और डैशबोर्ड पर '50' बैजिंग दी गई है। इसमें पैनोरमिक सनरूफ का ऑप्शन भी दिया गया है। इसके अलावा, टू-जोन ऑटोमैटिक AC, कीलेस एंट्री, क्रोम-फिनिश्ड पैडल्स, एम्बिएंट लाइटिंग, ब्लैक हेडलाइनर, फ्रंट सीट्स के लिए हीटिंग फंक्शन, रियर-व्यू कैमरा और ड्राइव मोड्स जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

कैसा है इंजन

Volkswagen Polo Edition 50 में 1-लीटर, थ्री-सिलेंडर, टर्बो-पेट्रोल TSI इंजन का इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 95 hp की पावर और 175 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड मैनुअल या 7-स्पीड डुअल-क्लच ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

भारत में कब होगी लॉन्च?

Volkswagen Polo Edition 50 के साथ कंपनी अपनी 50 साल की विरासत को सेलिब्रेट कर रही है। इसमें दिया गया क्रिस्टल ब्लू पेंट, '50' बैजिंग, और प्रीमियम फीचर्स जैसे पैनोरमिक सनरूफ और टू-जोन AC इसे एक खास लिमिटेड एडिशन बनाते हैं। इसका 1-लीटर TSI इंजन किफायती होने के साथ ही काभी बेहतरीन परफॉर्मेंस देता है। अभी इसे भारत में लॉन्च नहीं किया गया है, लेकिन उम्मीद है कि इसे जल्द ही भारतीय बाजार में लॉन्च किया जा सकता है।

मर्सिडीज-एएमजी जी63 का कलेक्टर एडिशन भारत में लॉन्च, केवल 30 लोग ही बन पाएंगे इसके मालिक

परिवहन विशेष न्यूज

मर्सिडीज-बेंज ने भारत में Mercedes-AMG G 63 Collectors Edition लॉन्च किया जिसकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 4.30 करोड़ रुपये है। यह रेगुलर AMG G मॉडल से अलग है और इसमें कॉस्मेटिक बदलाव किए गए हैं। भारत में इसकी केवल 30 यूनिट्स ही बेची जाएंगी। कलेक्टर एडिशन में मल्टी-स्पोक गोल्डन अलॉय व्हील्स और 'कलेक्टर एडिशन' लोगो जैसे बदलाव हैं। यह मिड ग्रीन मैग्नो और रेड मैग्नो रंग में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। मर्सिडीज-बेंज ने भारत में Mercedes-AMG G 63 Collector's Edition को लॉन्च कर दिया गया है। इसे भारत में 4.30 करोड़ रुपये में इंट्रोडक्टरी एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। यह रेगुलर AMG G मॉडल से अलग है और इसे पेंट स्कीम और कॉस्मेटिक बदलावों के साथ आती है। भारत में इसकी केवल 30 यूनिट्स बिक्री के लिए लाई गई है। आइए जानते हैं कि मर्सिडीज-AMG G 63 कलेक्टर एडिशन में क्या कुछ खास दिया गया है।

कलेक्टर एडिशन में क्या है नया?

कलेक्टर एडिशन को रेगुलर AMG G 63 की तुलना में कुछ खास बदलाव किए गए हैं। इसमें मल्टी-स्पोक गोल्डन अलॉय व्हील्स, प्रोफाइल पर 'कलेक्टर एडिशन' लोगो के साथ बीडिंग, और टेलगेट पर माउंटेड स्पेयर व्हील पर 'कलेक्टर एडिशन' बैज के साथ ब्लैक प्लेट दिए गए हैं। इसे दो कलर ऑप्शन मिड ग्रीन मैग्नो और रेड मैग्नो में लेकर आया गया है। इसके इंटीरियर को बेज और ब्लैक थीम दिया गया है। इसके डैशबोर्ड पर कस्टमाइजेबल ग्रैब हैंडल दिया गया है, जिसपर आप अपना नाम लिखवा सकते हैं।

कितनी है समानता?

Mercedes-AMG G 63 Collector's Edition में कॉस्मेटिक बदलावों को छोड़कर इसमें सभी चीजें रेगुलर मॉडल जैसा ही दिया गया है। इसमें वही बॉक्सी सिल्हूट और दमदार लुक दिया गया है। इसमें सर्कुलर LED हेडलाइट्स, एएमजी-स्पेसिफिक ग्रिल, और डैशबोर्ड पर डुअल 12.3-इंच स्क्रीन्स दी गई है। इंटीरियर में वही सभी फिजिकल बटन और कंट्रोल्स दिए गए हैं। बाकी फीचर्स 3-जोन ऑटो AC, 18-स्पीकर बर्मेस्टर 3D सराउंड साउंड सिस्टम, और सनरूफ मिलता है और सेफ्टी के लिए मल्टीपल एयरबैग्स, ISOFIX चाइल्ड सीट एंकरेज, 360-डिग्री कैमरा ब्लाइंड स्पॉट असिस्ट के साथ और एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (ADAS) जैसे फीचर्स मिलते हैं।

Collector's Edition का इंजन

इसमें रेगुलर AMG G 63 जैसा ही इंजन दिया गया है। इसमें 4-लीटर V8 ट्विन-टर्बो पेट्रोल इंजन दिया गया है, जो 585 PS की पावर और 850 Nm का टॉर्क मिलता है। इसके इंजन को 9-स्पीड डुअल-क्लच ऑटोमैटिक (DCT) के साथ जोड़ा गया है। यह कार 4.5 सेकंड में 0-100 किमी/घंटा की रफ्तार पकड़ लेती है। इसकी टॉप स्पीड 220 किमी/घंटा है।

तपिश से बचने के लिये

विजय गर्ग

ऐसे वक्त में जब भारत के अनेक हिस्सों में तेज गर्मी से पारा उछल रहा है, तपिश से बचने के लिये बिजली की मांग में अप्रत्याशित वृद्धि स्वाभाविक बात है। आम आदमी से लेकर खास आदमी तक गर्मी की तपिश से बचने के लिये कूलर से लेकर एसी तक का भरपूर इस्तेमाल करता है। हाल के दिनों में घरों, कार्यालयों, होटलों व मॉल तक में एसी का उपयोग बेतहाशा बढ़ा है। जिसके चलते गर्मियों के पीक सीजन में बिजली की खपत चरम पर पहुंच जाती है। ऐसे वक्त में केंद्र सरकार ने एयर कंडीशनर यानी एसी की पहचान बिजली की बढ़ती खपत के लिये जिम्मेदार खलनायक के रूप में की है। केंद्र सरकार योजना बना रही है कि घरों,होटलों व कार्यालयों में बीस डिग्री से अट्ठाइस डिग्री सेल्सियस के बीच इस्तेमाल होने वाले इस उपकरण की कूलिंग रेंज को मानकीकृत किया जाए। नए दिशा-निर्देश लागू होने के बाद एसी निर्माताओं को बीस डिग्री से कम तापमान पर कूलिंग प्रदान करने वाले एसी बनाने से रोक दिया जाएगा। केंद्रीय बिजली मंत्री मनोहर लाल खट्टर के अनुसार केंद्र सरकार की यह पहल बिजली बचाने और भारत की बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के प्रयासों का हिस्सा है। इस बात में दो राय नहीं कि गर्मियों की तपिश से बचने के लिये लोग अपने एसी को बहुत कम तापमान पर चलाते हैं। इस प्रवृत्ति का बिजली ग्रिड पर दबाव बहुत अधिक बढ़ जाता है। निश्चित रूप से इसके चलते बिजली कटौती की संभावना भी बहुत अधिक बढ़ जाती है। लेकिन इस संकट का अकेला मुख्य समाधान एसी को बेहद कम तापमान पर चलाया जाना ही नहीं है। इसके अलावा अन्य कारक भी हैं। यह भी एक हकीकत है कि सरकारी व निजी कार्यालयों में एसी का उपयोग काफी लंबे समय तक अंधाधुंध ढंग से किया जाता है। यहां इसके उपयोग में किफायत बरतने की दिशा में भी कदम उठाने की जरूरत है।

निस्संदेह, ऊर्जा मंत्रालय का ऊर्जा नियामक ब्यूरो, बिजली खपत कम करने वाले उपकरणों के उपयोग को बढ़ावा देता है। लेकिन जब गर्मी रिकॉर्ड तोड़ती बढ़ रही है तो तापमान बढ़ने पर बिजली की खपत अनिवार्य रूप से बढ़ने लगती है। लेकिन इसका एकमात्र कारण एसी का बढ़ता उपयोग ही नहीं है। हमें खुद से सवाल पूछने की जरूरत है कि हमारे शहर इतने गर्म क्यों हो रहे हैं? हम इस बढ़ते तापमान से नागरिकों को राहत क्यों नहीं दे पा रहे हैं। अंधाधुंध-अवैज्ञानिक तरीके से हो रहे निर्माण कार्य भी इसमें कम दोषी नहीं हैं। हमने चारों तरफ कंक्रीट के जंगल तो बना दिए लेकिन शहरों में हरियाली का दायरा लगातार सिमटता जा रहा है। जिससे हवा का प्राकृतिक प्रवाह भी बाधित हो रहा है। विकास के नाम पर जो सैकड़ों वर्ष पुराने पेड़ काटे जाते हैं, उसकी क्षतिपूर्ति नये पेड़ लगाकर नहीं की जाती है। हम घरों को प्राकृतिक रूप से ठंडा बनाये रखने वाली भवन निर्माण तकनीक नहीं अपना रहे हैं। यदि उष्मारोधी भवन निर्माण सामग्री को बढ़ावा दिया जाए तो लोगों को कम बिजली खपत से भी राहत मिल सकती है। हमारी जीवनशैली बिजली की खपत को लगातार बढ़ा रही है। यदि हमारे देश में सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को बढ़ावा दिया जाए तो सड़कों पर निजी वाहनों का उपयोग कम होने से वाहनों के गर्मी बढ़ाने वाले उत्सर्जन को कम किया जा सकता है। हमें भवन निर्माण में छतों को ठंडा रखने वाली तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। ऐसी सामग्री या सिस्टम का उपयोग किया जाना चाहिए जो पारंपरिक छत की तुलना में ताप बढ़ाने वाली सूरज की रोशनी को परावर्तित कर सके। इन उपायों से हम ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को भी कम करने का प्रयास कर सकते हैं। इसके अलावा शहरी क्षेत्रों में हरियाली को बढ़ाकर और पारंपरिक जल निकायों को पुनर्जीवित करके हम तापमान को कम करने का प्रयास भी कर सकते हैं। सरकार और समाज की साझा जिम्मेदारी एक बड़े बदलाव की वाहक बन सकती है। स्थानीय निकाय, निजी क्षेत्र की संस्थाएं व गैर सरकारी संगठन निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

क्या आपको भी है डिजिटल नेत्र तनाव तो जानें इसका

विजय गर्ग

हममें से ज्यादातर लोग अपने दिन के ज्यादातर घंटे स्क्रीन के सामने बैठकर बताते हैं। चाहे कंप्यूटर स्क्रीन हो या फिर मोबाइल स्क्रीन। घंटों डिजिटल स्क्रीन के सामने बैठने का सबसे बुरा असर हमारी आंखों पर पड़ता है। जिससे तनाव, अनिद्रा और कई दूसरी बीमारियों के होने की आशंका बढ़ जाती है। आंखों से जुड़ी इस तकलीफ को डिजिटल नेत्र तनाव कहते हैं। डिजिटल नेत्र तनावको ही पहले computer vision syndrome नाम से जाना जाता था। यह बीमारी दिन-प्रतिदिन लोगों में बढ़ती ही जा रही है। पहले सिर्फ कंप्यूटर पर काम होता था लेकिन अब लैपटॉप, टैबलेट्स, स्मार्ट फोन भी हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुके हैं। इन चीजों के बहुत अधिक इस्तेमाल से डिजिटल नेत्र तनाव की प्रॉब्लम हो जाती है।

इसकी शुरुआत आंखों में हल्के दर्द से हो सकती है। लेकिन समय रहते इलाज नहीं कराया जाए तो भविष्य में आंखों की रोशनी भी जा सकती है।

डिजिटल नेत्र तनाव के शुरुआती लक्षण आंखों में खिंचाव महसूस होना, आंखों में पानी आना, दर्द होना, धुंधला दिखना, लाला होना, इसके शुरुआती लक्षण हैं। इसके साथ ही सिरदर्द और घबराहट भी हो सकती है। कई बार ये चिड़चिड़ेपन का कारण भी हो सकता है। हो सकता है सुबह उठकर आपको तकलीफ कम हो लेकिन दिन बढ़ने के साथ ही ये तकलीफ बढ़ने लगती है।

1. डिजिटल प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करना हमारी जरूरत बन चुकी है। ऐसे में हमें उनके इस्तेमाल का सही तरीका भी पता होना चाहिए। इन चीजों को आंखों के बहुत पास या दूर रखकर यूज करना खतरनाक हो सकता है । इन चीजों को दूरी पर रखकर ही इस्तेमाल करना चाहिए।

2. जिस कमरे में बैठकर आप इन चीजों का इस्तेमाल कर रहे हैं वहां पर्याप्त रोशनी होनी चाहिए। वरना आंखों पर जोर पड़ेगा।

3.ऑफिस में एसी वेंट के सामने नहीं बैठना चाहिए। इससे आंखों का पानी सूख जाता है। 20-20-20 का नियम फॉलो करना चाहिए। जो लोग ऑफिस में कंप्यूटर और लैपटॉप में देर तक काम करते हैं, उन्हें हर 20 मिनट पर 20 फीट दूर पर रखी चीज को 20 सेकंड के लिए देखना चाहिए। ये आंखों के तनाव को कम करता है।

4. स्क्रीन ज्यादा ब्राइट नहीं होनी चाहिए और फॉन्ट साइज बहुत छोटे नहीं होने चाहिए।

5. जब आप देर तक कंप्यूटर पर काम करते हैं तो आपकी पलकें एक मिनट में 6-8 बार ही झपकती हैं जबकि 16-18 बार पलकों का झपकना नौर्मल होता है। ऐसे में आवश्यक रूप से हर छह महीने में एकबार आंखों जांच करा लें।

वैज्ञानिकों ने सबसे भारी प्रोटॉन एमिटर एस्टटाइन -188 का पता लगाया

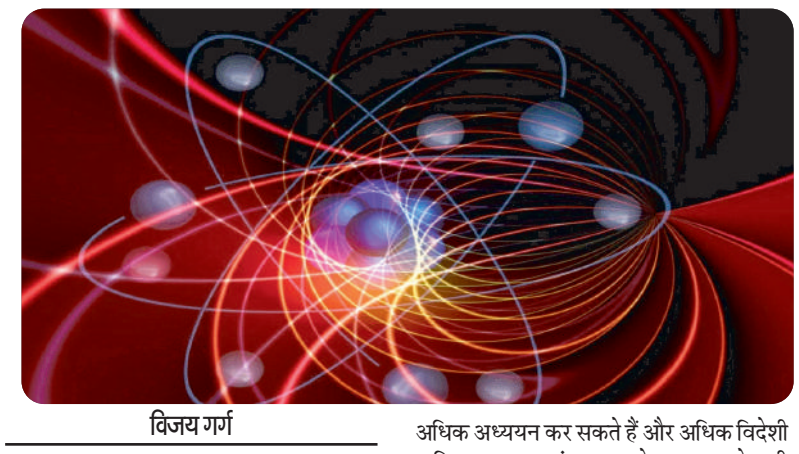

विजय गर्ग

फिनलैंड के युवेस्कुले विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के नेतृत्व में एक अंतरराष्ट्रीय सहयोग का पता चला है और सबसे भारी प्रोटॉन उत्सर्जक के आधे जीवन को मापा गया, 188 -आइसोटोप, जो एक प्रोटॉन का उत्सर्जन करके क्षय हुआ। जबकि आइसोटोप अक्सर अल्फा, बीटा और गामा कणों को उत्सर्जित करके रेडियोधर्मी क्षय से गुजरते हैं, वे शायद ही कभी एक प्रोटॉन का उत्सर्जन होता है। अध्ययन प्रकृति संचार में प्रकाशित किया गया था। ₹मापा आधा जीवन 188 - के लिए 190 माइक्रोसेकंड है, जो प्रोटॉन के लिए टाइमस्केल को दर्शाता है उत्सर्जन, ₹मेंहदी कोककोनेन, आरएसटी और संबंधित लेखकों में से एक युवेस्कुले विश्वविद्यालय से, ₹दिए गए प्रोटॉन और न्यूट्रॉन संख्याओं वाले नाभिक के लिए, यदि हम अधिक प्रोटॉन जोड़ते रहते हैं, तो हम एक सीमा तक पहुंच जाएंगे जहां अंतिम जोड़ा प्रोटॉन होगा आईआईटी रुड़की में भौतिकी विभाग में प्रोफेसर और पेपर के सहलेखक परमासिवन अरुमुगम ने कहा, बस दूर ड्रिप । उन्होंने कहा कि यह एक ऐसा उदाहरण है जहां ₹प्रोटॉन उत्सर्जन का पता लगाया गया था और एक प्रयोगशाला में अध्ययन किया गया था₹ और ऐसा करने के लिए आवश्यक प्रयोगात्मक सुविधाएं और ₹सैद्धांतिक विवरण। डॉ. कोककोनेन ने जोड़ाः ₹माप तकनीकों और विश्लेषण ने पिछले वर्षों के दौरान सिग्नी कैंटली को उन्नत किया है जिससे हम अधिक अध्ययन कर सकते हैं और अधिक विदेशी नाभिक। परमाणु संख्या 85 के साथ सबसे भारी एस्टाटिन नाभिक, स्ट्रोंटियम आयनों के साथ एक चांदी के लक्ष्य को विकिरण करके एक संलयन वाष्पीकरण प्रतिक्रिया में उत्पादित किया गया था। कई नाभिक का गठन किया गया था, 188-एक रिकॉइल परिवहन इकाई रिकॉल विभाजक का उपयोग करके पहचाना गया था। ₹जब 188-एस्टाटाइन प्रोटॉन का उत्सर्जन करता है, तो यह 187-पोलोनियम बन जाता है, जिसमें केवल 1.4 एमएस का आधा जीवन होता है। 187 -पोलोनियम आइसोटोप तब अल्फा क्षय के माध्यम से 183-लीड और इतने पर, जब तक कि यह एक स्थिर नाभिक तक नहीं पहुंच जाता, तब तक क्षय होता है। कल्ले अन्य संबंधित लेखक, औरानेन ने एक में कहा ईमेल। आईआईटी रुड़की टीम, प्रो। अरुमुगम, सैद्धांतिक गणना के साथ प्रोटॉन उत्सर्जन का पता लगाया। युवेस्कुले विश्वविद्यालय में किए गए सफिस्टकेटिड परत समूह को इस तरह की पुष्टि की आवश्यकता है। ₹हम तब से प्रोटॉन उत्सर्जन के लिए सिद्धांत विकसित कर रहे हैं 2008 पुर्तगाल के लिस्बन में यूनिवर्सिडेड डी लिस्बोआ के सहयोग से, ₹प्रो। अरुमुगम ने कहा। ₹सैद्धांतिक गणनाओं ने हमें अचरज नाभिक के आकार को दृढ़ता से निर्धारित करने की अनुमति दी (तरबूज के आकार का), ₹उन्होंने कहा। ₹नाभिक की संरचना को आकार पैरामीटर द्वारा दर्शाया जाता है, और आधा जीवन दृढ़ता से आकार पैरामीटर पर निर्भर करता है।

संक्रमण का खतरा सावधानी ही उपाय

विजय गर्ग

इस समय मौसम में बहुत तेजी से उतार-चढ़ाव हो रहा है, कभी बारिश की वजह से मौसम थोड़ा ठंडा हो जाता है, कभी गरमी अचानक बढ़ जाती है। इसके चलते कई नए तरह के जीवाणु और विषाणु पैदा हो रहे हैं। इसी चलते कोरोना के नए बहुरूप भी उभर आए हैं। यों, आमतौर पर इस मौसम में लोगों को सांस की तकलीफ, सर्दी-खांसी-जुकाम और बुखार की शिकायत बढ़ जाती है। पर, मौसम के उतार-चढ़ाव के कारण यह संक्रमण तेजी से उभरता देखा जा रहा है। इसके चलते लोगों में फिर से स्वाभाविक भय का वातावरण बन रहा है। सरकारें भी लोगों से सावधान रहने को कह रही हैं। मगर यह कोई घबराने की बात या भयभीत होकर अस्पतालों के चक्कर काटने की स्थिति नहीं है । थोड़ी सावधानी बरतें, तो इस समस्या से बहुत आसानी से पार पाया जा सकता है। हाथ-मुंह धोते रहें

संक्रमण का खतरा सबसे अधिक हाथों और नाक के जरिए होता है । जब भी और जहां भी मौका मिले, हाथों को साबुन से जरूर धोएं। आंखों पर छींटे मारें और मुंह धोते रहें। अगर सेनेटाइजर का उपयोग करते रहें, तो और अच्छा। कोरोना के वक्त जिस तरह साफ- सफाई का ध्यान रखते थे, उसी तरह इस मौसम में भी सावधानी बरतें, खासकर बच्चों को इससे बचने की हिदायत अवश्य दें ।

मास्क पहनें

संक्रमण का दूसरा सबसे अधिक खतरा सांसों के विषाणु प्रवेश से होता है। जब भी आप किसी सर्दी-जुकाम-खांसी से पीड़ित व्यक्ति के पास उठते-बैठते हैं, तो उसके विषाणु का प्रभाव आप पर भी पड़ने का अंदेशा रहता है। इसलिए जब भी घर से बाहर निकलें तो मास्क अवश्य पहनें। अगर घर में किसी व्यक्ति को संक्रमण है, तो उससे मास्क पहन कर रहने को कहें और उससे दूरी बनाए रखें।

खानपान का ध्यान

किसी भी प्रकार के संक्रमण से बचाव का सर्वोत्तम तरीका है कि अपने शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाएं। इसके लिए ताजा पका भोजन ही करें। भोजन में फल और हरी सब्जियों की मात्रा बढ़ा दें । घर में ही निकाल कर फलों का रस पीएं। बाहर का भोजन बिल्कुल त्याग दें। इस मौसम में बाहर के बने भोजन से पाचन-तंत्र और उसके चलते प्रतिरोधक क्षमता कमजोर पड़ने की आशंका सबसे अधिक रहती है। बाहर के भोजन के बजाय घर का बना और गरमागरम खाना ही खाएं। थोड़ी-थोड़ी देर पर पानी या इलेक्ट्राल और

ओआरएस घोल लेते रहें । बेवजह काढ़ा आदि लेने का प्रयास न करें ।

संक्रमण की स्थिति में

अगर खांसी जुकाम- बुखार, गले में खिचखिच हो जाए, तो घबराने की कतई जरूरत नहीं। किसी चिकित्सक से संपर्क करें और सामान्य दिनों की तरह ही उपचार कराएं। अगर सांस की तकलीफ अधिक बढ़ जाए, तभी कोरोना की जांच कराएं और फिर चिकित्सकों की सलाह से उपचार शुरू करें। इस बात का सदा ध्यान रखें कि घबराहट से बीमारियां ज्यादा तेजी से अपना असर दिखाती हैं। जितना सामान्य और सहज रहेंगे, बेवजह भय में नहीं रहेंगे, उतनी ही जल्दी स्वस्थ भी होंगे।

'मन बावरा माने ना'

अब जीवन ही अलग है। मन तो बावरा है ही, मन तो मानता ही नहीं, मन तो मनमानी भी करता ही है। अगर जीवन में कोई कमी हो तो मन हमें भटका सकता है, भटकाता ही है। मन के खेल सचमुच निराले हैं, इससे सावधान रहने की जरूरत है क्योंकि हमें तो यह लगता है कि हम अपने मन की कर रहे हैं, पर यह नहीं समझ पाते कि मन को बेलगाम छोड़ कर हम असल में अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। ऐसे हर मामले में स्पिरिचुअल हीलिंग एक प्रभावी औजार है जो हमें सही रास्ता दिखा सकता है और जीवन को खुशहाल बना सकता है। यूं भी थोड़े से विश्लेषण से, थोड़ी सी समझदारी से हम मन पर लगाम लगा सकते हैं। लगाम हो तो मन को काबू में रखकर जीवन आनंदमय बना सकते हैं, और लगाम न हो तो हम मन के चक्कर में फंसकर घनचक्कर भी बन सकते हैं, क्योंकि मन तो बावरा है ही, इसे समझना जरूरी है'

मनोविज्ञान कहता है कि हमारा मन ऐसा बांवरा है कि वह हमारे खुद के साथ ही खेल खेल जाता है और हमें पता भी नहीं चलता। हमारे सामने कोई ऐसा काम हो जो बहुत कठिन हो, या हमें नापसंद हो, तो हमारा मन दस हजार तरह के बहाने बनाकर हमें भटका देता है। कठिन काम, या नापसंद काम हमारे सामने हो, करना जरूरी हो, उसे न करने पर नुकसान हो सकता हो, तो भी जब हम काम शुरू करने लगें तो मन में विचार आएगा कि हमारी दराज में बड़ा कूड़ा इक_ा हो गया है, कुछ ढूंढना हो तो ढूंढने में बहुत समय खराब हो जाता है, दस-पंद्रह मिनट लगेंगे, दराज साफ कर लें, फिर यह काम कर लेंगे, इस तरह एक पंथ दो काज हो जाएंगे, और हमने काम छोड़ कर दराज साफ करना शुरू कर दिया। दराज में सचमुच बहुत सी बेकार की चीजें जमा हो गई थीं, सफाई करने लगे तो खुद हैरान हो गए कि इतना कूड़ा इक_ा कर रखा है। सफाई पूरी करके बहुत खुश हुए कि 'एक अच्छा काम निपटा लिया', लेकिन उस सफाई में सारा दिन गुजार दिया। पता ही नहीं चला कि पूरा दिन कैसे बीत गया। 'अच्छा काम' तो किया, पर 'जरूरी काम' को छोड़ कर। ये है हमारे मन का खेल। मन को यूं ही बावरा नहीं कहते। अगर हम समझदारी से काम न लें तो ये बावरा मन मानता ही नहीं। मन के ये खेल हमारे जीवन के सभी हिस्सों में चलते रहते हैं और कई बार तो रिश्तों के भी आड़े आ जाते हैं। ऐसे ही एक मामले का जिक्र मेरी बात का बेहतर खुलासा करेगा। पति-पत्नी, निशा और राजेश, दोनों सरकारी नौकरी में उच्च पदों पर विराजमान हैं, अपने-अपने कार्यालय के मुखिया। दोनों बहुत पढ़े-लिखे, बहुत मिलनसार, बहुत सभ्य।

पैसे की कमी नहीं, हर तरह की सुख-सुविधा से संपन्न घर। परिवार में पति-पत्नी के अलावा एक बेटा और एक बिटिया। भरा-पूरा परिवार, परमात्मा का दिया सब कुछ। जो देखे, वैसा ही परिवार चाहे। पर पति-पत्नी के रिश्ते में कशिश बिल्कुल नहीं। सब कुछ औपचारिक-सा। दोनों को लगता था मानो किसी जानकार से, या किसी पड़ोसी से बात कर रहे हैं, पति-पत्नी वाला खिंचाव, लगाव या आकर्षण नदारद। यहां तक कि वैवाहिक जीवन के सर्वाधिक आवश्यक काम के समय भी सब कुछ इतना औपचारिक कि मिलन के बाद भी मन में संतुष्टि नहीं, आनंद नहीं। अच्छी बात सिर्फ यह रही कि पति-पत्नी में से किसी का कोई अफेयर नहीं। आखिर दोनों ने एक मैरिज काउंसलर के पास जाने का फैसला किया। संयोग ये रहा कि मैरिज काउंसलर मेरे मित्र हैं, मेरे काम के बारे में जानते हैं, सो उन्होंने ही निशा और राजेश को मेरे पास भेजा। दोनों से दो-दो बार अलग-अलग और एक साथ की मीटिंग के बाद मैंने हीलिंग शुरू की। हीलिंग के समय जो तथ्य उभर कर आए, वे बड़े आश्चर्यजनक थे। निशा बचपन से ही बहुत सुंदर थीं और उनके पिता इसी बात से डरे रहते थे कि बिटिया बहुत सुंदर है, कोई आवारा गुंडा कहीं निशा के साथ कुछ गलत न कर दे। इस डर के चलते उन्होंने निशा पर इतनी पाबंदियां लगा दीं कि उनका जीवन नीरस हो गया। किसी सहेली के घर जाने की छूट नहीं, किसी के साथ खेलने की छूट नहीं, घर में कैदी का-सा जीवन। वह अपने पिता से घृणा करने लगीं। मन का यह घाव धीरे-धीरे नासूर बन गया और वह पूरे पुरुष समाज से ही घृणा करने लगीं। शादी के बाद मन की इस घृणा ने ऐसा रूप दिखाया कि मन कभी भी पति के करीब नहीं हो सका। उधर राजेश की कहानी भी कोई अलग नहीं थी। राजेश की मां बहुत तेज स्वभाव की थीं। बात-बात पर पति की गलतियां निकालते रहना, उन्हें कोसते रहना, बेटे को डांटते रहना उनका स्वभाव था। पिता काम में व्यस्त रहते थे, कभी बेटे के साथ लंबा समय नहीं बिताया, पिता-पुत्र के रिश्ते में नजदीकियां नहीं आईं। बचपन में मां ने भी मां का वह प्यार नहीं दिया जो हर बेटे का हक होता है। मन का यह खालीपन निशा के औपचारिक व्यवहार के कारण शादी के बाद भी नहीं भर पाया। शरीर साथ थे, मन दूर-दूर था। शरीर मिले, बच्चे भी हुए, पर मन की दूरियां बनी रहीं। हीलिंग के समय दोनों को समझ आया कि पति-पत्नी दोनों ही प्यासे हैं, दोनों के बचपन में प्यार और विश्वास का अभाव रहा है जो उनके शादीशुदा जीवन में दखल दे रहा है। दोनों को यह भी समझ आया कि वह बीते समय की बात है, अब नया जीवन है। दोनों ने ही यह भी समझा कि दोनों एक-दूसरे के प्रति समर्पण के लिए तैयार हैं, पर बचपन के अभाव ने मन में दूरियां पैदा कर दी हैं और इन दूरियों को मिटाने के लिए दोनों ही सक्षम हैं, बस थोड़ी-सी समझदारी की जरूरत है। यह समझ आते ही कि दोनों के मन में एक-दूसरे के प्रति कोई दुराव नहीं है, गलतियां दोनों के मां-बाप की हैं और उसके कारण उनके शादीशुदा जीवन को खराब करने का कोई कारण नहीं है तो दोनों एक-दूसरे के गले मिल कर रोये। आंसुओं ने सारी शिकायतें धो दीं और आज निशा और राजेश सचमुच ऐसा जीवन जी रहे हैं कि हर कोई वैसा ही जीवन जीना चाहेगा। पहले जो दिखावा था, जो दुनिया को नजर आता था, अब वह असलियत में बदल गया है, अब वह सचमुच घटित हो गया है, जीवन खुशनुमा हो गया है, जीवन संगीत बन गया है।

अब वे अपने बच्चों को पूरा समय देते हैं, पूरा प्यार देते हैं, उनकी काउंसिलिंग करते रहते हैं, उनका धीरज बंधाते रहते हैं, उन्हें प्रोत्साहित करते रहते हैं, उनका मार्गदर्शन करते रहते हैं, ताकि जिस प्यार से वंचित रहकर उनका शादीशुदा जीवन औपचारिकता बन गया था, वैसा उनके बच्चों के साथ न हो। अब जीवन ही अलग है। मन तो बावरा है ही, मन तो मानता ही नहीं, मन तो मनमानी भी करता ही है। अगर जीवन में कोई कमी हो तो मन हमें भटका सकता है, भटकाता ही है। मन के खेल सचमुच निराले हैं, इससे सावधान रहने की जरूरत है क्योंकि हमें तो यह लगता है कि हम अपने मन की कर रहे हैं, पर यह नहीं समझ पाते कि मन को बेलगाम छोड़ कर हम असल में अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। ऐसे हर मामले में स्पिरिचुअल हीलिंग एक प्रभावी औजार है जो हमें सही रास्ता दिखा सकता है और जीवन को खुशहाल बना सकता है। यूं भी थोड़े से विश्लेषण से, थोड़ी सी समझदारी से हम मन पर लगाम लगा सकते हैं। लगाम हो तो मन को काबू में रखकर जीवन आनंदमय बना सकते हैं, और लगाम न हो तो हम मन के चक्कर में फंसकर घनचक्कर भी बन सकते हैं, क्योंकि मन तो बावरा है ही, इसे समझना जरूरी है।

घरेलू हिंसा का घेरा

महिलाओं के लिए उनका घर-आंगन सबसे सुरक्षित स्थान होना चाहिए। परिवार और परिवेश में अपनों का संबल मिलना चाहिए। मान-सम्मान की रक्षा होनी चाहिए। दुखद है कि भारत ही नहीं, कमोबेश हर देश में घरेलू हिंसा का दंश महिलाओं के हिस्से है । मन और मान को ठेस पहुंचाने वाले इस बर्ताव के रंग-ढंग भले अलग हों, वैश्विक स्तर पर महिलाएं इस पीड़ा को झेल रही हैं। व्यक्तित्व और अस्तित्व को चोट पहुंचाने वाली घरेलू हिंसा महिलाओं के शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के लिए भी चिंता का विषय बनी हुई है। अपनी ही देहरी के भीतर स्त्रियों के साथ होने वाला हिंसात्मक व्यवहार मानवाधिकार का भी एक संवेदनशील मुद्दा है। हमारे देश में महिलाओं की बड़ी आबादी घरेलू हिंसा झेलने को विवश है। प्रगतिशील सोच और परिवर्तन की बहुत-सी बातों के बीच मानवीय व्यवहार के इस मोर्चे पर आज भी बदलाव की प्रतीक्षा है । यही कारण है कि घरेलू हिंसा की रोकथाम और पीड़ित स्त्रियों की सुरक्षा सहयोग से जुड़े विषयों की सामाजिक पारिवारिक परिवेश में ही नहीं, न्यायिक निर्णयों में भी चर्चा होती रहती है।

आज भी बड़ी संख्या में महिलाएं घर के भीतर दुर्व्यवहार और मारपीट का शिकार बनती हैं। तकनीकी तरक्की और शिक्षा के बढ़ते आंकड़ों के बावजूद इस मामले में जागरूकता की कमी भी स्पष्ट दिखती है। सजग- शिक्षित महिलाएं भी अपना परिवार बचाने के लिए इस दुर्व्यवहार की शिकायत नहीं करतीं । इसीलिए घरेलू हिंसा से स्त्रियों की सुरक्षा पुख्ता करने जुड़े इस पहलू पर उच्चत्तम न्यायालय ने सहयोगी और सजग परिवेश बनाने की बात कही। एक याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अधिकारियों को अधिनियम के प्रावधानों के बारे में जागरूकता लाने, अधिनियम के तहत सेवाओं के प्रभावी समन्वय को सुनिश्चित करने और इसके प्रावधानों का मीडिया में पर्याप्त प्रचार करने और व्यापक कदम उठाने चाहिए। विशेषकर घरेलू हिंसा अधिनियम के तहत निशुल्क कानूनी सहायता और सलाह के अधिकार के बारे में महिलाओं के बीच जागरूकता फैलानी चाहिए। इन निर्देशों में शीर्ष अदालत ने यह भी जोड़ा कि अगर कोई महिला कानूनी सहायता या सलाह के लिए संपर्क करती है, तो उसे शीघ्रता से सहायता प्रदान की जाए, क्योंकि अधिनियम प्रत्येक महिला को निशुल्क कानूनी सहायता के अधिकार की गारंटी देता है।

हमारे परिवारों में अधिकतर बदलाव सतही स्तर पर ही हुए हैं। मानसिकता और व्यवहार के मोर्चे पर सार्थक परिवर्तन अब तक नहीं आया। ऐसे में जागरूकता की कमी और पारिवारिक दबाव घरेलू हिंसा का घेरा कसे हुए है । पिछले वर्ष राष्ट्रीय महिला आयोग को महिलाओं के खिलाफ अपराधों की 25,743 शिकायतें मिलीं थी । इनमें सबसे अधिक 6,237 शिकायतें घरेलू हिंसा की थीं। यानी आपराधिक आंकड़ों में 24 फीसद की हिस्सेदारी घरेलू हिंसा की रही। यही वजह है कि इन शिकायतों में 'सम्मान के साथ जीने के अधिकार' की मांग वाली शिकायतें अधिक थीं, जो कुल शिकायतों का लगभग 28 फीसद हैं। इतना ही नहीं, दहेज उत्पीड़न के मामले भी 17 फीसद रहे । समझना कठिन नहीं है कि दहेज उत्पीड़न के मामलों में भी शुरुआत में ही कई महिलाएं शारीरिक-मानसिक हिंसा झेलती ही हैं।

दुखद है कि शिक्षित समाज में भी रुग्ण मानसिकता वाला यह व्यवहार महिलाओं के हिस्से है। घरेलू हिंसा का दंश भी हर समुदाय और हर वर्ग में देखने को मिलता है। अपने ही घर में महिलाओं के साथ हिंसक व्यवहार करने वाले शिक्षित और अशिक्षित, हर तबके के लोग हैं। भ्रम यह भी है कि केवल घरेलू महिलाएं ऐसी हिंसा और अपमान झेलती हैं। कई कामकाजी और आत्मनिर्भर स्त्रियां भी घरेलू हिंसा झेलती हैं, क्योंकि यह बर्ताव असल में नकारात्मक और अमानवीय सोच से जुड़ा है, जिसमें परिवर्तन लाना दुष्कर कार्य बना हुआ है। स्त्रियों के मान को ठेस पहुंचाने वाली सोच में बदलाव की धीमी गति को हाल ही में आए आंकड़े भी पुख्ता करते हैं। वर्ष 2025 की पहली तिमाही में राष्ट्रीय महिला आयोग में अब तक 7,698 शिकायतें दर्ज कराई गई हैं। शिकायतों की इस सूची में भी सबसे अधिक मामले घरेलू हिंसा के ही हैं। पीड़ादायक यह है कि महानगरों से लेकर गांवों-कस्बों तक, आंकड़ों में ही नहीं सहज रूप से भी सामाजिक परिवेश में इस विद्रूप व्यवहार की झलक दिख जाती है।

घरेलू हिंसा का सबसे दुखद पक्ष यह कि इसे महिला की व्यक्तिगत समस्या समझा जाता है। आमतौर पर स्वजन भी यह दंश झेलती स्त्रियों का साथ नहीं देते। परिजन चुपचाप सब कुछ सहने की

नसीहत देने लगते हैं। वहीं कानूनी मोर्चे पर भी स्थितियां सहज नहीं हैं। दुर्भाग्यपूर्ण यह भी है कि हाल के वर्षों में सामने आए घरेलू हिंसा के झूठे आरोपों ने सचमुच इस दुर्व्यवहार की शिकार बन रहीं महिलाओं को भी सवालों के घेरे में ला दिया है। अधिकतर महिलाएं शिकायत दर्ज कराने के बजाय चुप्पी चुन लेती हैं। एक रपट के अनुसार हमारे देश में केवल 0.1 फीसद महिलाएं ऐसी हिंसा के खिलाफ मामला दर्ज कराने के लिए आगे आती हैं। बुनियादी रूप से देखा जाए तो यह स्त्री-पुरुष के भेद से परे हर मनुष्य के आत्मसम्मान का मोल समझने का विषय है।

समझना आवश्यक है कि घर के भीतर होने वाली इस शारीरिक और मानसिक हिंसा के पीछे लैंगिक विभेद की सोच एक अहम कारण है। भेदभाव भरी इसी सोच के चलते कई कामकाजी महिलाओं की उपलब्धियां भी इस दुर्व्यवहार का कारण बन जाती हैं। आज भी जीवन साथी की रूढ़िवादी सोच के चलते न तो स्त्रियों की योग्यता की सहज स्वीकार्यता दिखती है और न ही पारिवारिक स्तर पर पराए घर से आई बेटी के प्रति मान भरा व्यवहार । ऐसी हिंसा को बहुत से परिवारों में समर्थन भी मिलता है। नतीजतन, घरेलू हिंसा झेल रहीं स्त्रियां अक्सर अकेली पड़ जाती हैं। ऐसे में अपनों की सोच और बर्ताव का बदलना ही घरेलू परिस्थितियों को बदल सकता है, ताकि सम्मानजनक और सुरक्षित व्यवहार स्त्रियों के हिस्से आए। अंतरिक्ष तक पहुंच बनाने के दौर में बहुत आवश्यक है कि महिलाओं के लिए अपना आंगन सुरक्षित हो ।

-विजय गर्ग

गांव से जिनेवा तक: भारत का सामाजिक सुरक्षा मॉडल

[सपनों से हकीकत तक, 'अंत्योदय' से 'विश्व प्रेरणा' तक: भारत की सामाजिक सुरक्षा यात्रा]

भारत की धरती पर एक ऐसी क्रांति जन्म ले रही है, जो न केवल आंकड़ों की किताबों में दर्ज होगी, बल्कि करोड़ों दिलों की धड़कनों में बसेगी। यह कहानी है 94 करोड़ लोगों की, जो आज सामाजिक सुरक्षा के अभेद्य कवच में सांस ले रहे हैं। यह कहानी है उस भारत की, जिसने एक दशक में असंभव को संभव कर दिखाया, विश्व मंच पर सामाजिक सुरक्षा कवरेज में दूसरा स्थान हासिल किया। 2015 में जहां केवल 19% आबादी इस सुरक्षा के दायरे में थी, वहीं 2025 में यह आंकड़ा 64.3% तक पहुंच गया। यह 45% का ऐतिहासिक उछाल केवल एक संख्या नहीं, बल्कि उस अटल संकल्प का प्रतीक है, जो समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को सशक्त बनाने का वादा करता है। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शुरू हुई उस यात्रा का गवाह है, जो "सबका साथ, सबका विकास" को नारा नहीं, बल्कि हकीकत बनाती है।

इस क्रांति की नींव उन कल्याणकारी योजनाओं पर टिकी है, जिन्होंने गरीबों, मजदूरों और समाज के हाशिए पर खड़े लोगों के जीवन को नई रोशनी दी। आयुष्मान भारत ने करोड़ों परिवारों को मुफ्त इलाज का सहारा दिया, तो अटल पेंशन योजना ने बुढ़ापे में आर्थिक सुरक्षा का भरोसा दिलाया। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और जन-धन योजना ने असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों और महिलाओं को वह आत्मविश्वास दिया, जो उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता की ओर ले जाता है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) ने भारत की इस उपलब्धि को न केवल सराहा, बल्कि इसे वैश्विक मंच पर एक मिसाल के रूप में पेश किया। आईएलओ के महानिदेशक गिल्बर्ट एफ हुंगबो ने कहा, "प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में जो प्रगति की है, वह विश्व के लिए एक प्रेरणा है।" यह प्रशंसा उस भारत की ताकत को रेखांकित करती है, जो अपने हर नागरिक को गरिमा और सुरक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

जिनेवा में आयोजित 113वें अंतरराष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में श्रम एवं रोजगार मंत्री मनसुख मांडविया ने भारत की इस उपलब्धि को गर्व के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, "यह वृद्धि 'अंत्योदय' के उस सिद्धांत को साकार करती है, जो समाज के सबसे

कमजोर व्यक्ति को सशक्त बनाने का वादा करता है।" भारत ने न केवल सामाजिक सुरक्षा का दायरा बढ़ाया, बल्कि इसे डिजिटल और पारदर्शी बनाकर एक नया वैश्विक मानक स्थापित किया। आईएलओ के सहयोग से शुरू किया गया राष्ट्रीय डाटा पूलिंग अभियान इसकी सबसे बड़ी मिसाल है। यह अभियान न केवल लाभार्थियों की संख्या को ट्रैक करता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि योजनाएं विधायी रूप से समर्थित और समयबद्ध हों। भारत 2025 के सामाजिक सुरक्षा डाटा को आईएलओएसटीएट डेटाबेस में अपडेट करने वाला पहला देश बना, जो इसकी डिजिटल प्रणालियों और पारदर्शिता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

यह उपलब्धि केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है। यह उस किसान की कहानी है, जो अब आयुष्मान भारत के तहत बिना चिंता के इलाज करवा सकता है। यह उस मजदूर की कहानी है, जिसे अटल पेंशन योजना ने बुढ़ापे में सहारा दिया। यह उस महिला की कहानी है, जो जन-धन खाते के माध्यम से अपनी मेहनत की कमाई को सुरक्षित रख सकती है। वर्तमान आंकड़े केवल प्रथम चरण को दर्शाते हैं, जिसमें केंद्रीय योजनाओं और आठ राज्यों की महिला-केंद्रित योजनाओं के लाभार्थी शामिल हैं। दूसरे चरण में यह कवरेज 100 करोड़ के आंकड़े को पार करने की ओर अग्रसर है। यह न केवल भारत के लिए, बल्कि विश्व के लिए एक ऐतिहासिक क्षण होगा, जब एक अरब लोग सामाजिक सुरक्षा के दायरे में होंगे।

भारत का यह समावेशी दृष्टिकोण इसे अन्य देशों से अलग करता है। सरकार ने सामाजिक सुरक्षा को एक नीति से आगे बढ़ाकर इसे अधिकार-आधारित बनाया है। मांडविया ने आईएलओ महानिदेशक के साथ चर्चा में इस बात पर जोर दिया कि मोदी सरकार का विजन समाज के हर वर्ग को सशक्त करना है। "हमारा लक्ष्य केवल आंकड़े बढ़ाना नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के जीवन में वास्तविक बदलाव लाना है," उन्होंने कहा। यह दृष्टिकोण भारत को एक अनूठा स्थान देता है। जहां कई देश सामाजिक सुरक्षा को केवल एक प्रशासनिक कार्य के रूप में देखते हैं, भारत ने इसे एक राष्ट्रीय मिशन बना दिया है।

डिजिटल इंडिया की ताकत ने इस क्रांति को और मजबूत किया है। आधार-लिंक्ड डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर और डिजिटल ट्रैकिंग ने यह सुनिश्चित किया कि योजनाओं का लाभ सीधे लाभार्थियों तक पहुंचे। कई देश आज भी पारदर्शिता और पहुंच के मुद्दों से जूझ रहे हैं, लेकिन भारत ने डिजिटल प्रणालियों के माध्यम से इस चुनौती को अवसर में बदला। यह पारदर्शिता न केवल योजनाओं की विश्वसनीयता बढ़ाती है, बल्कि वैश्विक मंच पर भारत को एक मॉडल के रूप में प्रस्तुत करती है।

यह यात्रा केवल शुरुआत है। 100 करोड़ लोगों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाने का लक्ष्य अब बस कुछ कदम दूर है। यह उपलब्धि भारत की नीतियों, नेतृत्व और सामाजिक प्रतिबद्धता की ताकत को दर्शाती है। यह उन अनगिनत चेहरों की मुस्कान की कहानी है, जिनके लिए सामाजिक सुरक्षा ने नई उम्मीदें जगाईं। यह उस भारत की कहानी है, जो विश्व मंच पर न केवल अपनी आर्थिक शक्ति, बल्कि अपनी सामाजिक संवेदनशीलता के लिए जाना जाएगा। यह क्रांति रुकने वाली नहीं है। यह भारत की वह ताकत है, जो हर नागरिक को सशक्त बनाने का वादा करती है। यह एक ऐसे भारत का निर्माण है, जहां कोई भी पीछे न छूटे, जहां हर व्यक्ति का जीवन सुरक्षित और सम्मानजनक हो। यह नया भारत है—एक ऐसा भारत, जो विश्व को दिखा रहा है कि समावेशी विकास का सपना हकीकत बन सकता है। और जब यह सपना 100 करोड़ लोगों तक पहुंचेगा, तो यह न केवल भारत, बल्कि पूरी मानवता के लिए एक स्वर्णिम अध्याय होगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

सरकार के खिलाफ बीजद का शांतिपूर्ण प्रदर्शन, पुलिस ने नेता को उठाया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : बीजद ने भाजपा सरकार की पहली वर्षगांठ पर उसकी अक्षमता के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। वरिष्ठ बीजद नेताओं, विधायकों और प्रमुख महिला नेताओं ने तख्तियां लेकर विरोध प्रदर्शन किया। बीजद नेताओं और कार्यकर्ताओं ने पहले मास्टर कैंटीन से विरोध प्रदर्शन किया और फिर लोअर पीएमजी की ओर बढ़े।पुलिस ने बीजद द्वारा शांतिपूर्ण तरीके से किए जा रहे विरोध प्रदर्शन को अपने कब्जे में ले लिया है। महानदी का पानी सूखना, युवाओं का भविष्य अंधकारमय होना, रंगाई-पुताई, नाम बदलना, आंध्र और बिहार को दया मिलना तथा ओडिशा के साथ अन्याय, धान की कटाई, महिलाओं पर अत्याचार आदि कई मुद्दों पर विरोध प्रदर्शन किया गया। इस बीच, बीजद के वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता लोअर पीएजी में आगे बढ़ गए थे।

मोहन सरकार का एक साल पूरा; विकास यात्रा पूरे प्रदेश में घूमेगी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी राज्य स्तरीय विकास वाहन का शुभारंभ करेंगे। विकास वाहन सरकार के विकास एजेंडे को लेकर पंचायत-पंचायत घूमेगा। यह विकास वाहन सरकारी योजनाओं को लोगों तक पहुंचाकर जागरूकता पैदा करेगा। मुख्यमंत्री मोहन माझी राज्य स्तरीय विकास वाहन कार्यक्रम का शुभारंभ करेंगे।ओडिशा के 314 ब्लॉक, 115 यूएलबी और 5 नगर निगमों में विशेष ब्रांडेड वैन तैनात की जाएंगी। वे वंचितों तक पहुंचेंगे और जानकारी का प्रसार करेंगे और लोगों को सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों से अवगत कराएंगे।

राज्य सरकार एक साल के भीतर राज्य सरकार की उपलब्धियों को लोगों तक ले जाएगी। सरकार की कुछ प्रमुख उपलब्धियां और पहल जैसे 'विकसित गांव, विकसित ओडिशा', 'सुभद्रा योजना', अंत्योदय गृह योजना', आदिवासी और एससी कल्याण, युवाओं के लिए कौशल विकास और विभिन्न खेलों को बढ़ावा देना, कृषि के लिए सब्सिडी, राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम नीति-2020, गोदावरीश मिश्र आदर्श विद्यालय योजना, शिशु वाटिका कार्यक्रम विकास वाहन द्वारा लोगों को बताए जाएंगे।

क्या यही रिश्तों का सार है...?

टूट रही है आशाएं,
मिट रहा है विश्वास
पीठ में खंजर घोंप रहे हैं अपने,
क्या यही रिश्तों का सार है ?

सात वचन के वह फेरे,
सात दिन भी नहीं चल पाए अपने
फिर ऐसा खेल रचाया मिट गए सब बंधन,
क्या यही रिश्तों का सार है ?

बदनाम इस तरह हुए वह,
कलंक लिए और कितना चल पाएंगे ?
पाप ज्यादा दिन नहीं छुपता, जो किया वह भरोगे,
पर क्या यही रिश्तों का सार है ?

गठबंधन ऐसा कैसा किया कि,
पलभर में फरेबी बन गए वो
मौत के लिए वह कहाँ ले गए अपने!
क्या यही रिश्तों का सार है ?

अब रिश्तों को तार-तार कर क्या मुँह दिखाओगे ?
दुनिया में ऐसा क्या मिला जो बेवफा बन गई
एक इंसान को मौत के घाट उतार कर खुश हो!
क्या यही रिश्तों का सार है ?

ऐसा प्यार किस काम का,
जो गुमराह हो फरेबी हो।
जिसकी नींव धोखे से रखी गई हो,
आज फिर शर्मसार है जहाँ दुनिया वालों,
क्या यही रिश्तों का सार है ???

हरिहर सिंह चौहान

✈ "अधूरी उड़ान" — प्रियंका सौरभ द्वारा

उड़े थे कुछ सपने, हथेलियों पे रौशनी लिए,
हर आँख में मंज़िल थी, हर दिल में दुआ लिए।
कोई लौट रहा था अपनों की बाहों में,
कोई उम्मीद ले गया था दफ्तर की राहों में।

आसमान ने बाँहें खोलीं थीं स्वागत को,
पर किसे पता था, काल खड़ा था आघात को।
एक पल में सब शांतियाँ चीख़ बन गईं,
हँसती ज़िंदगियाँ राख की राख़ बन गईं।

ना आख़िरी अल्फ़ाज़, ना कोई निशानी,
जो कल थे मुस्कान, आज बस कहानी।
बचपन, जवानी, बुज़ुर्गी — सब साथ थे,
एक ही उड़ान में कई जज़्बात थे।

फटे बैग, जलती तस्वीरें, अधूरी चिट्ठियाँ,
ज़मीन पर बिखरीं रह गईं सब इच्छाएँ मिट्ठियाँ।
वो माँ जो कह रही थी रुजाना, फोन करनाऱ,
अब बस उसके आँसुओं में है रतेरा लौट आनाऱ।

जहाँ लैंड करना था, वहाँ बस सन्नाटा है,
सफर अधूरा है, दर्द का पन्ना-पन्ना काटा है।
पर तुम सितारे बन गए उस काले गगन में,
हमेशा जगमगाओगे हर टूटे हुए मन में।

श्रद्धांजलि...
उन सभी 242 आत्माओं को,
जो मंज़िल से पहले ही अमर हो गईं।

बिरसा मुंडा पुण्यतिथि पर समाधि स्थल से हटाई गयी पूर्व मंत्री गीताश्री उरांव

सिरमटोली रैप विवाद से जूड़ा है मामला, पन्द्रह जून काला दिवस हर साल होगा मुख्यमंत्री का पुतला दहन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची। भगवान बिरसा मुंडा की पुण्यतिथि पर राजधानी रांची के कोकर स्थित समाधि स्थल पर उस वक्त हंगामे की स्थिति उत्पन्न हो गई, जब पूर्व मंत्री गीताश्री उरांव समेत आदिवासी समाज से जुड़े कई नेता और कार्यकर्ताओं को रांची जिला प्रशासन द्वारा जबरन हटाया गया.

श्रद्धांजलि सभा से ठीक पहले सभी को प्रशासन ने एक बस में बैठाकर समाधि स्थल से दूर भेज दिया. इस कार्रवाई के बाद गीताश्री उरांव और उनके समर्थकों ने सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की ।

बता दें कि गीताश्री उरांव लंबे समय से सिरम टोली रैप विवाद को लेकर मुखर रही हैं. उनका आरोप है कि उनके पिता कार्तिक उरांव के नाम पर बन रहा रैप अब विवादों में है और सरकार उस पर चुप्पी साधे हुए

है.

वो लगातार मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की नीतियों की आलोचना करती रही हैं. ऐसे में प्रशासन को आशंका थी कि पुण्यतिथि के मौके पर वो सरकार विरोधी प्रदर्शन कर सकती हैं, सुरक्षा के मद्देनजर उन्हें कार्यक्रम स्थल से हटा दिया गया है.

घटना के बाद गीताश्री उरांव ने सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि 'यह आदिवासी विरोधी मानसिकता का परिचायक है. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सत्ता में आने के बाद आदिवासियों को भूल चुके हैं. आज जब हम धरती आबा को श्रद्धांजलि देने पहुंचे तो हमें वहां से जबरन हटाया गया क्या यह लोकतंत्र है ?'

उन्होंने आगे कहा कि हमने मुख्यमंत्री को इस उम्मीद के साथ सत्ता में लाया था कि वे आदिवासी समाज के हक की लड़ाई लड़ेंगे लेकिन आज वही सरकार हमें चुप कराने पर तुली हुई है, यह तानाशाही है ।

गीताश्री उरांव ने घोषणा की कि 15 जून को वह 'काला दिवस' के रूप में मनाएंगी. उन्होंने कहा, कि 'मेरे पिता के नाम पर बनाए गए रैप के साथ जिस तरह की राजनीति हो रही है, वह अब और बर्दाश्त नहीं की जाएगी. जिस तरह सनातन धर्म में रावण दहन होता है, उसी तरह 15 जून को हम हर साल हेमंत सोरेन का पुतला दहन करेंगे.'

जिला प्रशासन की इस कार्रवाई से गीताश्री उरांव के समर्थकों में गहरा आक्रोश है. बस में बैठाए गए कार्यकर्ताओं ने लगातार हेमंत सरकार के खिलाफ आदिवासी विरोधी सरकार नहीं चलेगी जैसे नारे लगाए. मौके पर भारी संख्या पुलिस तैनात थी, जिससे कि कोई अप्रिय घटना न हो.

टेकऑफ से पहले अंत: 242 ज़िंदगियाँ और एक सवालों से भरा आसमान

ड्रीमलाइनर या डेथलाइनर?: जब उड़ान ही आख़िरी सफर बन गई
"हादसे की ऊँचाई से गिरते सवाल: अहमदाबाद की एक दोपहर"

प्रियंका सौरभ

अहमदाबाद की सुबह सामान्य थी। लोग अपनी-अपनी दिनचर्या में व्यस्त थे। किसी ने नहीं सोचा था कि यह दिन भारत की नागरिक उड्डयन प्रणाली पर एक गहरा धब्बा छोड़ जाएगा। 12 जून 2025 को एयर इंडिया की फ्लाइट AI-171, जो अहमदाबाद से लंदन के गैटविक एयरपोर्ट के लिए उड़ान भर रही थी, टेकऑफ के कुछ ही मिनटों बाद क्रैश हो गई। यह हादसा न केवल 242 ज़िंदगियों को लील गया, बल्कि एक पूरे राष्ट्र की आत्मा को भी झकझोर गया।

इस विमान में 230 यात्री और 12 क्रू मेंबर थे। सभी की अपनी-अपनी कहानियाँ थीं। कोई पहली बार विदेश जा रहा था, किसी को बेटी की शादी में शामिल होना था, कोई नौकरी के लिए लंदन रवाना हो रहा था, तो कोई सिर्फ़ अपने बेटे से मिलने। किसी ने शायद दरवाज़ा बंद करते समय पीछे मुड़कर देखा हो, किसी ने आख़िरी बार "फोन करना" कहा हो। लेकिन इस बार किसी को मौका नहीं मिला।

दुर्घटना स्थल मेघानी नगर का वो इलाका है जहाँ एक मेडिकल छात्रावास भी स्थित है। विमान का बड़ा हिस्सा उसी हॉस्टल पर गिरा, जिससे वहाँ रह रहे छह छात्र भी मौत के मुँह में समा गए। ये वो बच्चे थे जो भविष्य में किसी की जान बचा सकते थे। दुर्भाग्य देखिए, उनकी अपनी जानें ही नहीं बच सकीं। घटनास्थल की तस्वीरें जितनी भयानक थीं, उससे कहीं अधिक भयावह थी वहाँ बिखरी चप्पलें, जलते बैग, अधजली फाइलें और धुएँ में खोते चेहरे। किसी मोबाइल की स्क्रीन पर शायद अभी भी ममता का 'मिस्ड कॉल' दिख रहा होगा, किसी के फोन में व्हाट्सऐप पर अब भी रलैंड करते ही मेसेज करनाऱ लिखा होगा।

किसी हादसे में मर जाना एक बात है, लेकिन बिना अलविदा कहे दुनिया छोड़ जाना एक अकल्पनीय दुःख होता है। एयर इंडिया के इस ड्रीमलाइनर विमान को 'आधुनिकतम सुरक्षा तकनीक' से लैस बताया जाता था। ड्रीमलाइनर 787 को उड्डयन जगत में विश्वसनीय माना जाता है। फिर सवाल उठता है—कैसे हुआ ये हादसा? क्या विमान में पहले से कोई तकनीकी गड़बड़ी थी? क्या मेंटेनेंस में लापरवाही बरती गई? या फिर यह एक दुर्भाग्यपूर्ण संयोग था?

कैप्टन सुमीत सबरवाल, जो इस विमान को उड़ा रहे थे, वे 8200 घंटे के उड़ान अनुभव वाले वरिष्ठ पायलट थे। उनके साथ सह-पायलट क्लाइव कुन्दर भी थे, जिनके पास भी पर्याप्त उड़ान अनुभव था। दोनों ने आख़िरी क्षण तक विमान को कंट्रोल करने की कोशिश की। ब्लैक बॉक्स से मिली रिकॉर्डिंग में कैप्टन की अंतिम आवाज़ दर्ज हुई है, जिसमें उन्होंने 'मेडे' कॉल दिया और विमान की ऊँचाई तेजी से गिरने की सूचना दी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि विमान ने अचानक ही कंट्रोल खो दिया और समय बहुत कम था।

प्रशासन ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू करने में देर नहीं की। दमकल विभाग, NDRF, पुलिस और स्थानीय नागरिक मौके पर पहुँचे और मलबे से शव निकालने में जुट गए। लेकिन असली त्रासदी तो तब शुरू हुई जब अस्पतालों के बाहर परिजनों की चीखें सुनाई देने लगीं। जो लोग कुछ घंटे पहले तक हँसी-खुशी से अपनों को एयरपोर्ट छोड़कर आए थे, अब वे अस्पतालों में राख की थैलियाँ पहचान रहे थे।

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने हादसे पर गहरा शोक व्यक्त किया है। एयर इंडिया ने पीड़ित परिवारों के लिए 50 लाख रुपये मुआवज़े की घोषणा की है और केंद्र सरकार ने उच्च स्तरीय जाँच के आदेश दिए हैं। लेकिन इतिहास बताता है कि अधिकतर मामलों में ऐसी जाँच रिपोर्टें महीनों तक लंबित रहती हैं, और अंततः भूल दी जाती हैं। यह जरूरी है कि इस बार न केवल हादसे के कारणों की निष्पक्ष जाँच हो, बल्कि यह भी पता लगाया जाए कि क्या यह हादसा रोका जा सकता था।

यह केवल तकनीकी विफलता नहीं है, यह हमारी प्रणाली की असफलता भी है। DGCA (नागरिक उड्डयन महानिदेशालय) की क्या भूमिका थी? क्या विमान के उड़ान भरने से पहले समुचित परीक्षण हुआ था? क्या ग्राउंड स्टाफ ने किसी गड़बड़ी की अनदेखी की थी? ये सारे सवाल अब जनता के हैं, और जवाब भी जनता को ही चाहिए।

हादसों के बाद हम अक्सर संवेदनाएं प्रकट करते हैं, मोमबत्तियाँ जलाते हैं, सोशल मीडिया पर पोस्ट डालते हैं और फिर भूल जाते हैं। लेकिन इस बार कुछ बदलना होगा। यह केवल एक हादसा नहीं, बल्कि एक चेतावनी है। यह हमें बताता है कि आधुनिक तकनीक और चमकदार हवाई जहाज़ भी अगर सिस्टम की लापरवाही के साथ उड़ें, तो वे केवल उड़ान नहीं, अंत बन जाते हैं।

कई परिवार ऐसे हैं जिनका एकमात्र कमाने वाला सदस्य इस हादसे में चला गया। कुछ ऐसे हैं जिनके तीन-तीन सदस्य एकसाथ उड़ान पर थे और अब उनकी कोई स्मृति शेष नहीं। एक 6 साल की बच्ची की तस्वीर वायरल हो रही है जो अपने दादा-दादी के साथ पहली बार विदेश जा रही थी। अब उसकी गुलाबी गुड़िया राख में मिली है। एक नवविवाहिता, जो ससुराल के लिए रवाना हुई थी, अब ताबूत में लौटेगी। ये केवल आँकड़े नहीं, इंसानी कहानियाँ हैं—जिन्हें हमें कभी नहीं भूलना चाहिए।

इस हादसे के बाद हमें दो काम ज़रूर करने चाहिए—पहला, पीड़ित परिवारों को हर संभव सरकारी, कानूनी और मानसिक सहायता दी जाए। और दूसरा, यह सुनिश्चित किया जाए कि भारत की कोई भी उड़ान, अगली बार उड़ने से पहले सौ बार जाँची जाए।

एक कविता पंक्ति याद आती है—
>ऱजो उड़ने चले थे सितारे बन के,
वो राख में अब निशान बन के रह गए।ऱ

हमारे लिए यह समय केवल शोक का नहीं, उत्तरदायित्व का भी है। यदि हम सिर्फ दुःख मना कर चुप हो जाएँगे, तो ये हादसे फिर होंगे। हवाई यात्रा अब केवल सुख-सुविधा की बात नहीं रही, यह अब सुरक्षा और जीवन की सबसे बड़ी चुनौती बनती जा रही है।

हमें इस बात की भी चिंता करनी होगी कि क्या भारत में नागरिक उड्डयन का निजीकरण और कम लागत की प्रतिस्पर्धा यात्रियों की सुरक्षा से समझौता करवा रही है? क्या पायलटों की थकावट, टेक्निकल स्टाफ की कमी और मुनाफे की भूख ऐसी त्रासदियाँ जन्म दे रही हैं? अगर हाँ, तो हमें निर्णय लेना होगा—सुरक्षा पहले या सुविधा?

यह दुर्घटना उन सभी यात्रियों को श्रद्धांजलि है जो सिर्फ मंज़िल की आशा लेकर चले थे, और अब हमारी यादों का हिस्सा बन गए हैं। वे लौटकर नहीं आएँगे, लेकिन अगर हमने उनकी याद में सिस्टम को बेहतर बना दिया, तो शायद उनके जाने का कोई अर्थ रह जाएगा।

बारिश में फूलों का बगीचा, करें तैयार।

बारिश का मौसम फूलों के बगीचे के लिए बहुत फायदेमंद हो सकता है, लेकिन सही देखभाल जरूरी है।

फूलों के पौधों को ऐसी जगह लगाएं जहाँ पानी जमा न हो, ताकि जड़ों में सड़न न हो।

गमलों या ग्रो बैग्स में पौधे लगाते हैं तो ड्रेनेज होल्स जरूर रखें, जिससे अतिरिक्त पानी निकल सके।

पौधों को तेज बारिश और हवा से बचाने के लिए शेड नेट या कवर का इस्तेमाल करें।

बारिश में आमतौर पर पानी देने की जरूरत नहीं होती, जब तक मिट्टी ऊपर से सूखी न हो।

पौधों के बीच उचित दूरी रखें, जिससे हवा का प्रवाह बना रहे और फंगल रोग न फैलें।

खरपतवार (Weeds) हटाते रहें और पौधों की डेड हेडिंग (मुरझाए फूल तोड़ना) करें।

कीट और बीमारियों से बचाव के लिए नीम तेल या हल्का जैविक कीटनाशक छिड़कें।

पौधों को पर्याप्त धूप मिले, इसका ध्यान रखें,कम से कम 6 घंटे सीधी धूप जरूरी है।मानसून में गुलमोहर, चमेली, गुड़हल, दालचीनी जैसे फूलदार पौधे अच्छा प्रदर्शन करते हैं। सही देखभाल से आपका फूलों का बगीचा बारिश में भी खूबसूरती से खिलेगा और हरियाली से भर जाएगा।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह
सहज़ हरदा मध्य प्रदेश

16 कला की नगरी मे देवस्नान पूर्णिमा पर हजारों श्रद्धालुओं जुटे, भजन संध्या में थिरके वयोवृद्ध

जगन्नाथ हुए 15 दिन के लिए एकान्तवासी,26 जून को नेत्रोत्सव

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला। कभी उन्नत कला यानी उत्कल का एक पूर्व रियासत उन्ही के सोलह कला की इस नगरी में पवित्र देव स्नान पूर्णिमा के अवसर पर जगन्नाथ सेवा समिति तथा नगर एवं गांव गांव से आये हुए जगन्नाथ भक्तों के जरिए उनके ऐतिहासिक जगन्नाथ मंदिर में महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी का देवत्व स्नान , पूजन मुख्य पूजारी ब्रह्मानंद महापात्र एवं सानु आचार्य द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के बीच किया गया। इस दौरान विभिन्न जगहों से लाये गए पवित्र जल में नौ प्रकार के तत्व दूध, दही, कुमकुम, कस्तूरी, अगुरु, कपूर, आंवला, चंदन एवं गंगाजल मिश्रित करते हुए महाप्रभु श्री जगन्नाथ के सांकेतिक अष्टधातु से निर्मित शंख के माध्यम से शालिग्राम का स्नान कराया गया। जिसके पश्चात महाप्रभु श्री जगन्नाथ सहित बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा को नए परिधान एवं मुकुट धारण कराते हुए श्री मंदिर स्थित सिंहासन पर विराजमान कराया गया। जहां भक्तों ने महाप्रभु श्री जगन्नाथ के दर्शन करते हुए विधि विधान के साथ पूजा अर्चना की। इसके पश्चात मंदिर के पाकशाला में तैयार किए गए षाठिएपोऊटी मानक छप्पन भोग विधि निर्वाह करते हुए अर्पित की गयी।

इसके बाद दिनभर श्रद्धालुओं का मंदिर पर तांता लगा रहा । जहां बड़े संख्या में भक्तों ने आकर चतुर्धामूर्ति की दर्शन की । शाम को ओडिशा से आये कलाकारों ने शानदार भजन संध्या कार्यक्रम का समां बांधा ।जिसका विधिवत उद्घाटन राजा सरायकेला तथा स्थानीय, पूर्व मुख्यमंत्री विधायक चंपाई सोरेन ने की ।

इस कार्यक्रम में हजारों की तादाद में लोगों ने शिररकत की ।मजे की बात यह रही कि जीवन विभिन्न प्रहर पहुंचे पहुंचे आम जनता बुद्धिजीवियों ने भक्ति के स्वर पर थिरके जिनमें अधिवक्ता गोलक पति , चंद्र शेखर कर भी शामिल थे । वही 82 वर्ष के वयोवृद्ध सरायकेला के भजन शिरोमणि चंद्र शेखर कर ने जब भजन सुनाए तम माहोल मे आध्यात्मिकता देखने लायक बना ।

रात को जगन्नाथ मंदिर पुरी के व्यंजन की तरह बना प्रसाद का भोग चढा जिसमें हजारों की तादाद में लोगों ने इसका सेवन देर रात तक बैठकर किया ।

इसके बाद आधी रात बाद धार्मिक परंपरा अनुसार पुजारियों द्वारा महाप्रभु श्री जगन्नाथ को मंदिर स्थित अणसर गृह में एकान्त वास कमरे में ले गये ।जहां अगले 15 दिनों तक महाप्रभु श्री जगन्नाथ अपने भक्तों से दूर रहकर अणसर गृह में बीमार रहेगें। फिर आगामी 26 जून को नेत्रोत्सव के अवसर पर अपने भक्तों को नवयौवन रूप में दर्शन देंगे।

मौके पर आयोजक श्री जगन्नाथ सेवा समिति सरायकेला के अध्यक्ष राजा सिंहदेव, पार्थ सारथी दास, सुदीप पट्टनायक, उपाध्यक्ष सनंद कुमार आचार्य, लिपू मोहंती सहित अन्य सभी पदाधिकारी एवं सक्रिय सदस्य सहित दर्जनों की संख्या में जगन्नाथ भक्त मौजूद रहे।

कोयले की बिक्री , लेन-देन को लेकर सी बी आई का झारखंड में पुनः छापा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने झारखंड में फिर वृहस्पतिवार रेड मारी है. यह छापा रामगढ़ जिले के गिद्दी ए कोलियरी परियोजना कार्यालय के लोकल सेल में हुआ है . सीबीआई का छापा पड़ते ही समुचे परियोजना कार्यालय में हड़कंप मच गया. शुरुआती जांच में कोयले की बिक्री में अनियमितता और संदिग्ध लेनदेन के संकेत मिले हैं ऐसा बताया जाता है . सीबीआई की टीम ने परियोजना कार्यालय के साथ-साथ आरोपियों के आवासों पर छापे मारे .

सीबीआई अधिकारी प्रोजेक्ट के एक सुरक्षा अधिकारी, एक कर्मचारी और तथा दो अन्य व्यक्तियों से पूछताछ कर रहे हैं. टीम ने आरोपियों के आवासों पर भी रेड की है. आवासों से दो बड़े बैग जब्त किये गये हैं. सीबीआई के द्वारा जब्त इन बैगों में कई अहम दस्तावेज, फाइल और डिजिटल उपकरण हैं. सीबीआई ने जांच के लिए इन सारी चीजों को अपने कब्जे में ले लिया . जिसके आरक्षण न केवल कोयला वल्कि विभिन्न अयस्क व धातु माइन्स मे भी हड़कंप मचा हुआ है ।

रांची सिरमटोली फ्लाईओवर का नाम होगा कार्तिक उरांव पथ: हेमंत सोरेन

355.76 करोड़ लागत से बनी फ्लाईओवर का सी एम किया उद्घाटन,भारी विरोध में 4 जून को हुआ था झारखंड बंद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। रांची फ्लाईओवर रैंप सिरमटोली सरना स्थल के पास होने के कारण आदिवासियों का विवाद रहा है.जिसके चलते 4 जून को झारखंड बंद रांची में असरदार रहने के वावजूद आज उक्त नवनिर्मित सिरमटोली फ्लाईओवर को कार्तिक उरांव पथ(बिहार/ संप्रति झारखंड के तत्कालीन परिस्थितियों में आदिवासी अभियंता , लोहरदगा सीट से सांसद, अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद के संस्थापक , बाबा कार्तिक उरांव के नाम से कांग्रेस के इस पूर्व सांसद को भरी लोकसभा में नेहरू काल में देश जानता था) घोषणा करते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने उक्त फ्लाईओवर का उद्घाटन किया . इस अवसर पर मेकॉन चौक के समीप वन भवन परिसर में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पौधारोपण कर लोगों को पर्यावरण दिवस की बधाई दी और पर्यावरण संकट पर चिंता भी जताई.

सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि स्थिति ऐसी हो गई है कि जंगल में रहने वाले जानवर अब शहर की ओर जाने लगे हैं. पर्यावरण बचाने को लेकर पूरी दुनिया चिंतित है. पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तो पेड़-पौधे रहेंगे और हम भी बचे रहेंगे, नहीं तो कब बुरे दिन देखने पड़ेंगे कहना मुश्किल है. झारखंड वासियों के लिए यह सुखद बात है कि इसका नाम जेहन में आते ही जल, जंगल, पहाड़ और हरियाली से भरा राज्य जेहन में आता

मुख्यमंत्री ने अपील करते हुए कहा कि ज्यादा नहीं तो कम से कम एक पेड़ तो जरूर बचाएं. आज देश में प्लास्टिक को खत्म करने की मुहिम चल रही है. कई राज्य इसके प्रदूषण से जूझ रहे हैं. सरकार चाहे लाख कानून बना ले, लेकिन जब तक हम यह नहीं समझेंगे कि क्या करना है और क्या नहीं करना है, तब तक यह संभव नहीं है. उन्होंने कहा कि गांव तो फिर भी सुरक्षित है, लेकिन शहर में स्थिति बद से बदतर है. शहर में सबसे ज्यादा बुद्धिजीवियों की संख्या होने के बावजूद समस्या सबसे ज्यादा है.

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी की राजनीतिक पहचान की बलि देना और किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना हमारे लिए संभव नहीं है, क्योंकि हम एक राजनीतिक दल हैं. इस अवसर पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इस ओवरब्रिज का नामकरण कार्तिक उरांव के नाम पर करने की घोषणा करते हुए लोगों को बधाई दी. मुख्यमंत्री ने पारंपरिक तरीके से पूजा-अर्चना कर नवनिर्मित फ्लाईओवर का अवलोकन किया. पारंपरिक वेशभूषा में खड़े बड़ी संख्या में लोगों ने मुख्यमंत्री का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया. नवनिर्मित फ्लाईओवर को देखने निकले मुख्यमंत्री ने केंद्रीय सरना स्थल जाकर पूजा-अर्चना की और फ्लाईओवर को लेकर पथ निर्माण सचिव को आवश्यक निर्देश देते नजर आए. करीब 355.76 करोड़ की लागत से बना यह फ्लाईओवर एयरपोर्ट और अन्य जगहों पर जाने वाले लोगों के लिए काफी फायदेमंद होगा. इससे पहले 24 अक्टूबर 2024 को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने 2.24 किलोमीटर लंबे कांटा टोली फ्लाईओवर का उद्घाटन किया था. दोनों फ्लाईओवर के बन जाने से लोगों को जाम से राहत मिलेगी. इस मौके पर पथ निर्माण विभाग के प्रधान सचिव सुनील कुमार ने कहा कि यह फ्लाईओवर नवीनतम तकनीक से बना है जिसमें कई तरह की बाधाएं आईं जिन्हें दूर कर दिया गया. सरना स्थल के पास बने रैंप की ऊंचाई भी 124 फीट से घटाकर 84 फीट कर दी गई है.

हल्की वर्षा गर्मी से झारखंड बेहाल, आगे सूरज उगलेगा आग

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। झारखंड का तापमान में पारा चढ़ रहा है. राज्य का उच्चतम तापमान 37.1 डिग्री से बढ़कर चौबिस घंटे में 38.2 डिग्री हो गया है. मौसम विभाग ने कहा है कि तापमान 4 डिग्री तक बढ़ेगा. उधर मौसम विभाग ने जानकारी देते कहा है कि पिछले 24 घंटे के दौरान बोकारो में सबसे ज्यादा 17 मिलीमीटर वर्षा हुई. जगन्नाथपुर, बानो, लोहरदगा, खूंटी, जामताड़ा, हजारीबाग, गुमला, धनबाद, सरायकेला , देवघर में 0.5 मिलीमीटर से 17 मिलीमीटर तक वर्षा हुई.भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अभिषेक आनंद ने बताया कि पिछले 24 घंटे के दौरान रांची, जमशेदपुर, डालटनगंज, बोकारो, सरायकेला खरसावां, और चाईबासा के अधिकतम और न्यूनतम तापमान में वृद्धि दर्ज की गयी है. चाईबासा का उच्चतम तापमान 38.2 डिग्री सेंटीग्रेड रहा, जो राज्य मे सर्वाधिक है . मौसम विभाग ने कहा है कि तापमान अभी और बढ़ेगा. इसलिए लोगों को गर्मी झेलने के लिए तैयार हो जाना चाहिए. हालांकि, राज्य के 15 जिलों में कहीं-कहीं गरज के साथ वर्षा-वज्रपात भी हो सकती है. मौसम केंद्र ने कहा है कि रांची में आंशिक बादल छाये रहेंगे. गर्जन वाले बादल भी बरस सकते हैं.

रांची जमशेदपुर, डालटनगंज, बोकारो और चाईबासा में अधिकतम तापमान फिलहाल क्रमशः 33.8 डिग्री, 37.3 डिग्री, 37.4 डिग्री, 33.2 डिग्री और 38.2 डिग्री सेंटीग्रेड रिकॉर्ड किया गया है.

इन सभी जिलों का न्यूनतम तापमान क्रमशः 23.6 डिग्री, 24.8 डिग्री, 26.3 डिग्री, 25.6 डिग्री और 26.8 डिग्री सेंटीग्रेड रहा. रांची , धनबाद, बोकारों, रामगढ, गिरिडीह, देवघर जामताड़ा, खूंटी, दुमका, गोड्डा, पाकुड़ , साहिबगंज, पश्चिमी सिंहभूम, पूर्वी सिंहभूम, सरायकेला-खरसावां का है।

चोर मचाये शोर- झारखंड में चोरों ने दर्ज कराई जहां प्राथमिकी

रांची, जगन्नाथ पुर थाने का मामला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। अमुमन चोरी चुप-चुप की जाती पर झारखंड इस चोरी एक ऐसी चोरी की घटना है जो रांची में चर्चे का विषय बना है

चार दिन पहले चोरों ने ही हैरान करने देने वाली मामला को अंजाम दे डाला है यहां ।मामला वाटेरा रांची के जगन्नाथपुर थाना क्षेत्र में चोरी के इरादे से घर में घुसे चोरों ने चोरी की पिटाए तो उल्टा ग्रामीणों के खिलाफ पुलिस में एफआईआर दर्ज करा दी । चोरों का आरोप है कि चोरी के दौरान ग्रामीणों ने उन्हें पकड़कर बुरी तरह पीटा, जिससे एक चोर गंभीर रूप से घायल हो गया, जबकि तीन अन्य को भी चोटें आई हैं। यह घटना 5 जून 2025 की रात सत्यारी टोला में हुई, जिसने कि स्थानीय पुलिस और झारखंड में जन मानस के बीच अब चर्चा का विषय बनी हुई है ।देखना दिलचस्प होगा उंट किस करवट लेता है आगे ।

मामले के अनुसार, पश्चिम बंगाल के आसनसोल निवासी विजय कुमार और उसके पांच साथियों ने रात करीब एक बजे एक मकान में चोरी का प्रयास किया। विजय कुमार ने अपनी शिकायत में बताया कि उन्होंने और उनके साथियों जिनमे कमलेश चौहान, पंकज डोम, जान सिंह, माडू चौहान और करन चौहान ने घर की अलमारी से सोने की चेन और नकदी चुराई।

इसी दौरान घर में हुई चोरी के ठीक ऐन वक्त मकान मालिक की नींद खुल गई और उसने 'चोर-चोर' का शोर मचाया। चोरों ने मकान मालिक का मुंह दबाकर उसे काबू करने की कोशिश की और उसे पास के कुएं में लेजाकर डुबोने का भी प्रयास किया। लेकिन मकान मालिक के शोर से जागे ग्रामीणों ने चोरों को घेर लिया।

चोरों के सरगना में से एक विजय कुमार के अनुसार, ग्रामीणों ने उनकी जमकर पिटाई की, जिससे उसका बायां हाथ टूट गया, जबकि कमलेश चौहान, पंकज डोम और जान सिंह को भी गंभीर चोटें आईं। उनके दो साथी, माडू चौहान और करन चौहान, मौके से भागने में सफल रहे। फिर मामला दर्ज किया गया ।एफ आई आर में विजय कुमार ने कहा है ग्रामीण चोरों को पुलिस के हवाले कर सकते थे पर कानून को हाथ में लिया ।

मुझपर कभी भी हमला हो सकता है या झूठे मुकदमे दायर किये जा सकते हैं :नेता प्रतिपक्ष, झारखंड

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। झारखंड के नेता प्रतिपक्ष और राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने आशंका जताई कि सीएम के चहेते महाभ्रष्ट अधिकारियों ने सरकार से मुझे डराने की सुपारी ली है. गिरिडीह परिसदन में पत्रकारों से बातचीत करते हुए बाबूलाल मरांडी ने कहा कि विश्वस्त सूत्रों से रविवार की रात में सूचना मिली है की इसके लिए पहले की तरह एक बार फिर से सुपारी दी गयी है. उन्होंने कहा, 'हम पर या हमारे लोगों पर कभी भी हमला हो सकता है. मुझ पर हमला करने से लेकर मेरे खिलाफ झूठे और मनगढ़ंत मुकदमे दर्ज करने तक की साजिश रची जा रही है।

बाबूलाल मरांडी ने कहा, 'मैं आज यहां केवल झारखंड विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के रूप में नहीं, बल्कि उस हर झारखंडी की आवाज के रूप में खड़ा हूं, जिसे इस भ्रष्ट और भयभीत सरकार ने या तो ठगा है, डराया है या चुप कराने की कोशिश की है. ऐसे अधिकारियों को शायद मेरी सक्रिय भूमिका से परेशानी हो रही है. मैंने उनके भ्रष्टाचार को जनता के सामने लाने का काम किया है और अब वह बदले की भावना से प्रेरित होकर मेरा चरित्र हनन करने के प्रयास में हैं. इसके लिए वे झूठे मामलों का सहारा भी ले सकते हैं. ऐसा इसलिए किया जा रहा है, ताकि भ्रष्टाचार और लूट-खसोट के खिलाफ उठी आवाज को दबाया जा

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023